निर्गमन

1 इस्राएल[a] के बेटों के नाम, जो
अपने-अपने परिवार को लेकर याकूब
के साथ मिस्र देश से आए थे, ये हैं: 2 रूबेन,
शिमोन, लेवी, यहूदा, 3 इस्साकार, ज़बूलून,
बिन्यामीन 4 दान, नप्ताली, गाद और आशेर।
5 यूसुफ़ पहले ही से मिस्र में आ चुका था।
याकूब के खुद के वंश में जो पैदा हुए वे सब
सत्तर लोग थे। 6 यूसुफ़ और उसके सभी
भाई और उस पीढ़ी के सभी लोग मर चुके
थे। 7 लेकिन इस्राएल का वंश फूलने-फलने
लगा और वे लोग बहुत ताकतवर बनते
चले गए। वे इतना अधिक बढ़ गए कि
सारे देश को भर लिया। 8 मिस्र में एक नया
राजा राजासन पर बैठा, जो कि यूसुफ़ को
नहीं जानता था। 9 उसने अपनी प्रजा से
कहा, "देखो, इस्राएली हम से गिनती और
ताकत में बहुत ज़्यादा बढ़ गए हैं 10 इसलिए
आओ, हम उनके साथ समझदारी के साथ
व्यवहार करें, कहीं ऐसा न हो कि वे बहुत
बढ़ जाएँ और युद्ध के समय हमारे दुश्मनों
से मिल कर लड़ें और इस देश से निकल
जाएँ." 11 इसलिए उन्होंने उन पर बेगारी
कराने वालों को नियुक्त किया ताकि वे उन
पर भार डाल-डाल कर उन्हें सताएँ। उन्होंने
फ़िरौन[b] के लिए पितोम और रामसेस नामक
भण्डार वाले नगरों को बनाया 12 लेकिन
ज्यों-ज्यों वे उनको पीड़ा देते गए, त्यों-त्यों
वे बढ़ते और फैलते चले गए। इसलिए
वे इस्त्रालियों से डरने लगे। 13 फिर भी
मिस्रियों ने इस्राएलियों से सख्ती के साथ
सेवा करवाई। 14 उनकी ज़िन्दगी को गारे,
ईटों और खेती के तरह-तरह के काम की
कठोर सेवा से दुखी कर दिया। जिस किसी
काम में वे उन से सेवा करवाते थे उसमें वे
कठोरता का बर्ताव किया करते थे। 15 दो
इब्री धाईयों को, जिन का नाम शिप्रा और
पूआ था, राजा की तरफ़ से आज्ञा मिली,
16 "इब्री महिलाओं के बेटों को पैदा होते
ही खत्म कर डालना, लेकिन बेटियों को
ज़िन्दा रहने देना" 17 परमेश्वर का डर[c] होने
की वजह से वे धाईयाँ राजा का हुक्म
नहीं मानती थीं और लड़कों को भी ज़िन्दा
छोड़ दिया करती थीं। 18 राजा को यह
बात मालूम होने पर उसने उन्हें बुलाकर
पूछा, "तुम लड़कों को ज़िन्दा क्यों छोड़
देती?" 19 धाईयों ने जवाब में कहा, "इब्री
महिलाएँ, मिस्री महिलाओं से भिन्न हैं, वे
फुर्तीली हैं। इसके पहले की धाईयाँ वहाँ
पहुँचे, बच्चा पैदा हो जाता है।" 20 इसलिए
परमेश्वर ने धाईयों की भलाई की और इब्री
लोग बढ़ कर ताकतवर हो गए। 21 इसलिए
कि धाईयाँ परमेश्वर से डरती थीं, परमेश्वर ने
उनके घर बसाए। 22 तब फ़िरौन ने अपनी
सारी प्रजा के लोगों को आज्ञा दी, "इब्री
लोगों के सभी बेटों को नील नदी में डुबा
कर मार डालना, लेकिन बेटियों को ज़िन्दा
रहने देना।"

2 लेवी के परिवार के एक पुरुष ने लेवी
वंश की महिला से विवाह कर लिया।
2 वह गर्भवती हुई और समय आने पर उसके
एक सुन्दर बेटा पैदा हुआ। बालक के सुन्दर
होने के कारण उसने उसे छिपा लिया। 3 जब
वह ज़्यादा दिन छिपा न पाई, तो उसने

[a] 1.1 याकूब [b] 1.11 राजा [c] 1.17 इज्ज़त

सरकण्डों की एक टोकरी बनायी जिस पर
चिकनी मिट्टी और राल लगाई। अपने बेटे को
उसने उस में रख कर नील नदी के किनारे
कासों के बीच छोड़ दिया। 4 यह देखने के
लिए कि आगे क्या होता है, उसकी बहन
दूर खड़ी हो गयी। 5 नहाने के लिए फ़िरौन
राजा की बेटी नदी के किनारे आई और वहीं
उसकी सहेलियाँ टहल रही थी। कासों के
बीच टोकरी को देख कर राजा की बेटी ने
अपनी दासी[a] से उस टोकरी को लाने के
लिए कहा। 6 खोलते ही रोता बालक देख
उसे तरस आया और वह बोल उठी, "यह
तो किसी इब्री का बच्चा है।" 7 तब बालक
की बहन ने फ़िरौन की बेटी से कहा, "क्या
मैं जाकर किसी इब्री महिला धाई को बुला
लाऊँ?" 8 फ़िरौन की बेटी बोली, "जाओ,
ले आओ तब लड़की जाकर बालक की
माता को ले आई।" 9 फ़िरौन की बेटी उस
से बोली, "जाकर मेरे लिए इस बच्चे को
दूध पिलाओ और मैं तुम्हें मज़दूरी दूँगी।"
10 बालक के बड़े होने पर वह उसे फ़िरौन
की बेटी के पास ले गई और वह उस का
बेटा बन गया। उसने यह कह कर उसे मूसा
नाम दिया, "मैंने इसे पानी से निकाला था।"
11 मूसा के जवान हो जाने पर वह बाहर अपने
भाईयों से मिला। उनके दुखों पर उसने निगाह
की। एक दिन उसने देखा कि एक मिस्री
उसके इब्री भाई को मार रहा है। 12 उसने
जब इधर-उधर नज़र दौड़ायी, तो वहाँ कोई
नहीं दिखा। तभी उसने उसे मिस्री को मार
कर रेत में छिपा दिया। 13 एक दिन उसने दो
इब्री आदमियों को आपस में मारपीट करते
देखा उसने अपराधी से कहा,"तुम अपने
भाई को मारता है?" 14 वह बोला, "हमारे
ऊपर तुम को हाकिम और जज किस ने
ठहराया है? जिस तरह तुमने मिस्री को मार
डाला, क्या उसी तरह मुझे भी जान से मार
डालना चाहते हो?" तब मूसा यह सोच कर
घबराया, कि ज़रूर सब को मालूम पड़ गया
है। 15 राजा[b] को यह मालूम पड़ने पर वह
उसे मारने की योजना बनाने लगा। डर के
मारे मूसा वहाँ से भाग गया और मिद्यान
देश में जाकर रहने लगा। एक दिन वह एक
कुएँ के पास जाकर बैठ गया। 16 मिद्यान
के याजक की सात बेटियाँ थीं। वे वहाँ
आकर अपने पिताजी की भेड़ बकरियों को
पानी पिलाने के लिए घमेंलों में पानी भर
रही थीं। 17 तभी चरवाहे आकर उनको हटाने
लगे। इस कारणवश मूसा ने खड़े होकर
उनकी मदद की और भेड़-बकरियों को पानी
पिलाया। 18 अपने पिता रूएल के पास लौटने
पर उसने उन से पूछा, "आज तुम इतनी
जल्दी कैसे लौट आई हो?" 19 उन्होंने कहा,
"एक मिस्री आदमी ने हम को चरवाहों के
हाथ से छुड़ाया और हमारे लिए ढेर सारा
पानी भर कर भेड़-बकरियों को पिलाया।"
20 तब वह अपनी बेटियों से बोला, "वह
आदमी कहाँ है और तुम उसे क्यों नहीं
ले आई? उसे बुलाओ कि वह यहीं खाना
खाए।" 21 आने के बाद मूसा उस उन लोगों
के साथ रहने के लिए राज़ी हो गया। रूएल
ने मूसा के साथ अपनी बेटी सिप्पोरा का
विवाह कर दिया। 22 समय आने पर उनको
बेटा पैदा हुआ। तब मूसा ने यह कह कर
उस का नाम गेर्शोम रखा कि मैं पराए देश में
परदेशी हूँ। 23 बहुत दिनों के बीत जाने पर
मिस्र के राजा का देहान्त हो गया। इस्राएली
लोगों से सख्त सेवा लिए जाने के कारण
वे परेशान हो चुके थे। उन्होंने परमेश्वर के
सामने गिड़गिड़ाया भी। 24 परमेश्वर ने उनकी

[a] **2.5** नौकरानी [b] **2.15** फ़िरौन

कराहना सुन कर अपनी उस वाचा को
याद किया जो उन्होंने, अब्राहम, इसहाक
और याकूब के साथ बाँधी थी। 25 और
इस्राएलियों पर नज़र[a] की और परमेश्वर को
उनके लिए चिन्ता थी।

3 मूसा अपने ससुर यित्रो, मिद्यान के
याजक की भेड़-बकरियों को चराने
लगा। एक बार जंगल के पश्चिम में होरेब
नामक परमेश्वर के पहाड़ पर 2 परमेश्वर के
दूत ने एक कटीली झाड़ी के बीच आग की
लौ में उसे दर्शन दिया। उसने देखा कि झाड़ी
जल रही है, लेकिन भस्म नहीं हो रही है।
3 तब मूसा बोला, "मैं वहाँ जाकर देखना
चाहूँगा कि आखिर ऐसा क्यों है।" 4 जब
परमेश्वर ने देखा कि मूसा यह देखने के लिए
झाड़ी के पास चला आ रहा है, तो पुकारा,
"हे मूसा, हे मूसा।" मूसा ने उत्तर दिया, "क्या
आज्ञा?" 5 परमेश्वर ने कहा, "यहाँ पास मत
आओ, अपने पाँवों से जूतियाँ उतार दो,
क्योंकि जिस जगह पर तुम खड़े हो वह पवित्र
है।" 6 फिर परमेश्वर ने कहा, "मैं तुम्हारे पिता,
अब्राहम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर
हूँ।" तब मूसा परमेश्वर से डरा और अपना मुँह
ढाँप लिया। 7 तब परमेश्वर बोले, "मैंने मिस्र
में अपनी प्रजा के दुखों को देखा है। उनकी
उस चिल्लाहट को जो बे-रहम मेहनत कराने
वालों की वजह से होती है, उसे भी मैंने सुना
है। मेरा मन उनकी पीड़ा पर लगा है। 8 इस
कारणवश मैं उतर आया हूँ कि अपने लोगों
को मिस्रियों की गुलामी से आज़ाद कराऊँ।
उन्हें निकाल कर एक अच्छे और बड़े देश
में जिस में दूध और शहद बहता है अर्थात्
कनानी, हित्ती, एमोरी, परिज्जी, हिब्बी और
यबूसी लोगों की जगह पहुँचाऊँ। 9 इसलिए
अब सुनो, इस्राएलियों की चिल्लाहट मुझे
सुनाई पड़ी है। उनके ऊपर किए जाने वाले
मिस्रियों के अंधेर को भी मैं देख रहा हूँ।
10 इसलिए आओ, मैं तुम्हें फ़िरौन[b] के पास
भेजने वाला हूँ, ताकि तुम मेरे लोगों को मिस्र
से निकाल लाओ। 11 लेकिन मूसा ने परमेश्वर
से कहा, "मैं कौन हूँ जो फ़िरौन के पास
जाऊँ और इस्राएलियों को मिस्र से निकाल
लाऊँ? 12 परमेश्वर ने जवाब में कहा, "बेशक
मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। तुम को भेजने वाला
मैं हूँ, इसका निशान यह होगा, जब तुम
उन लोगों को मिस्र से निकाल लाओगे, तब
तुम इसी पहाड़ पर परमेश्वर की आराधना
करोगे।" 13 मूसा ने परमेश्वर से कहा, जब
मैं इस्राएलियों के पास जाकर उन से कहूँ,
"तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे
पास भेजा है, तब यदि वे मुझ से आपका
नाम पूछें, तो मैं क्या बताऊँ?" 14 परमेश्वर ने
उत्तर में कहा, "मैं जो हूँ सो हूँ यह भी कि
जिस का नाम 'मैं हूँ', उसी ने मुझे तुम्हारे
पास भेजा है। 15 फिर परमेश्वर ने मूसा से
यह कहा, "तुम इस्राएलियों से यह कहना,
'तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर अर्थात् अब्राहम
के परमेश्वर इसहाक के परमेश्वर और याकूब
के परमेश्वर, ने मुझ को तुम्हारे पास भेजा है।
देखो, सदा काल तक यही मेरा नाम रहेगा
और पीढ़ी-पीढ़ी तक लोग मुझे इसी नाम से
याद करेंगे। 16 इसलिए अब जाकर इस्राएली
पुरनियों[c] को इकट्ठा करो और उन से कहो,
तुम्हारे पूर्वज अब्राहम, इसहाक और याकूब
के परमेश्वर ने मुझे दर्शन में यह कहा है, कि
मैंने तुम पर और तुम से जैसा व्यवहार मिस्र
में किया जाता है उसे भी देखा है। 17 मैंने मन
बना लिया है कि तुम को मिस्र की पीड़ा
में से निकाल कर कनानी, हित्ती, एमोरी,

[a] 2.25 दृष्टि [b] 3.10 राजा [c] 3.16 बुज़ुर्गों

परिज्जी, हिव्वी और यबूसी लोगों के देश में
ले चलूँगा। यह देश ऐसा है जिस में बहुत दूध
और शहद है। 18 तब वे तुम्हारी मानेंगे और
तुम इस्राएली बुज़ुर्गों को साथ लेकर मिस्र के
राजा के पास जाकर उस से यह कहना, हम
इब्रियों के परमेश्वर से मिल चुके हैं, इसलिए
अब हम को जंगल में जाने दो, जहाँ पहुँचने
में तीन दिन का समय लगता है। वहाँ जाकर
हमें परमेश्वर की आराधना करनी है। 19 मुझे
मालूम है मिस्र का राजा तुम्हें निकलने नहीं
देगा। यहाँ तक कि दबाव डाले जाने पर भी
वह तुम्हें रोके रहेगा। 20 इसलिए मैं उन सभी
आश्चर्यकर्मों से जो मिस्र के बीच करूँगा,
उस देश को मारूँगा और उसके बाद ही
वह तुम को जाने देगा। 21 तब मैं मिस्रियों
से अपनी प्रजा पर अनुग्रह करवाऊँगा। वहाँ
से तुम कंगाली हालत में नहीं निकलोगे।
22 तुम्हारी एक-एक महिला अपनी पड़ोसिन
और उनके घर में रहने वाली से सोने-चाँदी
के गहने और कपड़े माँग लेगी। तुम उन्हें
अपने बेटे-बेटियों को पहनाना। इस तरह तुम
मिस्रियों की दौलत को हासिल करोगे।

4 मूसा ने उत्तर में कहा," वे लोग न मुझ
पर विश्वास करेंगे और न ही मेरी सुनेंगे,
लेकिन कहेंगे, 'परमेश्वर ने तुम्हें दर्शन नहीं
दिया है।" 2 परमेश्वर ने कहा, "तुम्हारे हाथ
में क्या है?" वह बोला, "लाठी।" 3 परमेश्वर
ने कहा, "उसे ज़मीन पर फेंक दो।" जैसे ही
उसने उसे ज़मीन पर डाला, वह साँप बन
गई और मूसा उसके सामने से भाग खड़ा
हुआ। 4 तब परमेश्वर ने कहा, "अपने हाथ से
उसकी पूँछ पकड़ लो, तब वे विश्वास कर
सकेंगे कि तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर अर्थात्
अब्राहम, इसहाक और याकूब के परमेश्वर
ने तुम्हें दर्शन दिया है।" 5 जैसे ही उसने हाथ
बढ़ाकर उसको पकड़ा, वह उसके हाथ में
लाठी बन गई 6 फिर परमेश्वर ने उस से यह भी
कहा, "अपना हाथ छाती पर रख कर ढाँप
लो।" इसलिए उसने वैसा किया, लेकिन जब
बाहर निकाला, तो हाथ को बर्फ़ की तरह
सफ़ेद पाया। 7 तब परमेश्वर ने कहा, "अपना
हाथ छाती पर रख कर फिर से ढाँको।"
मूसा ने अपना हाथ छाती पर रख कर ढाँप
लिया। लेकिन जब उसने उसको छाती पर से
निकाला तो देखा कि वह पूरी देह की तरह ही
था। 8 तब परमेश्वर ने कहा, "यदि वे तुम्हारी
बात का भरोसा न करें और पहले निशान को
न मानें, तो दूसरे निशान का विश्वास कर लेगें।
9 यदि वे इन दोनों निशानों का विश्वास न करें
और तुम्हारी बात न मानें, तब तुम नील नदी में
से कुछ पानी लेकर सूखी ज़मीन पर डालना।
जो पानी तुम नदी में से निकालोगे, वह सूखी
ज़मीन पर ख़ून बन जाएगा।" 10 मूसा परमेश्वर
से बोला, "हे मेरे परमेश्वर मैं अच्छी तरह न
पहले बोल सकता था, न जब से आप मुझ से
बातचीत करने लगे हैं। मुझे साफ़-साफ़ बात
करने में मुश्किल होती है। 11 परमेश्वर ने उस
से कहा, "इन्सान का मुँह किस ने बनाया है?
12 अब जाओ, मैं तुम्हारे मुँह के साथ होकर,
जो कुछ तुम्हें कहना होगा, तुम्हें सिखलाता
जाऊँगा।" 13 मूसा बोल उठा, "हे मेरे परमेश्वर
कृपया किसी और को भेज दीजियेगा। 14 तब
परमेश्वर का गुस्सा मूसा पर भड़क उठा और
उसने कहा, "क्या तुम्हारा भाई हारून लेवी
नहीं है? मुझे मालूम है कि वह बोलने में
अच्छा[a] है। तुम से मिलने वह आ ही रहा है।
तुम्हें देख कर उसे खुशी होगी। 15 इसलिए ये
बातें तुम उसे सिखाना। मैं उसके और तुम्हारे
मुँह के साथ होकर जो तुम्हें करना होगा,

[a] **4.14** निपुण

सिखाता जाऊँगा। 16 वह तुम्हारी तरफ़ से
लोगों से बातें किया करेगा। वह तुम्हारे लिए
मुँह और तुम उसके लिए परमेश्वर ठहरोगे।
17 इस लाठी को तुम अपने हाथ में रखना
और इसी से चिन्हों को दिखाना।" 18 इसके
बाद अपने ससुर के पास लौटकर मूसा ने
उस से कहा, "अब मुझे जाने दीजिए ताकि
मिस्र में रहने वाले अपने भाईयों के पास
जाकर मालूम करूँ कि वे अब तक ज़िन्दा हैं
या नहीं।" यित्रो बोला, "कुशल से जाओ।"
19 परमेश्वर ने मिद्यान देश में मूसा से कहा,
"मिस्र को वापस चले जाओ, क्योंकि जो
लोग तुम्हारी जान के प्यासे थे वे सभी
मर चुके हैं। 20 तब मूसा अपनी पत्नी और
बेटों को गदहे पर बैठा कर मिस्र देश की
तरफ़ परमेश्वर की लाठी लिए लौटा। 21 तब
परमेश्वर ने मूसा से कहा, "मिस्र पहुँचने पर
ध्यान देना कि जो अजीब काम करने की
योग्यता[a] मैंने तुम्हें दी है, उन सभी को फ़िरौन
को दिखलाना, लेकिन मैं उसके मन को
सख्त कर दूँगा और वह मेरी प्रजा को जाने
नहीं देगा। 22 तुम फ़िरौन से कहना, 'परमेश्वर
यों कहते हैं, कि इस्राएल मेरा बेटा, यहाँ तक
कि मेरा जेठा है। 23 मैं तुम से कह चुका
हूँ कि मेरे बेटे को जाने दो ताकि वह मेरी
सेवा करे। तुमने अब तक उसे जाने नहीं
दिया है। इस वजह मैं अब तुम्हारे बेटे वरन्
तुम्हारे जेठे को मार डालूँगा।" 24 एक दिन
सफ़र में सराय में परमेश्वर ने मूसा को मार
डालना चाहा। 25 तब सिप्पोरा ने एक तेज
चकमक का पत्थर लेकर अपने बेटे की
खलड़ी को काट डाला और यह कह कर
मूसा के पाँवों पर फ़ेक दिया" निश्चिय तुम
मेरे लिए खून बहाने वाले पति हो।" 26 तब
परमेश्वर ने उसको छोड़ दिया। उस समय
खतने के कारण वह बोली, "तुम खून बहाने
वाले पति हो।" 27 तब परमेश्वर ने हारून
से कहा कि वह जंगल में जाकर मूसा से
मिले। उसने ऐसा किया। परमेश्वर के पहाड़
पर उस से मिलने पर उसने उसे गले लगाया।
28 तब मूसा ने हारून को यह बतलाया कि
परमेश्वर ने क्या-क्या कह कर उसे भेजा है
और कौन से चिन्ह दिखलाने की आज्ञा उसे
दी है। 29 तब मूसा और हारून ने इस्राएलियों
के पास जाकर बुज़ुर्गों[b] को इकट्ठा किया
30 परमेश्वर ने जो कुछ मूसा को बताया था,
वह सभी हारून ने उन लोगों को कह सुनाया।
साथ ही साथ उनके सामने चिन्ह भी दिखाए।
31 लोगों ने उन पर विश्वास किया। यह सुन
कर कि परमेश्वर ने इस्राएलियों को याद किया
और उनके दुखों पर ध्यान दिया, उन्होंने सिर
झुकाकर दण्डवत् किया।

5 इसके बाद मूसा और हारून ने जाकर
फ़िरौन से कहा, "इस्राएल के परमेश्वर
का ऐसा कहना है, मेरी प्रजा के लोगों को
जाने दो कि वे जंगल में मेरे लिए त्यौहार
मनाएँ।" 2 फ़िरौन बोला, "परमेश्वर है कौन
कि मैं उनकी बात मानूँ और इस्राएलियों को
जाने दूँ? मैं परमेश्वर को जानता नहीं और
इस्राएलियों को जाने नहीं दूँगा।" 3 उन्होंने
कहा, "इब्रियों के परमेश्वर ने हम से मुलाकात
की है, इसलिए तीन दिन के सफ़र का
जो रास्ता है, हम तय करेंगे, ताकि अपने
परमेश्वर के लिए बलिदान चढ़ाएँ। कहीं ऐसा
न हो कि वह हमारे बीच मरी फैला दें या
तलवार चलाएँ। 4 मिस्र का राजा उन से
बोला,"हे मूसा और हारून तुम लोगों से
उनका काम क्यों छुड़वाना मांगते हो? तुम
जाकर अपनी-अपनी ज़िम्मेदारी पूरी करो।

[a] **4.21** इजाज़त [b] **4.29** पुरनियों

5 फिर फ़िरौन ने फिर कहा, “देखो, इस देश
में उनकी संख्या बहुत बढ़ चुकी है और तुम
उन्हें मेहनत से मुक्त करना चाहते हो।” 6 उसी
दिन फ़िरौन ने उन लोगों को जो मजदूरों से
काम लेते थे और उनके प्रमुखों को यह आज्ञा
दी 7 अब तक तुम ईंटें बनाने के लिए लोगों
को पुआल दिया करते थे, आगे मत देना।
उन्हें अपने आप जाकर पुआल इकट्ठा करने
दो। 8 फिर जितनी ईंटें उन्हें पहले बनानी
पड़ती थी, उतनी ही अभी भी बनानी पड़ेंगी।
ईंटों की गिनती में कमी न होने पाए। आलसी
होने के कारणवश वे चिल्लाते रहते है, “हमें
जाकर परमेश्वर को बलिदान करने दो।” 9 इन
लोगों से और ज़्यादा मेहनत करवाई जाए कि
वे उसी में लगे रहें और झूठी बातों पर मन न
लगाएँ 10 तब लोगों से मेहनत करवाने वालों
और उनके प्रमुखों ने बाहर जाकर उन से
कहा, “फ़िरौन का कहना यह है कि अब से
तुम्हें पुआल नहीं मिलेगा। 11 जहाँ कही तुम्हें
पुआल मिलता है, बटोरो, लेकिन तुम्हारा
काम घटाया नहीं जाएगा। 12 इसलिए पुआल
ढूँढने के लिए वे लोग सारे मिस्र में बिखर
गए, लेकिन उनको खूँटी ही मिली। 13 काम
कराने वालों ने उन्हें जल्दी-जल्दी करने को
कहा। यह भी कि जैसे पहले पुआल मिलने
पर करते थे, अब बिना पुआल पाए काम
में लगे रहो 14 इस्राएलियों में से जिन प्रमुखों
को फ़िरौन के मेहनत कराने वालों ने उनका
अधिकारी ठहराया था, उनकी पिटाई हुई
और उन से पूछा गया,“क्या कारण है कि
तुमने अपनी ठहराई हुई ईंटों की गिनती के
अनुसार पहले की तरह कल और आज पूरी
नहीं कराई?” 15 तब इस्राएलियों के प्रमुखों
ने जाकर फ़िरौन से पूछा कि वह अपने दासों
से ऐसा बर्ताव क्यों कर रहे हैं? 16 आपके
दासों को पुआल तो दिया नहीं जाता है और
वे हम से कहते रहते हैं, ईंटें बनाओ, ईंटें
बनाओ। आपके दासों की पिटायी भी हुई
है, लेकिन गलती आपके लोगों की है।”
17 फ़िरौन बोला, “तुम आलसी हो, इसलिए
परमेश्वर के लिए बलिदान चढ़ाने की इजाज़त
माँग रहे हो 18 अब जाओ और अपना काम
करो, पुआल तो तुम्हें दिया नहीं जाएगा,
लेकिन ईंटों की गिनती तुम्हें पूरी करनी है।”
19 यह बात कि पुआल नहीं दिया जाएगा
और काम उतना ही करना है, सुन कर
प्रमुख लोगों ने जान लिया कि अब उनके
परेशानी के दिन आ चुके हैं। 20 फ़िरौन के
सामने से बाहर निकल आने पर मूसा और
हारून ने उन से भेंट की 21 मूसा और हारून
से वे बोले, “परमेश्वर तुम पर दृष्टि करके
इन्साफ़ करे, क्योंकि तुमने हम को फ़िरौन
और उसके कर्मचारियों की निगाह में घृणित
ठहराकर हमें मार डालने के लिए उनके हाथों
में तलवार दे दी है।” 22 लौट कर मूसा ने
परमेश्वर से कहा, “हे परमेश्वर आपने इन
लोगों के साथ ऐसा गलत क्यों किया? और
आपने मुझे यहाँ क्यों भेजा? 23 जब से मैं
आपके नाम से फ़िरौन के पास बात करने
के लिए गया, तब से उसने इस प्रजा के साथ
बुरा बर्ताव किया है। आपने अपनी प्रजा को
कोई आज़ादी नहीं दी।”

6 तब परमेश्वर ने मूसा से कहा, “अब तुम
देखोगे कि मैं फ़िरौन से क्या करूँगा,
जिस से वह उनको ज़बरदस्ती निकालेगा।
वह ज़रूर उन्हें ज़बरदस्ती निकाल देगा।
2 परमेश्वर ने मूसा से कहा, “मैं शक्तिशाली
परमेश्वर हूँ।” 3,4 मैंने उनके साथ अपनी वाचा
पक्की की है अर्थात् कनान देश जिस में वे
परदेशी होकर रहते थे, उसे उन्हें दे दूँ।
5 मिस्रियों के गुलाम इस्राएलियों का कराहना

मैं सुन चुका हूँ और मैंने अपनी वाचा को याद
किया है। 6 इसलिए तुम इस्राएलियों से कहो,
“मैं परमेश्वर हूँ और तुम को मिस्रियों की
गुलामी से मैं छुड़ाऊँगा। अपने हाथ बढ़ाकर
उन्हें भारी सज़ा देकर मैं तुम्हें छुड़ा लूँगा।
7 मैं तुम को अपनी प्रजा बनाने के लिए
अपना लूँगा। मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहरूँगा।
तब तुम जान जाओगे कि मैं तुम्हारा परमेश्वर
हूँ जो तुम्हें मिस्रियों के बोझ के नीचे से
निकाल लाया है। 8 जिस देश को देने का
वायदा मैंने अब्राहम, इसहाक और याकूब
से किया था, उसी में तुम्हें पहुँचा कर उसे
तुम्हारा हिस्सा बना दूँगा। मैं परमेश्वर हूँ।”
9 ये बातें मूसा ने इस्राएलियों को बतायीं,
लेकिन उन्होंने मन की बेचैनी और गुलामी
के कारण उसकी न सुनी। 10,11 तब परमेश्वर
ने मूसा से कहा, “तुम जाकर मिस्र के राजा
फ़िरौन से कहो कि इस्राएलियों को अपने देश
में से निकल जाने दो।” 12 लेकिन मूसा ने
परमेश्वर से कहा, “देखो, इस्राएलियों ने मेरी
नहीं सुनी, फिर राजा मुँह से हकलाने वाले
की क्या सुनेगा? 13 तब परमेश्वर ने मूसा और
हारून को इस्राएलियों और मिस्र के राजा
फ़िरौन के लिए इस आशय से आज्ञा दी कि
वे इस्राएलियों को मिस्र देश से निकाल ले
जाएँ 14 उनके बुज़ुर्गों के परिवारों के मुख्य
पुरुष ये हैं: इस्राएल के जेठे, रूबेन के बेटे,
हनोक ,पल्लू, हेस्त्रोन और कर्म्मी; इन्हीं में से
रूबेन के कुल हुए। 15 शिमोन के बेटे यमूएल,
यामीन, ओहद, याकिन और साहेर और एक
कनानी महिला का बेटा शाऊल, इन्हीं से
शिमौन के कुल की शुरूवात हुई। 16 लेवी
के बेटे जिन से उनकी वंशावली शुरू हुई,
उनके नाम ये हैं अर्थात् गेर्शोन, कहात और
मरारी। लेवी की पूरी उम्र एक सौ तैंतीस
साल की हुई। 17 गेर्शोन के बेटे जिन से उनके
परिवार का नाम चला, लिबानी और शिमी।
कहात के बेटे अम्राम, मिसहार, हेब्रोन और
उजीएल, कहात की पूरी उम्र एक सौ सैंतीस
साल की हुई। 18 कहात के बेटे : अम्राम,
मिसहार, हेब्रोन और उज्जीएल और कहात
की पूरी उम्र एक सौ तीस वर्ष की हुई।
19 मरारी के बेटे : महली और मूशी। लेवियों
के परिवार जिन से उनका वंश शुरू हुआ
ये ही हैं। 20 अम्राम ने अपनी फूफी योकेबेद
से विवाह किया और उसी से मूसा और
हारून पैदा हुए थे। अम्राम एक सौ सैंतीस
साल तक जिया था। 21 मिसहार के बेटे :
कोरह, नेपेग और जिक्री 22 उजीएल के बेटे :
मीशाएल, एलीसापान और सिन्री। 23 हारून
ने अम्मीनादाब की बेटी और नहशोन की
बहन एलीशेबा से विवाह किया। उन से
नादाब, अबीहू, एलाजार और ईतामार उत्पन्न
हुए। 24 कोरह के बेटे : अस्सीर, एल्काना,
अबीआसाप थे, इन्हीं से कोरहियों के कुलों
की शुरूवात हुई। 25 हारून के बेटे एलाजार
ने पूतीएल की एक बेटी से विवाह किया,
जिस से पीनहास का जन्म हुआ। इन्हीं से
उनका कुल चलता रहा। 26 लेवियों के पितरों
के घरानों के मुख्य पुरुष ये ही हैं। हारून
और मूसा को परमेश्वर ने यह हुक्म दिया
कि इस्राएलियों को झुण्ड-झुण्ड में जत्थों के
अनुसार मिस्र देश से निकाल ले आओ।”
27 ये वही मूसा और हारून हैं, जिन्होंने मिस्र
के राजा फ़िरौन से कहा, कि हम इस्राएलियों
को मिस्र से निकाल ले जाएँगे। 28 परमेश्वर
ने मिस्र देश में मूसा से कहा, 29 “मैं परमेश्वर
हूँ, इसलिए मैं जो कुछ कहूँ, वही तुम मिस्र

के राजा से कहना 30 लेकिन मूसा परमेश्वर से
बोला, “मैं बोलने में साफ़ नहीं हूँ, फ़िरौन मेरी
क्यों सुनने लगा?

7 तब परमेश्वर ने मूसा से कहा, “सुनो,
मैं फ़िरौन राजा के लिए तुम्हें परमेश्वर
सा ठहरा रहा हूँ और तुम्हारा भाई-हारून
तुम्हारा नबी ठहरेगा। 2 जो-जो आज्ञा मैं तुम्हें
दूँ, वह तुम कहना और हारून उसे फ़िरौन
को बताएगा, ताकि वह इस्राएलियों को
अपने देश से निकल जाने दे। 3 लेकिन मैं
फ़िरौन के मन को सख्त कर दूँगा और
अपने बहुत से निशान और अजीब काम
मिस्र देश में दिखाऊँगा। 4 फिर भी फ़िरौन
तुम्हारी सुनेगा नहीं। मैं मिस्र देश पर अपना
हाथ बढ़ाकर मिस्रियों को भारी सज़ा देकर
अपनी फ़ौज अर्थात् अपनी इस्राएली प्रजा
को मिस्र देश से निकाल लूँगा 5 जब मैं मिस्र
पर हाथ बढ़ाकर इस्राएलियों को उनकी
गुलामी से छुड़ाऊँगा, तभी मिस्री जान सकेंगे
कि मैं परमेश्वर हूँ।” 6 तब मूसा और हारून
ने परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार किया।
7 जब मूसा और हारून की परमेश्वर से बातें
होने लगीं तब मूसा अस्सी और हारून
तिरासी साल का था। 8 मूसा और हारून
से परमेश्वर ने कहा, 9 “जब फ़िरौन तुम से
कहे, “अपने सबूत के लिए कोई अजीब
काम दिखाओ” तब तुम हारून से कहना,
वह अपनी लाठी फ़िरौन के सामने फेंक दो
ताकि वह साँप बन जाए।” 10 तब मूसा और
हारून ने फ़िरौन के पास जाकर परमेश्वर के
हुक्म के अनुसार किया। जब हारून ने अपनी
लाठी फ़िरौन और उसके कर्मचारियों के
देखते-देखते ज़मीन पर डाल दी, वह साँप बन
गई। 11 तब फ़िरौन ने पण्डितों और टोनहा
करने वालों को बुलवाया। मिस्र के जादूगरों
ने आकर अपने-अपने तंत्र-मंत्र से वैसा ही
किया। 12 उन्होंने भी अपनी-अपनी लाठी को
डाल दिया और वे भी साँप बन गई। लेकिन
हारून की लाठी उनकी लाठियों को निगल
गई। 13 लेकिन राजा का मन और कठोर हो
गया और उसने मूसा तथा हारून की बातों
को नहीं माना 14 तब परमेश्वर ने मूसा से कहा,
“राजा का मन सख्त हो जाने से वह मेरे
लोगों को नहीं जाने दे रहा है।” 15 इसलिए
सुबह फ़िरौन के पास जाओ, वह तो पानी
की तरफ़ आएगा। जो लाठी साँप बन गई थी,
उसी को नदी के किनारे राजा से भेंट करते
समय अपने साथ रखना। 16 उस से इस तरह
कहना, “इब्रियों के परमेश्वर ने मुझ से यह
कहने के लिए तुम्हारे पास भेजा है कि उनकी
प्रजा के लोगों को जाने दिया जाए, ताकि वे
जंगल में उनकी उपासना करें, लेकिन आप
तो सुनने के लिए राज़ी नहीं 17 परमेश्वर यों
कहते हैं, इस से फ़िरौन जान लेगा कि मैं ही
परमेश्वर हूँ। तब अपनी लाठी को नील नदी
के पानी पर मारूँगा और सारा पानी खून
बन जाएगा। 18 नील नदी की मछलियाँ मर
जाएँगी और उसमें से बदबू आने लगेगी। यहाँ
तक कि मिस्री लोग उस पानी को पीना भी
नहीं चाहेंगे। 19 फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा,
“हारून से कहो कि अपनी लाठी लेकर मिस्र
देश में जितना भी पानी है अर्थात् नदियाँ,
नहरें, झीलें, तालाब सभी पर अपना हाथ
बढ़ाओ, ताकि सारा पानी खून बन जाए।
मिस्र में लकड़ी और पत्थर सभी में भरा
हुआ पानी खून बन जाएगा। 20 तब मूसा
और हारून ने परमेश्वर के कहने के अनुसार
किया। फ़िरौन और उसके कर्मचारियों के
देखते-देखते लाठी को नील नदी के पानी पर
मारा गया। सारा पानी खून बन गया। 21 नील
नदी की मछलियों के मरने से उसमें से बदबू

आने लगी। मिस्री लोग नदी का पानी पी नहीं
पा रहे थे, क्योंकि सारे मिस्र का पानी खून
बन चुका था। 22 तब मिस्र के जादूगरों ने भी
अपने तंत्र-मंत्र से वैसा ही किया। फ़िरौन का
मन कठोर का कठोर रहा। परमेश्वर के कहने
के अनुसार राजा फ़िरौन ने मूसा और हारून
की बात नहीं सुनी। 23 फ़िरौन ने ध्यान दिया
भी नहीं दिया और अपना मुँह फेर कर चल
दिया। 24 इसलिए मिस्री लोग नदी का पानी
पी नहीं पा रहे थे, वे नदी के आस-पास खोदने
लगे कि किसी तरह पीने का पानी मिल जाए।
25 नील नदी को मारे हुए सात दिन हो गए।

8 तब परमेश्वर ने मूसा से कहा, "फ़िरौन
के पास जाओ और कहो, परमेश्वर तुम
से चाहते हैं कि तुम उनकी प्रजा को जाने
दो ताकि वे उनकी आराधना करें। 2 लेकिन
अगर तुम ऐसा नहीं करोगे, तो वह मेंढक
भेज कर देश भर को नुकसान पहुँचाएँगे।
3 नील नदी मेंढकों से भर जाएगी। मेंढक
तुम्हारे घर, बिस्तर, कर्मचारियों के घरों और
तुम्हारी प्रजा के तन्दूरों और कठौतियों में
भी चढ़ जाएँगे। 4 तुम पर, तुम्हारी प्रजा और
कर्मचारियों सभी पर मेंढक चढ़ जाएँगे।
5 फिर परमेश्वर ने मूसा को हुक्म दिया,
"हारून से कह दो कि नदियाँ, नहरों और
झीलों के ऊपर अपनी लाठी के साथ अपना
हाथ बढ़ाकर मेंढकों को मिस्र देश में ले
आओ। 6 तब हारून ने मिस्र के तालाबों के
ऊपर अपना हाथ बढ़ाया और मेंढकों ने मिस्र
देश पर चढ़ाई कर दी। 7 अपने तंत्र-मंत्र की
विद्या से जादूगर भी ऐसा करने में सफल हो
गए। 8 तब फ़िरौन ने मूसा और हारून को
बुलवाकर कहा, "परमेश्वर से प्रार्थना करो
कि वह मुझ से और मेरी प्रजा से मेंढकों को
हटा ले, तब मैं इस्राएलियों को जाने दूँगा,
ताकि वे परमेश्वर की उपासना करें। 9 तब
मूसा फ़िरौन से बोला, "मैं कब परमेश्वर से
यह प्रार्थना करूँ कि मेंढक नील नदी को
छोड़ और कहीं न हों?" 10 राजा फ़िरौन ने
कहा, "कल" वह बोला, "जान लो कि हमारे
प्रभु परमेश्वर की तरह कोई दूसरा नहीं है।
11 और मेंढक तुम्हारे पास से, तुम्हारे घरों
में से और तुम्हारे कर्मचारियों और प्रजा के
पास से दूर होकर सिर्फ़ नदी में ही होंगे।
12 इसके बाद मूसा और हारून फ़िरौन के
पास से चल दिए और मूसा ने उन मेंढकों
के बारे में गुहार लगाई जो उसने फ़िरौन
पर भेजे थे। 13 परमेश्वर ने मूसा के कहने
के अनुसार किया और मेंढक घरों, आंगनों
और खेतों में भर गए। 14 लोगों ने मरे मेंढकों
को इकट्ठा किया, जिस की बदबू सब जगह
फैल गई। 15 मेंढकों की विपत्ति से आराम
मिलने पर फिर फ़िरौन अपनी ज़िद्द पर अड़
गया 16 तब परमेश्वर मूसा से बोले, "हारून
को आज्ञा दो और तुम अपनी लाठी बढ़ाकर
ज़मीन की मिट्टी पर मारो, जिस से वह मिस्र
देश भर में कुटकियाँ बन जाएँ।" 17 उन्होंने
वैसा ही किया, अर्थात् हारून ने लाठी को
हाथ में लेकर ज़मीन की मिट्टी पर मारा।
फलस्वरूप इन्सान और जानवर दोनों ही पर
कुटकियाँ हो गईं। यहाँ तक कि सारे मिस्र
देश में ज़मीन की मिट्टी कुटकियाँ बन गई।
18 अपने तंत्र-मंत्र की ताकत से जब जादूगरों
ने वैसा करना चाहा, लेकिन वे कामयाब न
हुए। इस तरह मनुष्यों और जानवरों दोनों
पर कुटकियाँ बनी रहीं। 19 तब जादूगरों ने
फ़िरौन से कहा, "यह परमेश्वर का काम है।"
तब परमेश्वर के कहने के अनुसार फ़िरौन का
मन सख्त होता गया और उसने मूसा और
हारून की न सुनी। 20 फिर परमेश्वर ने मूसा से
कहा, "सुबह-सवेरे फ़िरौन के सामने जाना,

वह पानी की तरफ़ आएगा। उस से कहना, परमेश्वर का कहना है, मेरे लोगों को जाने दो ताकि वे मेरी आराधना करें। 21 अगर तुम मेरे लोगों को नहीं जाने दोगे, तो तुम पर, तुम्हारी प्रजा पर और तुम्हारे घरों में झुण्ड के झुण्ड मक्खियाँ भेजूँगा। यही हाल मिस्रियों के घरों और उनके रहने की ज़मीन का होगा। 22 उसी दिन मैं गोशेन देश को जिस में मेरे लोग रहते हैं, एक दूरी रखूँगा। उसमें मक्खियों के झुण्ड नहीं होंगे, ताकि तुम जान लो कि इस दुनिया में मैं ही परमेश्वर हूँ। 23 तुम्हारी अपनी प्रजा के बीच फ़र्क क्या है, मैं यह दिखा दूँगा। यह चिन्ह कल होगा।" 24 परमेश्वर ने, वैसा ही किया और फ़िरौन के भक्त और उसके कर्मचारियों के घरों में और सारे मिस्र देश में मक्खियों के झुण्ड भर गए, जिस की वजह से देश बर्बाद हो गया। 25 तब फ़िरौन ने मूसा और हारून को बुलवाया और कहा, "तुम जाओ और इसी देश में अपने परमेश्वर के लिए बलिदान करो।" 26 मूसा बोला, "ऐसा करना ठीक नहीं, क्योंकि हम अपने परमेश्वर के लिए मिस्रियों की घिनौनी चीज चढ़ाएँगे और यदि हम मिस्रियों के देखते उनकी घिनौनी चीज चढ़ाएँ, तो क्या वे हम पर पथराव नहीं करेंगे? 27 तीन दिन का रास्ता तय कर जंगल ही में, जैसा परमेश्वर कहें, वैसा ही बलिदान करेंगे। 28 फ़िरौन बोला, "मैं जंगल में तुम्हें जाने दूँगा, ताकि तुम जंगल में उनकी आराधना[a] करो। देखो, ज़्यादा दूर मत जाना और मेरे लिए प्रार्थना करना।" 29 तब मूसा ने कहा, सुनो, मैं बाहर जाकर परमेश्वर से निवेदन करूँगा, कि मक्खियों के झुण्ड तुम्हारे और तुम्हारे कर्मचारियों और प्रजा के पास से दूर कर दिए जाएँ, लेकिन फ़िरौन भविष्य में कपट करके हमें परमेश्वर के लिए बलिदान करने को जाने देने के लिए मना न करे।" 30 इसलिए मूसा ने फ़िरौन के पास बाहर जाकर परमेश्वर से प्रार्थना की। 31 परमेश्वर ने मूसा के कहने के मुताबिक मक्खियों के झुण्डों को फ़िरौन और उसके कर्मचारियों और उसकी प्रजा से दूर किया। यहाँ तक कि एक भी न रहा। 32 तब फ़िरौन ने फिर से पुराना अड़ियल रवैया अपना लिया और लोगों को जाने न दिया।

9 फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा, "फ़िरौन के पास जाकर कहो, 'इब्रियों के प्रभु परमेश्वर का कहना है, मेरी प्रजा के लोगों को जाने दो, ताकि वे मेरी इबादत करें। 2 यदि तुम उन्हें पकड़े रहोगे और जाने न दोगे, 3 तो तुम्हारे घोड़ों, गदहों, ऊँटों, गाय-बैलों, भेड़-बकरियों आदि जानवरों पर जो मैदान में हैं, परमेश्वर का ऐसा गुस्सा भड़केगा, कि भारी मरी होगी। 4 किन्तु परमेश्वर इस्राएलियों के जानवरों और मिस्रियों के जानवरों में ऐसा अन्तर रखेंगे, कि इस्राएलियों के जानवरों में से कोई भी नहीं मरेगा।" 5 तब परमेश्वर ने कहा, "इस देश में ऐसा मैं कल ही करूँगा।" 6 दूसरे दिन ऐसा हुआ भी - इस्राएलियों का एक जानवर भी नहीं मरा, लेकिन मिस्रियों के सभी जानवर मर गए। 7 फ़िरौन के पता लगाने पर मालूम पड़ा कि इस्राएलियों के पशुओं में से एक भी नहीं मरा था। इसके बावजूद फ़िरौन का मन कठोर हो गया और उसने उन्हें जाने नहीं दिया। 8 फिर परमेश्वर ने मूसा और हारून ने कहा, "तुम दोनों मिट्टी में से एक-एक मुट्ठी लो और मूसा उसे फ़िरौन के सामने आकाश की तरफ़ उड़ा दो। 9 तब वह बारीक धूल पूरे मिस्र देश में इन्सानों और जानवरों दोनों पर फफोले और फोड़े

[a] **8.28** उपासना

बन जाएगी।” 10 उन दोनों ने वैसा किया
और मनुष्यों और पशुओं दोनों पर फफोले
और फोड़े बन गई। 11 जिस तरह के फोड़े
मिस्रियों के निकले, वैसे ही जादूगरों के भी
निकले, जिस की वजह से वे मूसा के सामने
खड़े तक नहीं रह सके। 12 तब परमेश्वर ने
फ़िरौन के मन को सख्त कर दिया और जैसा
परमेश्वर ने मूसा से कहा था, अनसुनी कर
दी। 13 इसके बाद परमेश्वर ने मूसा से कहा,
“सुबह उठ कर फ़िरौन के सामने खड़े होकर
कहो, “इब्रियों के प्रभु परमेश्वर इस तरह
कहते हैं, मेरी कौम के लोगों को जाने की
इजाज़त दो, ताकि वे जाकर मेरी उपासना
करें। 14 यदि तुमने ऐसा नहीं किया तो मैं
तुम पर, तुम्हारे कर्मचारियों और तुम्हारी प्रजा
पर हर तरह की विपत्तियाँ उण्डेलूँगा। तब
तुम जान सकोगे कि इस दुनिया में मेरी तरह
कोई और दूसरा नहीं है। 15 मैंने तो अपना
हाथ बढ़ाकर तुम्हें, तुम्हारी प्रजा को मरी
से मारा होता और इस दुनिया में से तुम्हारा
नामो-निशां मिट गया होता। 16 लेकिन मैंने
तुम्हें इसलिए जीवित रखा कि मैं तुम्हें अपनी
शक्ति दिखाऊँ और सारी पृथ्वी पर अपना
नाम मशहूर करूँ। 17 क्या अभी भी तुम मेरी
प्रजा के सामने अपने आपको बड़ा समझते
हो और जाने नहीं दे रहे हो? 18 सुनो, कल
इसी समय ऐसे भारी ओले बरसाऊँगा, जैसे
मिस्र की शुरूआत से आज तक कभी नहीं
पड़े। 19 इसलिए अब अपने लोगों को भेज
कर मैदान के पशुओं और जो कुछ हो, उसे
जल्दी से छिपा लो, नहीं तो मैदान के सभी
जानवर और इन्सान ओलों की मार से मर
जाएँगे। 20 इसलिए फ़िरौन के उन कर्मचारियों
ने जो परमेश्वर के कहने का सम्मान करते
थे, अपने नौकरों और जानवरों को घर में
कर लिया। 21 लेकिन जिन्होंने परमेश्वर की
बात को हल्का-फुलका जाना, अपने पशुओं
और नौकरों को बाहर ही रहने दिया। 22 फिर
परमेश्वर ने मूसा से कहा कि वह अपने हाथ
आकाश की तरफ़ बढ़ाए ताकि सारे मिस्र देश
के लोगों, पशुओं और खेती पर ओले गिरें।
23 निर्देष के अनुसार मूसा ने वैसा किया।
परमेश्वर की सामर्थ से बादल गरजने लगे,
ओले गिरने लगे और आग पृथ्वी तक आती
रही। 24 गिरने वाले ओलों के साथ आग भी
मिली हुई थी। वे ओले इतने भारी थे कि मिस्र
देश के बसने के समय से कभी देखे नहीं गए
थे। 25 मिस्र के खेतों में मनुष्य, जानवर और
उपज और पेड़ों को बर्बाद होते देखा गया।
26 इस्राएलियों का इलाका गोशेन इस बर्बादी
से बच गया। 27 इस बर्बादी को देख फ़िरौन ने
मूसा और हारून को बुलवा कर कहा,“इस
बार मैंने अपराध किया है। परमेश्वर धर्मी[a]
हैं। मेरी प्रजा और मैं अधर्मी[b] हैं। 28 बादलों
का गरजना और ओलों का गिरना काफ़ी
हो चुका है। अब परमेश्वर से प्रार्थना करो,
तभी तुम्हें जाने दिया जाएगा और तुम्हें कोई
नहीं रोकेगा। 29 मूसा बोला, “नगर के बाहर
निकलते ही मैं परमेश्वर की ओर अपने हाथ
फैलाऊँगा और बादल का गरजना, ओले
गिरना रूक जाएगा इस से तुम जान जाओगे
कि पृथ्वी परमेश्वर की है। 30 फिर भी मेरा
यह मानना है कि तुम और तुम्हारे कर्मचारी
परमेश्वर का भय न मानेंगे।” 31 सन और जौ
तो ओलों से मारे जा चुके हैं, क्योंकि जौ की
बालें निकल चुकी थीं और सन में फूल लगे
हुए थे। 32 लेकिन क्योंकि गेहूँ और कठिया
बढ़े न थे, इसलिए वे मारे नहीं गए। 33 जब
मूसा ने फ़िरौन के पास से नगर के बाहर
निकल कर परमेश्वर की तरफ़ हाथ फैलाए,

[a] 9.27 खरे [b] 9.27 दुष्ट

तभी बादल का गरजना और ओलों का
बरसना बन्द हो गया और अधिक बरसात
नहीं हुई। 34 परन्तु यह देख कर कि पानी और
ओलों का गिरना और बादल का गरजना
बन्द हो गया है, फ़िरौन ने अपने कर्मचारियों
समेत अपने मन को कठोर करके अपराध
किया। 35 इस प्रकार फ़िरौन का मन हठीला
होता गया और उसने इस्राएलियों को जाने
न दिया, जैसा कि परमेश्वर ने मूसा के द्वारा
कहलाया था।

10 फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा,
"फ़िरौन के पास जाओ, क्योंकि मैं
ही ने उसके और उसके कर्मचारियों के मन
को इसलिए हठीला कर दिया है कि अपने
चिन्ह उन लोगों के बीच दिखाऊँ। 2 तुम
अपने बच्चों और उनके बच्चों को बताना कि
परमेश्वर ने मिस्रियों को ठट्ठों में किस तरह
उड़ाया और कौन-कौन से चिन्ह दिखाए,
ताकि तुम यह जान सको कि मैं परमेश्वर
हूँ।" 3 तब मूसा और हारून ने फ़िरौन के
पास जाकर कहा, "इब्रियों के प्रभु परमेश्वर
इस तरह कहते हैं, तुम कब तक मेरे सामने
नम्र होने में हिचकिचाते रहोगे? मेरी कौम
के लोगों को आराधना-स्तुति करने के लिए
जाने दो। 4 यदि तुम मेरी कौम को छोड़ोगे
नहीं, तो मैं कल ही तुम्हारे देश में टिड्डियाँ
ले आऊँगा। 5 वे पृथ्वी पर इस तरह छा
जाएँगी, कि कुछ और दिखाई तक नहीं
पड़ेगा। ओलों से बचे-कुचे को और मैदानी
इलाकों के पेड़ों का भी सफ़ाया कर देंगी।
6 वे तुम्हारे, तुम्हारे कर्मचारियों, यहाँ तक कि
सभी मिस्रियों के घरों में भर जाएँगी। इतनी
टिड्डियाँ तुम्हारे बापदादों या उनके पुरखों ने
भी अपने जन्म से नहीं देखी होंगी।" यह कह
कर वह फ़िरौन के पास से बाहर निकल
आया। 7 तब फ़िरौन के कर्मचारी फ़िरौन से
कहने लगे, "मूसा कब तक हमारे लिए एक
समस्या[a] बना रहेगा? उसके लोगों को जाने
भी दीजिए कि वे जाकर अपने परमेश्वर की
वन्दना करें। क्या आप अभी तक समझ नहीं
पा रहे हैं कि सारा मिस्र बर्बाद हो चुका है?
8 तब मूसा और हारून को फिर से फ़िरौन
के पास बुलवाया गया और पूछा गया कि
उपासना के लिए कौन-कौन जाने वाला है?"
9 मूसा बोल उठा, "हम अपने बेटे-बेटियों,
भेड़-बकरियों, गाय-बैलों, बच्चों और बुज़ुर्गों
के साथ जाएँगे, क्योंकि हमें परमेश्वर के
लिए त्यौहार मनाना है। 10 फ़िरौन ने उत्तर
में कहा, "परमेश्वर तुम्हारे संग रहे। यदि मैं
तुम्हारे बच्चों समेत तुम्हें जाने देता हूँ तो देखो
समस्या तुम्हारे सामने है। 11 मैं ऐसा नहीं
होने दूँगा। जैसा तुम पुरुष चाहते थे, जाओ
और परमेश्वर की सेवा करो।" इसके बाद
ही फ़िरौन के सामने से उन्हें भेज दिया गया।
12 तब परमेश्वर ने मूसा से कहा, "मिस्र देश
के ऊपर हाथ बढ़ाकर टिड्डियों द्वारा उस अन्न
को बर्बाद कर डालो जो ओलों की मार से
बच चुका है। 13 इसलिए मूसा ने अपनी लाठी
को मिस्र देश के ऊपर बढ़ाया और परमेश्वर ने
दिन-रात पुरवाई चला दी। सुबह होते ही उस
पुरवाई के साथ टिड्डियाँ आ गई। 14 टिड्डियों
का भारी दल मिस्र देश में आ पहुँचा। ऐसा
पहले कभी नहीं हुआ था और न भविष्य
में होने वाला था। 15 टिड्डियों के सारी पृथ्वी
पर छा जाने से देश में अँधेरा हो गया। सारा
अनाज या फल सभी जो ओलों से बच गया
था, टिड्डियों ने चट कर लिया। इस कारणवश
मिस्र देश में न कुछ हरियाली रह गई, न
ही खेत में अनाज रह गया। 16 तब फ़िरौन

[a] **10.7** जाल

ने तुरन्त मूसा और हारून को बुलवा कर
कहा, “मैंने तो तुम्हारे और तुम्हारे परमेश्वर के
खिलाफ़ अपराध किया है। 17 इसलिए इस
बार मुझे माफ़ करो और अपने प्रभु परमेश्वर
से प्रार्थना करो कि वह इस बर्बादी[a] को दूर
करें। 18 तब मूसा ने फ़िरौन के पास निकल
कर परमेश्वर से प्रार्थना की। 19 तब परमेश्वर
ने बहुत तेज पश्चिमी हवा बहा कर टिड्डियों
को उड़ा कर लाल समुद्र में डाल दिया और
मिस्र की किसी जगह एक टिड्डी भी न दिखी।
20 तौभी परमेश्वर ने फ़िरौन के दिल को कठोर
कर दिया, इसलिए उसने इस्राएलियों को
जाने नहीं दिया। 21 फिर परमेश्वर ने मूसा से
कहा, “अपना हाथ आकाश की ओर बढ़ाओ
कि मिस्र देश के ऊपर अँधेरा छा जाए। ऐसा
अँधेरा कि टटोला जा सके।” 22 तब मूसा
ने अपना हाथ आकाश की तरफ़ बढ़ाया
और सारे मिस्र देश में तीन दिन तक घोर
अँधेरा छाया रहा। 23 तीन दिन तक कोई भी
किसी को देख न पाया, न ही कोई अपनी
जगह से उठा, लेकिन सभी इस्राएलियों के
घरों में रोशनी थी। 24 तब फ़िरौन ने मूसा
को बुलाकर कहा, “अपने बच्चों को साथ
ले जाओ और परमेश्वर की इबादत करो,
सिर्फ़ अपने मवेशियों को छोड़ जाओ।”
25 मूसा बोला, “हमें मेलबलि और होमबलि
के जानवर भी देने पड़ेंगे, ताकि हम प्रभु
परमेश्वर के लिए चढ़ाएँ। 26 इसलिए हमारे
जानवर भी हमारे साथ जाएँगे। उनका एक
खुर तक भी यहाँ नहीं रह जाएगा। हमें सभी
जानवर ले जाने होंगे, क्योंकि मालूम नहीं कि
क्या-क्या ले जाकर आराधना करनी होगी।”
27 किन्तु परमेश्वर ने फ़िरौन का मन कठोर
कर दिया, जिस से उसने उन्हें जाने न दिया।
28 तब फ़िरौन बोल उठा, “मेरे सामने से चले
जाओ और सावधान रहो। मैं तुम्हारा मुँह तक
नहीं देखना चाहता हूँ, जिस दिन ऐसा हुआ,
तो तुम जीवित न बचोगे।” 29 मूसा ने जवाब
दिया, “ठीक है मैं आपका मुँह कभी नहीं
देखूँगा।”

11 परमेश्वर ने मूसा से कहा, “एक और
मुसीबत मैं फ़िरौन और मिस्र देश
पर डालूँगा, उसके बाद वह तुम्हें जाने देगा।
2 मेरी प्रजा को यह आज्ञा सुनाओ कि हर
एक पुरुष अपने पड़ोसी और हर एक महिला
अपनी पड़ोसिन से सोने चाँदी के गहने माँग
ले।” 3 तब परमेश्वर ने मिस्रियों के मन में
अपने लोगों के लिए तरस भर दिया। मूसा,
मिस्र देश में फ़िरौन के कर्मचारियों और
साधारण लोगों की निगाह में बहुत बड़ा
था। 4 इसके बाद, मूसा बोला, “परमेश्वर
का कहना यह है, मैं बीच रात में मिस्र
देश में चलूँगा। 5 तब मिस्र में राजासन पर
बैठने वाले फ़िरौन से लेकर चक्की पीसने
वाली गुलाम[b] के पहलौठे, यहाँ तक कि
पशुओं के सब पहलौठे, वरन् पशुओं तक
के सब पहलौठे मर जाएँगे। 6 पूरे मिस्र देश
में ऐसा बड़ा हाहाकार मच जाएगा, जैसा
उस से पहले न कभी हुआ था और न
होगा। 7 लेकिन इस्राएलियों के विरुद्ध, क्या
मनुष्य, क्या पशु, किसी पर कुत्ता भी न
भोकेंगा। इस से तुम जान लोगे कि मैं मिस्रियों
और इस्राएलियों में अन्तर करता हूँ। 8 तब
तुम्हारे ये सब कर्मचारी मेरे पास आकर मुझे
दण्डवत् करके कहेंगे, “आपने सभी मानने
वालों समेत तुम निकल जाओ।” उसके
बाद मैं निकल जाऊँगा। गुस्से से यह कहते
हुए मूसा फ़िरौन के पास से निकल गया।
9 परमेश्वर ने मूसा से कह दिया था, “फ़िरौन

[a] **10.17** मौत [b] **11.5** दासी

तुम्हारी नहीं सुनेगा, क्योंकि मैं चाहता हूँ कि
मिस्र देश में अजीब काम करूँ।" 10 परमेश्वर
ने फ़िरौन का मन और कठोर कर दिया,
इसलिए उसने इस्राएलियों को अपने देश से
जाने न दिया।

12 प्रभु परमेश्वर ने मूसा और हारून
से कहा, 2 "यह महीना तुम लोगों
के लिए पहला या शुरूवाती महीना ठहरे।
3 इस्राएल के सारे झुण्ड को बताओ कि
इसी महीने के दसवें दिन को तुम्हें अपने
पूर्वजों के घरानों के अनुसार हर घर के लिए
एक मेम्ना लेना है। 4 यदि किसी के परिवार
में एक मेम्ने के खाने के लिए लोग कम
हों, तो वह अपने सब से निकट के रहने
वाले पड़ोसी के साथ सदस्यों की गिनती के
मुताबिक एक मेम्ना ले। प्रत्येक के खाने के
अनुसार मेम्ने का हिसाब करना। 5 तुम्हारा
मेम्ना निर्दोष और एक साल की आयु का
हो चाहे भेड़ का, चाहे बकरी का। 6 इस
महीने के चौदहवें दिन तक उसे ऐसे ही रहने
देना। उस दिन शाम के समय इस्राएल के
सारे लोग उसे कुर्बान करें। 7 इसके बाद
उसके खून में से कुछ लेकर जिन घरों में
मेम्ने को खाया जाएगा, उनके दरवाज़ों के
दोनों बाजुओं और चौखट के सिरे पर लगाया
जाए। 8 उसके गोश्त को उसी रात आग में
भूँज कर अखमीरी रोटी और कड़वे- सागपात
के साथ खाया जाए। 9 उसको सिर, पैर और
अतड़ियों समेत आग में भूँज कर खाना। कच्चा
या पानी में कुछ भी पका कर मत खाना।
10 उसमें से कुछ भी सुबह तक मत रहने
देना। यदि रह जाए तो उसे आग में जला
देना। 11 उसको खाने का तरीका यह है कमर
बाँधकर, पाँव में जूतियाँ पहन हाथ में लाठी
लिए हुए जल्दी-जल्दी खाना। यह परमेश्वर
का पर्व कहलाएगा। 12 उस रात मैं मिस्र देश
में पशुओं और मनुष्यों के पहिलौठों को मारते
और देवताओं को सज़ा देते हुए गुज़रूँगा।
मैं परमेश्वर[a] हूँ। 13 जिन घरों में तुम लोग
रहोगे, उन पर वह खून तुम्हारे लिए निशान
ठहरेगा। कहने का मतलब यह है कि उस
खून को देख कर मैं तुम्हें नाश न करूँगा।
मिस्र देश के लोगों को मारते समय तुम्हारा
कुछ नुकसान न होगा और तुम बचे रहोगे।
14 वह दिन तुम्हें सदैव याद दिलाएगा और
उसे तुम त्यौहार की तरह मानना। तुम्हारी
आने वाली पीढ़ियों में भी वह सदा काल
तक एक पर्व के रूप में मनाया जाए। 15 सात
दिन तक तुम अखमीरी रोटी खाना। पहले
ही दिन अपने-अपने घर से खमीर हटा देना।
जो पहले दिन से लेकर सातवें दिन तक
कोई खमीरी चीज़ खाए वह जन इस्राएलियों
में से बर्बाद किया जाए। 16 पहले दिन और
सातवें दिन एक पवित्र सभा करना। दोनों ही
दिनों में किसी तरह का काम न किया जाए।
सिर्फ़ खाना खाने की इजाज़त है। 17 तुम बिना
खमीर की रोटी का त्यौहार मनाना, क्योंकि
उसी दिन मैंने तुम को झुण्ड-झुण्ड में रख
कर मिस्र देश से निकाला हूँ। इसलिए वह
दिन तुम्हारी पीढ़ियों में हमेशा का एक रिवाज़
बना रहे। 18 पहले महिने के चौदहवें दिन की
शाम से लेकर इक्कीसवें दिन की शाम तक
तुम अखमीरी रोटी का सेवन करना। 19 सात
दिन तक तुम्हारे घरों में कुछ भी खमीर न
रहे, लेकिन जो कोई[b] किसी खमीरी वस्तु को
खाए, वह मार डाला जाए। 20 कोई खमीरी
पदार्थ मत खाना। अपने-अपने घरों में बिना
खमीर की रोटी खाना। 21 इसके बाद मूसा
ने इस्राएल के सब बुज़ुर्गों को बुलाया और

[a] **12.12** परमेश्वर [b] **12.19** देशी या परदेशी

आज्ञा दी, “तुम लोग अपने-अपने कुल के
अनुसार एक-एक मेम्ना अलग करके फ़सह
का पशु बलि करना। 22 तसले में रखे मेम्ने
के खून में जूफ़ा का एक गुच्छा डुबा कर
दरवाज़े के चौखट के सिरे और दोनों बाजुओं
पर थोड़ा लगाना साथ ही सुबह तक कोई भी
जन अपने घर से बाहर न निकले। 23 परमेश्वर
देश के बीच से गुज़रते हुए मिस्रियों को
मारते जाएँगे। इसलिए जहाँ-जहाँ चौखट और
बाजुओं पर खून दिखेगा, वहाँ नाश करने
वाले को भीतर जाने नहीं दिया जाएगा।
24 इस प्रथा को अपने और अपने वंश के
लिए सदा की विधि जान कर मानते रहना।
25 उस देश में जिसे परमेश्वर अपने कहने के
अनुसार तुम को देंगे, दाखिल हो, तब यह
काम किया करना। 26 जब तुम्हारे बच्चे इस
प्रथा के बारे में सवाल करें, 27 तब उनको
यह जवाब देना, “परमेश्वर ने जो मिस्रियों
के मारने के समय मिस्र में रहने वाले हम
इस्राएलियों के घरों को छोड़कर हमारे घरों
को बचाया, उसी की याद में यह फ़सह
का बलिदान किया जाता है।” तब लोगों
ने झुक कर दण्डवत् किया। 28 इस्राएलियों
ने जाकर वैसा ही किया, जैसे मूसा और
हारून द्वारा उन्हें बताया गया। 29 बीच रात
में परमेश्वर ने मिस्र देश में राजासन पर बैठने
वाले फ़िरौन से लेकर गड्ढे में पड़े हुए बंधुए
तक, सभी के पहलौठों को, यहाँ तक कि
सब के पहलौठों को खत्म कर डाला 30 रात
ही को फ़िरौन उठ बैठा और उसके सभी
कर्मचारी और सारे मिस्री लोग जग गए।
घरों-घरों में मौत की वजह से बड़ा हाहाकार
मच गया। 31 रात ही में फ़िरौन ने मूसा और
हारून को बुलवाया और कहा, “इस्राएलियों
समेत तुम मेरी प्रजा के बीच से निकल
जाओ और जाकर परमेश्वर की उपासना करो
32 अपने मवेशियों को अपने साथ ले जाओ
और जाते-जाते मुझे आशीर्वाद भी दे दो।”
33 मिस्रियों का कहना था, “हम सब मर
मिटे हैं” उन्होंने इस्राएली लोगों पर दबाव
डाल कर कहा, “देश से झटपट निकलो।”
34 तब उन्होंने अपने गुंधे-गुंधाए आटे को
बिना खमीर दिए ही कठौतियों समेत कपड़ों
में बाँधकर अपने-अपने कंधे पर डाल दिया।
35 मूसा के निर्देष के अनुसार इस्राएलियों ने
मिस्रियों से सोने-चाँदी के गहने और कपड़े
माँग लिए। 36 परमेश्वर ने मिस्रियों को अपने
लोगों के प्रति इतना दया से भर दिया, कि
जो-जो उन्होंने माँगा, वह सभी उन्हें दे दिया।
इस तरह मिस्रियों से इस्राएलियों ने हासिल
किया। 37 इसके बाद इस्राएली रामसेस से
सुक्कोत को चल पड़े। यदि बाल बच्चों को
न गिनें, तो पैदल चलने वाले पुरुष ही है
छः लाख थे। 38 उनके संग मिली-जुली भीड़,
भेड़-बकरी, गाय-बैल और बहुत से जानवर
भी थे। 39 मिस्र से लाए गए गुंधे हुए आटे
से उन्होंने बिना खमीर की रोटियाँ बनाईं।
क्योंकि हड़बड़ी में मिस्र से निकाले जाने
के समय, उनके पास समय नहीं था कि
रास्ते के लिए कुछ पकाएँ। इसलिए वह
गुंधा हुआ आटा खमीर-रहित था। 40 इस
तरह इस्राएलियों को मिस्र में रहते चार सौ
तीस साल हो गए थे। 41 और जिस दिन
वे बाहर आए, पूरे चार सौ तीस वर्ष पूरे
हुए। 42 परमेश्वर इस्राएलियों को मिस्र देश
से निकाल लाए थे, इसलिए वह रात उन्हीं
के लिए मनाए जाने के लिए रखी गई। तब
से युगों तक ऐसा करना उनके लिए वाजिब
ठहराया गया। 43 फिर परमेश्वर ने मूसा से
कहा, “त्यौहार का तरीका यह होगा कि कोई
परदेशी उसमें से न खाए। 44 जो किसी का
खरीदा हुआ गुलाम हो और तुम लोगों ने

उस का खतना किया हो, तो वह उसमें से
खा पाएगा। 45 मजदूर और परदेशी दोनों को
उसमें से खाना मना है। 46 उस का खाना
एक ही घर में हो अर्थात् तुम उसके मांस
में से कुछ घर से बाहर न ले जाना और
बलिपशु की कोई हड्डी न तोड़ना। 47 त्यौहार
को मनाना सभी इस्राएलियों की ज़िम्मेंदारी
है। 48 यदि कोई परदेशी तुम लोगों के साथ
रह कर परमेश्वर के लिए पर्व को मनाना
चाहे, तो पहले अपने यहाँ के सभी पुरुषों का
खतना करवाए, पास आकर उसे मानें, तभी
वह तुम में से एक[a] कहलाएगा। 49 तुम्हारे
बीच रहने वाले तुम्हारे अपने लोग और बसने
वाले परदेशी दोनों के लिए एक ही कानून[b]
हो। 50 परमेश्वर द्वारा दी गई इस आज्ञा के
अनुसार इस्राएलियों ने किया । 51 उसी दिन
इस्राएलियों को परमेश्वर मिस्र देश से दल-दल
करके निकाल लाए।

13 फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा,
2 मनुष्य और पशु दोनों ही के ज्येष्ठ[c]
मेरे रहें, उन्हें मेरे लिए अलग रखना।" 3 फिर
मूसा ने लोगों से कहा, "इस दिन को याद
रखना। इस दिन तुम गुलामी के घर से
अर्थात् मिस्र से परमेश्वर की शक्ति से निकाल
लाए गए हो, इस में अखमीरी रोटी का
सेवन न किया जाए। 4 तुम लोग अबीब के
महीने में आज के दिन निकले हो। 5 इसलिए
जब परमेश्वर तुम को कनानी, हित्ती, एमोरी,
हिब्बी और यबूसी लोगों के देश पहुँचाएँगे,
जिसे देने के लिए उन्होंने तुम्हारे पूर्वजों[d] से
वायदा किया था और जिस में दूध और शहद
की नदियाँ बहती हैं, तब तुम इसी महीने में
त्यौहार मनाना। 6 सात दिन अखमीरी रोटी
खाया करना और सातवें दिन परमेश्वर के
लिए त्यौहार मनाना। 7 इन सात दिनों में
अखमीरी रोटी खाई जाए। यहाँ तक कि
तुम्हारे देश भर में न खमीरी रोटी, न खमीर
तुम्हारे पास देखने में आए। 8 उस दिन तुम
अपने-अपने बेटों को यह कह कर समझा
देना कि यह हम उसी काम के कारण करते
हैं, जो परमेश्वर ने हमारे लिए किया था।
9 फिर तुम्हारे लिए तुम्हारे हाथ में एक निशान
होगा, और तुम्हारी आँखों के सामने याद
कराने वाली वस्तु ठहरें, जिस से परमेश्वर
का नियमशास्त्र तुम्हारे मुँह पर रहे, क्योंकि
उन्हींने अपने ताकत से तुम्हें मिस्र देश से
निकाला है। 10 इसलिए तुम इस प्रथा को
हर साल निश्चित समय पर मनाया करना।
11 "फिर जब परमेश्वर उस शपथ के अनुसार
जो उन्होंने पुरखाओं से और तुम से भी खाई
है, तुम्हें कनानियों के देश में पहुँचा कर
उसको तुम्हें दे देंगे। 12 तब तुम में से जितने
अपनी माँ के बड़े बच्चे हैं, - चाहे पशु के भी,
उन्हें परमेश्वर के लिए अर्पण करना। सभी
नर बच्चे परमेश्वर के हैं। 13 और गदही के हर
एक पहलौठे के बदले मेम्ना देकर उसको
छुड़ा लेना और यदि तुम उसे छुड़ाना न चाहो
तो उस का गला तोड़ देना। लेकिन आप
अपने सब पहलौठे बेटों को बदला देकर
छुड़ा लेना। 14 आने वाले दिनों में जब तुम्हारे
बेटे तुम से पूछें, "यह क्या है, तो उन से
कहना, 'परमेश्वर हमें गुलामी के घर से[e] अपने
हाथों के बल से निकाल लाए थे । 15 उस
समय जब फ़िरौन ने ज़िद्दी होकर हम को
जाने देना न चाहा, तब परमेश्वर ने मिस्र देश में
मनुष्य से लेकर पशु तक के पहलौठों को मार
डाला था। इसी वजह से पशुओं में से जितने
अपनी-अपनी माँ के पहलौठे नर हैं, उन्हें हम
परमेश्वर के लिए कुर्बान करते हैं। लेकिन

[a] **12.48** या देशी [b] **12.49** नियम [c] **13.2** बड़े-बेटे [d] **13.5** बुज़ुर्गों [e] **13.14** मिस्र देश से

सब ज्येष्ठ बेटों को हम बदला देकर छुड़ा
लेते हैं। 16 यह तुम्हारे हाथों पर एक चिन्ह-सा
और तुम्हारी भौंहों के बीच टीका-सा ठहरें,
क्योंकि परमेश्वर हम लोगों को मिस्र से अपनी
शक्ति से निकाल लाए हैं।" 17 जब फ़िरौन ने
लोगों को जाने की आज्ञा दे दी, तब हालांकि
पलिश्तियों के देश में होकर जो रास्ता जाता
है वह छोटा था, तौभी परमेश्वर यह सोच कर
उनको उस रास्ते से नहीं ले गए कि कहीं
ऐसा न हो, ये लोग लड़ाई देख, पछता कर
मिस्र को वापस आएँ। 18 इसलिए परमेश्वर
उन्हें घुमाकर लाल समुद्र के रास्ते से ले चले
और इस्राएली पंक्ति बना कर मिस्र से निकल
गए। 19 मूसा, यूसुफ़ की हड्डियाँ साथ ले गया,
क्योंकि यूसुफ़ ने इस्राएलियों को आश्वासन
दिया था कि परमेश्वर तुम्हें छुड़ाएँगे। उसने
उन से यह कसम खिलवाई, की कि वे
उसकी हड्डियों को अपने साथ ले जाएँगे।
20 फिर उन्होंने सुक्कोत से निकल कर जंगल
की छोर पर एताम में डेरा किया। 21 परमेश्वर
उन्हें दिन को रास्ता दिखाने के लिए बादल
के खम्भे में और रात को रोशनी देने के लिए
आग के खम्भे में होकर उनके आगे-आगे
चला करते थे, जिस से वे रात और दिन चलते
जाएँ। 22 परमेश्वर ने न तो बादल के खम्भे को
दिन में, न आग के खम्भे को रात में उन लोगों
के सामने से हटाया।

14 परमेश्वर ने मूसा से कहा,
2 "इस्राएलियों से कहो कि वे
लौटकर मिगदोल और समुद्र के बीच,
पीहहीरोत के सामने बालसपोन के सामने
अपने डेरे खड़े करें, डेरों की दिशा समुन्दर
की ओर होनी चाहिए। 3 तब फ़िरौन
इस्राएलियों के बारे में सोचेगा, वे देश की
उलझनों में फँसे हैं और जंगल में घिर गए
हैं।" 4 इसके बाद मैं फ़िरौन को ढीठ बना
दूँगा और वह उनका पीछा करेगा। तब
फ़िरौन और उसकी सारी फ़ौज के द्वारा मेरा
नाम ऊँचा होगा। हाँ, मिस्री लोग जान लेंगे
कि मैं परमेश्वर हूँ।" ऐसा उन्होंने किया भी।
5 जैसे ही मिस्र के राजा को यह पता चला
कि वे लोग भाग गए हैं, तो फ़िरौन और
उसके कर्मचारियों का मन उनके खिलाफ़
पलट गया और वे कहने लगे, "अरे, हम ने
यह क्या किया, कि इस्राएलियों को अपनी
गुलामी से आज़ाद कर दिया!" 6 तब राजा
ने अपने रथ को जुतवा कर अपनी फ़ौज को
साथ लिया। 7 उसने छः सौ अच्छे से अच्छे
रथ, यहाँ तक कि मिस्र के सभी रथों पर
सरदारों को बैठाया। 8 परमेश्वर ने मिस्र के
राजा फ़िरौन को ज़िद्दी बना दिया। इसलिए
उसने इस्राएलियों का पीछा किया लेकिन
इस्राएली बिना किसी डर के आगे बढ़ते
जाते थे। 9 लेकिन फ़िरौन के सब घोड़ों,
रथों और सवारों समेत मिस्री फ़ौज उनका
पीछा करके उनके पास जो पीहहीरोत के
नज़दीक, बालसपोन के सामने समुन्दर के
किनारे पर डेरे डाले पड़े थे, जा पहुँची।
10 फ़िरौन के नज़दीक आते ही इस्राएलियों ने
देखा कि मिस्री उनका पीछा कर रहे हैं। यह
देख इस्राएली डरे और चिल्लाकर परमेश्वर
को पुकारा। 11 उन्होंने मूसा से कहा, "तुम
जंगल में हमारे को मरने के लिए ले आए
हो, क्या मिस्र में कब्रें नहीं थीं? 12 मिस्र में
हम तुम से कहते रहे, कि मिस्रियों की सेवा
करने के लिए हमें यही रहने दो। जंगल में
ढेर हो जाने के बेहतर मिस्रियों की सेवा
करना बेहतर था।" 13 मूसा बोल उठा, "मत
डरो, खड़े-खड़े बचाव का वह काम देखो,
जो परमेश्वर तुम्हारे लिए आज करेंगे। आज
तुम जिन मिस्रियों को देख रहे हो, भविष्य

में कभी न देखोगे। 14 तुम चुपचाप रहो,
परमेश्वर तुम्हारे पक्ष में लड़ेंगे।" 15 परमेश्वर
ने मूसा से पूछा, "मेरे सामने तुम गिड़गिड़ा
क्यों रहे हो? इस्राएलियों को आज्ञा दो कि
यहाँ से चल दें। 16 तुम अपनी लाठी उठा
कर समुद्र के ऊपर बढ़ाओ, वह दो हिस्सों
में बँट जाएगा। ऐसा होने पर इस्राएली समुद्र
के बीच में से गुज़रेंगे जैसे सूखी ज़मीन पर
से। 17 हाँ सुनो, मिस्रियों के मनों को ज़िद्दी
बना दूँगा और वे वहाँ भी उन लोगों का
पीछा करेंगे। तब फ़िरौन और उसकी सारी
फ़ौज, रथों और सवारों की बर्बादी द्वारा मेरी
बड़ाई करेंगे। 18 जब फ़िरौन, उसके रथों
और सवारों पर जीत से मेरी बड़ाई होगी,
तब मिस्रियों को मालूम हो जाएगा कि मैं
परमेश्वर हूँ। 19 इसके बाद इस्राएली सेना के
आगे-आगे चलने वाला स्वर्गदूत उनके पीछे
हो गया। उनके आगे चलने वाला बादल
का खंभा, आगे से हटकर पीछे जा ठहरा।
20 इस तरह से वह मिस्रियों और इस्राएलियों
की फ़ौजों के बीच में आ गया। बादल और
अँधेरा बना रहा, लेकिन रात को फिर भी
उन्हें रोशनी मिलती रही। वे रात भर एक
दूसरे के निकट नहीं आए। 21 फिर मूसा ने
अपना हाथ समुन्दर के ऊपर बढ़ाया और
परमेश्वर ने रात भर तेज हवा चलायी। इस
कारणवश समुद्र को दो हिस्सों में करके
पानी इस तरह से हटा दिया कि बीच में
सूखी ज़मीन सी हो गई। 22 इस्राएली समुद्र
के बीच भूमि पर चलते गए और पानी उनके
दाहिने और बाईं ओर एक दीवार का काम
कर रहा था। 23 तब मिस्री अर्थात् फ़िरौन
के सभी घोड़े, रथ और सवार उनका पीछा
करते हुए समुद्र के बीच में चले गए। 24 रात
के अन्तिम पहर में परमेश्वर ने बादल और
आग के खम्भे में से मिस्रियों की फ़ौज पर
दृष्टि करके उन्हें घबरा दिया। 25 उसने उनके
रथों के पहियों को निकाल डाला, जिस से
उनको चलाना कष्टदायक हो गया। तब
मिस्री एक दूसरे से कहने लगे, "आओ,
हम इस्राएलियों के सामने से भाग जाएँ,
क्योंकि परमेश्वर उनकी ओर से मिस्रियों के
विरुद्ध युद्ध कर रहे हैं।" 26 फिर मूसा से
परमेश्वर ने कहा, "तुम अपना हाथ फिर
से समुद्र के ऊपर बढ़ाओ, ताकि पानी
मिस्रियों, उनके रथों और सवारों पर फिर
बहने लगे।" 27 जैसे ही मूसा ने वैसा किया,
सुबह होते-होते समुद्र ज्यों का त्यों हो गया।
मिस्री उल्टे पैर भाग उठे, लेकिन परमेश्वर ने
उनको समुद्र ही में नाश कर डाला। 28 पानी
के उल्टे पलटने से समुद्र के बीच के सभी
फ़िरौन की सेना के लोग जो इस्राएलियों का
पीछा कर रहे थे सब के साथ वहीं डूब मरे।
29 लेकिन इस्राएली समुद्र के मध्य सूखी
ज़मीन पर चलते गए और उनके दोनों तरफ़
पानी दीवार की तरह खड़ा रहा। 30 इस
तरह परमेश्वर ने उस दिन इस्राएलियों को
मिस्रियों के शिकंजे से छुड़ाया। इस्राएलियों
ने मिस्रियों को समुद्र के किनारे पर भरे पड़े
हुए देखा। 31 परमेश्वर ने मिस्रियों पर जो
शक्ति दिखाई थी, उसे देख कर इस्राएलियों
के मन में परमेश्वर का डर समा गया और
परमेश्वर तथा मूसा पर भी विश्वास किया।

15 तब मूसा और इस्राएलियों ने
परमेश्वर के लिए यह गाना गाया। वे
बोले, "मैं परमेश्वर का गीत गाऊँगा, क्योंकि
वह महाशक्तिशाली ठहरे हैं, उन्होंने घोड़ों
समेत सवारों को समुद्र में डुबो दिया है।
2 परमेश्वर मेरे बल और भजन का विषय हैं,

वही मेरे उद्धार भी ठहरे हैं, मेरे परमेश्वर वही
हैं, मैं उन्हीं की स्तुति करूँगा,[a], वही मेरे
पूर्वजों के परमेश्वर हैं, मैं उन्हीं की सराहना
करूँगा। 3 परमेश्वर सैनिक हैं, उनका नाम
परमेश्वर है। 4 उन्होंने फ़िरौन के रथों और पूरी
फ़ौज को समुद्र में फ़ेक दिया। उसके बढ़िया
से बढ़िया रथ लाल समुद्र में डूब गए। 5 गहरे
पानी से वे ढप गए। पत्थर की तरह वे गहरे
में डूब गए। 6 हे परमेश्वर, आपका दाहिना
हाथ शक्ति में महाप्रतापी हुआ, हे परमेश्वर,
आपका दाहिना हाथ दुश्मन को चूर-चूर कर
डालता है। 7 आप अपने दुश्मनों को अपने
महाप्रताप से गिरा देते हैं। आपके गुस्से के
भड़कने से वे भूसे की तरह भस्म हो जाते
हैं। 8 आपके नथनों की सांस से पानी इकट्ठा
हो गया, धाराएँ ढेर की तरह थम गई, समुद्र
के बीच में गहरा जल जम गया। 9 दुश्मन ने
कहा था, मैं पीछा करूँगा, मैं जा पकडूँगा,
मैं लूट के सामान को बाँट लूँगा, उन वस्तुओं
से मैं तृप्त हो जाऊँगा। अपनी तलवार खींचते
ही अपने हाथ से उन्हें बर्बाद कर डालूँगा।
10 आपने अपने सांस की हवा चलाई, तब
समुद्र ने उनको ढाँप लिया, वे इस इतनी बड़ी
मात्रा के पानी में सीसे की तरह डूब गए।
11 हे परमेश्वर, देवताओं में आपकी तरह कौन
है? आप तो पवित्रता के कारण महाप्रतापी
और अपनी स्तुति करने वालों के डर योग्य
और आश्चर्य के कामों को करने वाले हैं।
12 आपने अपना दाहिना हाथ बढ़ाया और
पृथ्वी ने उन्हें निगल लिया है। 13 आपने
अपनी करुणा से अपनी छुड़ाई हुई प्रजा की
अगुवाई की है, अपनी ताकत से आप उसे
अपने पवित्रस्थान को ले चले हैं। 14 देश-देश
के लोग सुन कर काँप उठेंगे, पलिश्तियों
के प्राणों के लाले पड़ जाएँगे। 15 एदोम के
गवर्नर घबरा जाएँगे, सभी कनान निवासियों
के मन पिघल जाएँगे। 16 उनके भीतर डर
और घबराहट समा जाएगी, आपकी बाँह के
प्रताप से वे पत्थर की तरह अबोल हो जाएँगे,
जब तक, हे परमेश्वर, आपकी प्रजा के लोग
निकल न जाएँ, जब तक आपके मोल लिए
हुए पार न हो जाएँ। 17 आप उन्हें पहुँचा कर
अपने निज भाग वाले पहाड़ पर बसाएँगे, यह
वही जगह है, हे परमेश्वर जिसे आपने अपने
रहने के लिए बनाया और वही पवित्रस्थान है
जिसे हे परमेश्वर आपने खुद ही स्थिर किया
है। 18 परमेश्वर सदा सर्वदा राज्य करते रहेंगे।
19 इसलिए कि फ़िरौन के घोड़ों, रथों और
सवारों सभी को जो समुद्र के बीच में थे,
परमेश्वर ने पानी को पलटा कर डुबो कर
मार डाला, लेकिन इस्राएली समुद्र के बीच
मानो सूखी ज़मीन पर से गुज़र गए। 20 तब
हारून की बहन और नबिया मरियम ने हाथ
में डफ़ लेकर सभी महिलाओं की अगुवाई
की जो डफ़ लेकर नाच रहीं थी। 21 मरियम
उनके साथ यह गाती गई, “परमेश्वर का गीत
गाओ, क्योंकि वह महाप्रतापी हैं, घोड़ों समेत
सवारों को उन्होंने समुद्र में फेंक दिया है।”
22 इसके बाद मूसा इस्राएलियों को लाल
समुद्र से आगे ले गया। जब वे शूर नामक
जंगल पहुँचे, तो तीन दिन तक पानी का
कोई सोता न मिला 23 एक जगह उन्हें पानी
मिला भी, लेकिन वह खारा था और उसे न
पी सके, इसलिए उस स्थान का नाम मारा
हो गया। 24 लोग कुड़कुड़ाते हुए मूसा से
पूछने लगे कि वे क्या पीएँ। 25 जब मूसा
परमेश्वर के सामने गिड़गिड़ाया, तो उसे एक
पौधा दिखाया गया, जिस को पानी में डालने
से खारा पानी मीठा हो गया। उसी जगह
परमेश्वर ने उनके लिए एक विधि और नियम

[a] **15.2** मैं उनके लिए रहने का स्थान बनाऊँगा

बनाने के साथ परीक्षा की, 26 "यदि तुम
अपने प्रभु परमेश्वर का वचन[a] तन मन से
सुनो और उनके अनुसार जो सही है वही
करो, उनकी आज्ञाओं पर कान लगाने के
साथ सभी विधियों[b] को मानो, तो जितनी
बीमारियाँ मैंने मिस्रियों पर भेजी है, उन में से
एक भी तुम पर न भेजूँगा, क्योंकि मैं तुम्हारी
बीमारियों को ठीक करने वाला परमेश्वर हूँ।"
27 एलीम नामक जगह पर आने पर उन्हें
बारह सोते और सत्तर खजूर के पेड़ मिले।
इसलिए उन्होंने वहीं अपने-अपने तम्बू गाड़
दिए।

16 फिर एलीम से निकल कर इस्राएली
मिस्र देश से निकलने के बाद दूसरे
महीने के पंद्रहवे दिन को सीन नामक जंगल
में जो एलीम और सीनै पहाड़ के बीच में
है, आ पहुँचे। 2 जंगल में इस्राएली मूसा और
हारून के विरोध में बड़बड़ा कर कहने लगे,
3 "जब हम मिस्र देश में मांस के बर्तनों के
पास बैठ कर मन चाहा खाना खाते थे, तब
यदि परमेश्वर के हाथ से हमें मार डाला जाता
तो वही अच्छा था। लेकिन तुम हम सभी
को यहाँ भूखा मारने ले आए हो।" 4 तब
परमेश्वर ने मूसा से कहा, "देखो, मैं तुम्हारे
लिए आकाश से खाने की चीज़ बरसाऊँगा।
इन्हें बाहर जाकर हर दिन का ही खाना
इकट्ठा करना होगा। इसी से मैं उन्हें जाँचूंगा
कि वे मेरी आज्ञाओं-नियमों को मानेंगे या
नहीं। 5 हर छठवें दिन उन्हें दुगना खाना
मिलेगा जिसे उन्हें बटोरकर तैयार रखना
होगा।" 6 तब मूसा और हारून इस्राएलियों
से बोले कि शाम को वे जान जाएँगे कि मिस्र
के बाहर उन्हें निकाल लाने वाले परमेश्वर
ही हैं। 7 सुबह-सवेरे उन्हें परमेश्वर का तेज
दिखाई देगा, क्योंकि उनके बुड़बुड़ाने को
परमेश्वर ने सुना है उन दोनों पर बुड़बुड़ाना
बिल्कुल बेकार है। 8 फिर मूसा ने कहा,
"यह तभी होगा जब परमेश्वर शाम को तुम्हें
खाने के लिए मांस और प्रातःकाल मन चाही
रोटी देंगे। उनके विरोध में कुड़कुड़ाने को
वह सुनते है, हम क्या हैं? वास्तव में तुम
उनके विरोध में यह बुराई कर रहे हो।"
9 मूसा ने हारून से बोला, "इस्राएलियों को
आज्ञा दो कि वे सभी परमेश्वर के सामने
पेश हों, क्योंकि वह बुड़बुड़ाना सुन चुके
हैं।" 10 हारून जब यह इस्राएलियों से कह
ही रहा था, कि जंगल की ओर परमेश्वर का
तेज बादल में दिखा। 11 तब परमेश्वर ने मूसा
से कहा, 12 "इस्राएलियों का बुड़बुड़ाना मैंने
सुना है, उन से कहो कि गोधूलि के समय
तुम मांस खाओगे और सुबह-सवेरे रोटी से
तृप्त हो जाओगे। हाँ तुम यह भी जान जाओगे
कि मैं तुम्हारा प्रभु परमेश्वर हूँ। 13 शाम के
समय बटेरें आकर पूरी छावनी पर बैठ गईं
और सुबह छावनी के चारों ओर ओस गिरी।
14 ओस सूख जाने के बाद ज़मीन पर पाले के
किनकों के समान छोटे-छोटे छिलके दिखाई
दिए। 15 यह देखते ही इस्राएली बौखला उठे
और कहा यह तो मन्ना है। तब मूसा का
जवाब यह था कि यह खाने की वस्तु है और
परमेश्वर ने दी है। 16 परमेश्वर की आज्ञा यह
है कि तुम अपनी ज़रूरत के अनुसार खाने
के लिए इकट्ठा किया करना। अपने घर के
सदस्यों के अनुसार हर व्यक्ति के लिए एक
ओमेर बटोरना। जिस के तम्बू में जितने हो
वह उन्हीं के लिए बटोरे।" 17 और किसी
ने ज़्यादा किसी ने कम उठाया। 18 ओमेर
से नापने पर जिस के पास अधिक था,
उसके पास अधिक न रहा, जिस के पास

[a] **15.26** शिक्षा [b] **15.26** आज्ञाओं

कम था, उसे कुछ कमी भी नहीं हुई। ऐसा
इसलिए क्योंकि हर एक इन्सान ने अपने
खाने लायक ही बटोरा था। 19 इसके बाद
मूसा ने उन्हें सवेरे तक रखने के लिए मना
किया। 20 लेकिन ऐसे लोग भी थे, जिन्होंने
मूसा की बात की परवाह नहीं की। जितने
लोगों ने आवश्यकता से अधिक इकट्ठा
किया, उसमें कीड़े पड़ गए और बदबू आने
लगी। इसलिए मूसा को गुस्सा भी आया।
21 वे सुबह-सवेरे हर दिन अपनी ज़रूरत के
अनुसार खाने के लिए बटोर लेते थे। धूप
कड़ी होने पर वह गल जाता था। 22 छठवें
दिन लोगों ने दोगुना[a] बटोरा। यह बात उनके
प्रधानों ने आकर मूसा को बता दी। 23 मूसा
बोला, "हाँ परमेश्वर ही की यह आज्ञा है,
क्योंकि कल पवित्र विश्राम होगा। 24 मूसा के
कहने के अनुसार जब लोगों ने दोगुना बटोरा,
तो न उसमें बदबू आई और न कीड़े पड़े।
25 तब मूसा बोला, "आज उसी को खाओ,
क्योंकि आज विश्राम दिन हैं; इसलिए तुम
को मैदान में नहीं मिलेगा। 26 छः दिन तुम
उसे बटोरोगे, लेकिन सातवाँ दिन आराम
का है, उस दिन वह नहीं मिलेगा।" 27 इसके
बावजूद कुछ लोग सातवें दिन भी बटोरने के
लिए घर से बाहर गए, लेकिन उन्हें कुछ भी न
मिला। 28 तब परमेश्वर ने मूसा से कहा, "कब
तक तुम लोग मेरी आज्ञाओं और व्यवस्था
को नहीं मानोगे?" 29 देखो, परमेश्वर ने तुम्हें
सातवाँ दिन आराम के लिए दिया है, इसी
कारण छठवें दिन तुम्हें दो दिन का खाना
मिलता है। इसलिए तुम सभी सातवें दिन
घर ही में रहना, बाहर मत जाना।" 30 लोगों
ने ऐसा किया भी। 31 इस्राएलियों ने उसे दी
जाने वाली वस्तु का नाम मन्ना रखा। वह
धनिया की तरह सफ़ेद था। उस का स्वाद
शहद के बने हुए पूए का सा था। 32 फिर
मूसा बोला, "परमेश्वर का आदेश यह है कि
ओमेर[b] रख लो, जिस से अपने वंश की
पीढ़ी-पीढ़ी को बता सको। तब वे जानेंगे,
कि मिस्र से निकाल कर जंगल में परमेश्वर
कैसी रोटी खिलाते थे।" 33 तब मूसा ने हारून
से बोला, "एक बर्तन लो और उस में ओमेर
भर लेकर उसे परमेश्वर के सामने रख दो
ताकि वह तुम्हारी पीढ़ियों के लिए रखा रहे।"
34 परमेश्वर के आदेश के मुताबिक हारून ने
गवाही के सन्दूक के सामने रख दिया, ताकि
वहीं रहे। 35 जब तक इस्राएली प्रतिज्ञा किए
गए देश में न पहुँचे, तब तक[c] तक मन्ना
खाते रहे। कनान देश की सीमा तक पहुँचने
तक उन्हें खाने के लिए मन्ना ही मिलता था।
36 एक ओमेर एपा का दसवाँ भाग है।

17 फिर परमेश्वर की आज्ञा के अनुकूल
सीन नामक जंगल से निकलकर,
रपीदीम पहुँचकर इन लोगों ने अपने तम्बू
गाड़ दिए। वहाँ पीने का पानी नहीं था।
2 इसलिए वे मूसा से बहसबाज़ी कर कहने
लगे, "हमें पानी चाहिए।" मूसा बोल उठा,
"तुम मुझ से झगड़ा करके परमेश्वर को क्यों
जाँच रहे हो?" 3 प्यास लगने पर वे मूसा पर
बुड़बुड़ा कर कहने लगे, "हमारे बाल-बच्चों
और जानवरों समेत, हमें मार डालने के
लिए तुम मिस्र से क्यों ले आए हो?" 4 मूसा
परमेश्वर के सामने दोहाई देकर कहने लगा,
"इनके साथ मैं करूँ क्या? ये मुझ पर पत्थर
फेंकने को तैयार हैं।" 5 परमेश्वर ने मूसा से
कहा, "इस्राएल के कुछ बूढ़े लोगों में से
कुछ को अपने साथ ले लो। जिस लाठी को
तुमने नील नदी पर मारा था, उसे अपने हाथ
में लेकर लोगों के आगे चलते जाओ। 6 मैं

[a] **16.22** एक व्यक्ति के लिए दो हिस्से [b] **16.32** एक नाप [c] **16.35** चालीस साल

तुम्हारे आगे चल कर होरेब पहाड़ की एक
चट्टान पर खड़ा हो जाऊँगा। उस चट्टान पर
तुम मारना। उसमें से जो पानी निकले, उसी
से ये लोग अपनी प्यास बुझाएँ। मूसा ने ठीक
वैसा ही किया। 7 उस जगह का नाम मूसा ने
मस्सा मरीबा रख दिया, क्योंकि इस्राएलियों
ने वहाँ वाद-विवाद किया था। "क्या परमेश्वर
हमारे बीच हैं या नहीं?" यह कह कर परमेश्वर
को वे वहाँ परख रहे थे। 8 तभी रपीदीम में
अमालेकी आए और इस्राएलियों से लड़ने
लगे। 9 तब मूसा ने यहोशू को कई पुरुषों को
चुनने-छाँटने के लिए कहा। यह भी कि वे सब
अमालेकियों से लड़े। मूसा बोला, "परमेश्वर
की लाठी हाथ में लिए हुए मैं पहाड़ी की चोटी
पर खड़ा रहूँगा।" 10 मूसा के इस आदेश
को यहोशू ने माना और अमालेकियों से युद्ध
करने लगा। मूसा और हारून हूर पहाड़ी पर
बने रहे। 11 मूसा का हाथ जब तक उठा
रहता था, तब तक इस्राएल जीत जाता था,
लेकिन जब वह उसे नीचे करता था, तो
जीत अमालेकियों की होती थी। 12 मूसा के
थक जाने पर उन्होंने एक पत्थर रखा, जिस
पर मूसा बैठ गया। दोनों बाजू पर हारून
और हूर उसके हाथों को सूरज ढलने तक
सहारा देते रहे। 13 और यहोशू ने अनुचरों
समेत अमालेकियों को तलवार की ताकत से
हरा दिया। 14 तब परमेश्वर ने मूसा से कहा,
"यह बात सदा याद रहे, इसलिए लिख लो
और यहोशू को बताओ कि आकाश के नीचे
से मैं अमालेक का नामो-निशां मिटा डालूँगा।
15 तब मूसा ने एक वेदी बनाई और उस का
नाम 'परमेश्वर-निस्सी' रखा। 16 उसने कहा,
"परमेश्वर ने प्रण कर लिया है कि वह पीढ़ियों
तक लड़ाई करते रहेंगे।"

18 मिद्यान के याजक और मूसा के
ससुर यित्रो को मालूम पड़ा कि
परमेश्वर ने मूसा और अपनी प्रजा इस्राएल
के लिए क्या-क्या किया है[a]। 2 वह अपनी
बेटी और मूसा की पत्नी सिप्पोरा को, जिसे
पहले नैहर भेज दिया गया था और दोनों
बेटों को ले आया। 3 यह कह कर कि मैं
अनजाने देश में यात्री हुआ हूँ, मूसा ने एक बेटे
का नाम गेर्शोन रखा। 4 दूसरे का नाम उसने
एलीएज़ेर यह कह कर रखा, "मेरे पिता के
परमेश्वर ने फ़िरौन की तलवार से बचा-कर
मेरी मदद की।" 5 मूसा का ससुर यित्रो, मूसा
की पत्नी और उसके बच्चों के साथ जंगल
में उस स्थान तक पहुँचा, जहाँ परमेश्वर के
पहाड़ के पास उस का डेरा था। 6 आते ही
उसने मूसा को समाचार भेजा कि वह मूसा
की पत्नी और बच्चों को उसके पास लाया
है। 7 तब मूसा भी उस से मिलने निकला और
दण्डवत् किया, आलिंगन किया। आपस में
एक दूसरे का हाल-चाल पूछते हुए वे डेरे
तक आ आए। 8 वहाँ मूसा ने उन सभी बातों
का बखान किया जो परमेश्वर ने, इस्राएलियों
के पक्ष में, फ़िरौन और मिस्रियों के विरोध
में किया। यह भी कि रास्ते में इस्राएलियों
ने क्या-क्या दुख झेले और परमेश्वर किस
तरह उन्हें छुड़ाते रहे। 9 इस्राएलियों के साथ
की गई भलाईयों और मिस्रियों की गुलामी
से छुड़ाने के समाचार को सुन यित्रो खुश
होकर कहने लगा, 10 परमेश्वर की बड़ाई
हो जिन्होंने तुम्हें फ़िरौन और मिस्रियों की
गुलामी से मुक्ति दी है। 11 मैंने अब जान
लिया है कि परमेश्वर सभी देवताओं से बढ़
कर हैं। 12 इसके बाद मूसा के ससुर यित्रो
ने परमेश्वर के लिए होमबलि और मेलबलि

[a] **18.1** यह कि इस्राएलियों को मिस्र की गुलामी से छुड़ाया है

चढ़ाए। इस्राएलियों के सभी बुज़ुर्गों के साथ
हारून, मूसा के ससुर यित्रो के संग परमेश्वर
के सामने खाना खाने आया। 13 अगले दिन
लोगों के झगड़े निपटाने[a], मूसा सुबह से शाम
तक व्यस्त रहा। लोग उसके आस-पास दिन
भर खड़े रहे। 14 यह सब देख कर यित्रो ने
मूसा से कहा कि इस तरह उस का अकेले
ही न्याय करना और लोगों का दिन भर खड़े
रहना अच्छा नहीं है। 15 मूसा बोला, “लोग
पूछ-ताछ करने मेरे पास आते हैं, मैं करूँ
क्या? 16 अपने मुकदमें को सुलझाने वे मेरे
पास आते हैं और मैं परमेश्वर की विधि और
व्यवस्था समझा कर उनका न्याय करता
हूँ।” 17 यित्रो तुरन्त बोल उठा, “जो कुछ तुम
कर रहे हो, वह उचित नहीं है। 18 यह काम
तुम्हारे अकेले के लिए बहुत मुश्किल है। तुम
और तुम्हारे लोग ज़रूर थक जाएँगे।” 19 मैं
तुम्हें सलाह देता हूँ, मेरी सुनो परमेश्वर तुम्हारे
संग है। तुम इन लोगों के लिए परमेश्वर के
पास जाकर इन के मुकदमों को पेश किया
करो। 20 विधि[b] इन्हें समझा कर सिखाओ
कि इन्हें किस रास्ते पर चलना है, क्या करना
है। 21 साथ ही इन में से ऐसे लोगों को चुन
लो जो गुणी, परमेश्वर का भय मानने वाले,
सच्चे और अन्याय के लाभ से नफ़रत करने
वाले हो फिर इन्हें भी हज़ार-हज़ार, सौ-सौ,
पचास-पचास और दस-दस लोगों पर प्रधान
नियुक्त कर दो। 22 ये ही लोग इन का न्याय
करे, बड़े मुकदमों को तुम्हारे पास लाएँ और
मामूली मसलों[c] को खुद ही निपटा दिया करें।
तब तुम्हारा बोझ हल्का हो जाएगा, क्योंकि
वे तुम्हारा भार बाँट लेंगे। 23 यदि तुम ऐसा
करो और परमेश्वर तुम्हें ऐसी आज्ञा दे, तो
तुम ठहर सकोगे और ये सभी लोग अपने
स्थान कुशल से पहुँच जाएँगे। 24 मूसा ने
अपने ससुर की यह बात मानी और वैसा ही
किया। 25 इसलिए उसने चरित्रवान लोगों को
चुन कर हज़ार-हज़ार, सौ-सौ, पचास-पचास,
दस-दस लोगों के ऊपर प्रधान ठहराया। 26 वे
लोग सब का न्याय करने लगे। जो मुकदमा
कठिन हुआ करता था, उसे वे मूसा के पास
लाया करते थे। छोटे मुकदमों को वे स्वयं
देख लिया करते थे। 27 तब मूसा ने यित्रो को
विदा किया और वह अपने देश की ओर चल
दिया।

19 जिस दिन इस्राएलियों को मिस्र
से निकले हुए तीन महिने बीते,
उसी दिन वे सीनै नामक जंगल में आए।
2 रपीदीम से निकल कर वही सीनै जंगल
में ही उन्होंने अपने डेरे लगाए और पहाड़
के सामने छावनी डाली। 3 मूसा पहाड़ पर
चढ़ गया जहाँ उसने परमेश्वर की आवाज़
सुनी, “याकूब के घराने यानि कि इस्राएलियों
से यह कहो, 4 मिस्रियों के साथ मैंने क्या
किया, यह तुमने देख लिया है। मैं तुम्हें मानो
उकाब पक्षी के पंखों पर बैठा कर लाया
हूँ। 5 इसलिए यदि तुम मेरी मानोगे और मेरी
वाचा का पालन करोगे, तो सभी लोगों में से
तुम ही मेरी दौलत होगे। सारी पृथ्वी मेरी है।
6 मेरी दृष्टि में तुम पुरोहितों[d] का राज्य और
अलग किए हुए राष्ट्र[e] ठहरोगे। यह सब तुम
इस्राएलियों से कहो।” 7 मूसा ने नीचे उतरने
के बाद बुज़ुर्गों[f] को बुलाकर यह सब कह
डाला। 8 सभी मिल कर बोले, “हम वह सब
करेंगे जो परमेश्वर चाहते हैं।” मूसा ने यह
समाचार परमेश्वर को दे दिया। 9 तब परमेश्वर
ने मूसा से कहा, “सुनो, मैं बादल के अँधेरे

[a] **18.13** न्याय करने [b] **18.20** कानून व्यवस्था [c] **18.22** विवादों [d] **19.6** याजकों [e] **19.6** जाति
[f] **19.7** पुरनियों

में होकर तुम्हारे पास आता हूँ, इसलिए कि
जब मैं तुम्हारे साथ बातचीत करूँ, तब वे भी
सुनें और हमेशा तुम पर विश्वास करें।" और
मूसा ने परमेश्वर से लोगों की बातों का वर्णन
किया। 10 तब परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा
दी, "तुम उनके पास जाकर उन्हें शुद्ध करो
और वे अपने कपड़े धो लें। 11 तीसरे दिन
तक के देखते सीनै पहाड़ पर उतर आएँगे।
12 लोगों के लिए तुम चारों और एक बाड़ा
बांध कर उन से कहना "सावधान, कोई न
तो पहाड़ पर चढ़े, न उसकी सीमा को छुए,
जिस ने पहाड़ को छुआ, वह मार डाला जाए।
13 कोई उसको छुए तक नहीं और जो छुए,
उस पर पत्थरवाह किया जाए या तीर से
मारा जाए चाहे वह इन्सान हो या जानवर।
किसी तरह से वह ज़िन्दा न बचे। नरसिंगे
की ऊँची आवाज़ देर तक सुनाई दिए जाने पर
लोग पहाड़ के पास आ जाएँ।" 14 तब मूसा
पहाड़ से उतरा और लोगों के पास आकर
उन्हें पवित्र कराया, लोगों ने अपने कपड़े
धो लिए। 15 लोगों से उसने कहा, "तीसरे
दिन तक तैयार हो जाओ, पत्नी के पास न
जाना।" 16 तीसरे दिन के आने पर सुबह होते
ही बादल गरजा और बिजली चमकी और
पहाड़ पर काली घटा छा गई और नरसिंगे
की जोरदार आवाज़ आई। छावनी के सभी
लोग काँप उठे। 17 लोगों की भेंट परमेश्वर से
करवाने के लिए मूसा, छावनी से निकाल
ले गया। वे सभी पहाड़ के नीचे खड़े थे।
18 परमेश्वर आग में होकर सीनै पहाड़ पर
उतरे थे इसलिए पूरा पहाड़ धुएँ से भर गया।
उस का धुआँ भट्टे का सा था और पूरा पहाड़
बहुत काँप रहा था। 19 नरसिंगे की आवाज़
ज़ोरदार और भारी होने के बाद मूसा बोला
और परमेश्वर ने उसको जवाब दिया। 20 सीनै
पहाड़ की चोटी पर परमेश्वर उतरे और मूसा
को चोटी पर बुलाया और मूसा ऊपर चढ़
गया। 21 तब परमेश्वर ने मूसा से कहा, "नीचे
जाओ और लोगों को चेतावनी दो, कही ऐसा
न हो कि वे बाड़ा तोड़ के देखने के लिए
पास आएँ और नष्ट हो जाएँ। 22 परमेश्वर के
पास आने वाले पुरोहित भी अपने आपको
पवित्र करें, कहीं ऐसा न हो कि परमेश्वर उन
लोगों को मारें।" 23 मूसा ने उत्तर दिया, "कि
लोग सीनै पहाड़ पर चढ़ नहीं पाएँगे, क्योंकि
आपने हमें बाड़ा बाँधकर पवित्र रखने के
लिए चेतावनी दे रखी है। 24 उतर जाओ
और हारून के साथ ऊपर आओ। पुरोहित
और जन साधारण बाड़ा तोड़ कर चढ़ न
पाएँ, क्योंकि ऐसा होने पर परमेश्वर का क्रोध
भड़क सकता है। 25 यह सब कुछ मूसा ने
लोगों को बता दिया।

20 तब परमेश्वर ने ये सब वचन कहें,
2 मैं तुम्हारा प्रभु परमेश्वर हूँ जो तुम्हें
गुलामी के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल
लाया हूँ। 3 मुझे छोड़ किसी दूसरे को परमेश्वर
करके न मानना। 4 तुम अपने लिए खोद कर
कोई मूर्ति न बनाना, न किसी की प्रतिमा
बनाना, जो आकाश में या पृथ्वी पर, या
पृथ्वी के जल में है। 5 तुम उनके सामने घुटने
मत टेकना, न उनकी पूजा करना, क्योंकि
मैं तुम्हारा प्रभु परमेश्वर जलन रखने वाले
परमेश्वर हूँ। जो मुझ से दुश्मनी रखते हैं,
उनके बेटों, पोतों, परपोतों और पितरों को
भी दण्ड देता हूँ। 6 जो मुझ से प्रेम रखते और
मेरी बातों को मानते है, उन हज़ारों पर तरस
किया करता हूँ। 7 "तुम अपने परमेश्वर का
नाम बेकार में मत लेना, क्योंकि जो परमेश्वर
का नाम बेकार ले वह उसको निर्दोष न

ठहरें। 8 तुम विश्राम दिन को पवित्र[a] मानने
के लिए याद रखना। 9 छै दिन तुम मेहनत
करके सारा काम करना। 10 सातवाँ दिन
तुम्हारे प्रभु परमेश्वर के लिए विश्राम दिन है।
उसमें न तो किसी तरह का काम करना,
न तुम्हारा बेटा, बेटी, दास, दासी, तुम्हारे
पशु, न कोई परदेशी जो तुम्हारे फ़ाटकों के
अन्दर हो। 11 क्योंकि छ: दिन में परमेश्वर ने
आकाश, पृथ्वी, समुद्र और जो कुछ उसमें
है, वह सब बनाया। सातवें दिन कुछ न
बनाया। इस कारण परमेश्वर ने सातवें दिन को
दूसरे सभी दिनों से अलग ठहराया। 12 "तुम
अपने पिताजी और अपनी माँ जी का आदर
करना, जिस से जो देश तुम्हारे प्रभु परमेश्वर
तुम्हें देते हैं, उसमें तुम बहुत दिन तक रहने
पाओ। 13 तुम किसी की जान मत लेना।
14 व्यभिचार न करना। 15 चोरी न करना।
16 किसी के खिलाफ़ झूठी गवाही मत देना।
17 किसी के घर, पत्नी, दास-दासी[b], मवेशी
या किसी की कोई चीज का लालच मत
करना। 18 सभी लोग गर्जन, बिजली और
नरसिंगे की आवाज़ सुनते, धुआँ उठते पहाड़
को देखते, काँपते हुए दूर खड़े रहे। 19 वे मूसा
से कहने लगे, "तुम ही हम से बातें करो, तभी
हम सुन पाएँगे। परमेश्वर हम से न बोलें, ऐसा
न हो कि हम मर जाएँ। 20 मूसा ने लोगों से
कहा, "मत डरो, क्योंकि परमेश्वर इसलिए
आए हैं कि तुम्हें जाँचे और उनका डर तुम्हारे
मन में बना रहे कि तुम अपराध न करो।"
21 वे लोग दूर ही खड़े रहे, लेकिन मूसा और
भयानक अँधेरे के पास गया, जहाँ परमेश्वर
थे। 22 तब परमेश्वर ने मूसा से कहा, "तुम
इस्राएलियों को मेरे ये वचन सुनाओ, खुद
तुम लोगों ने देखा है कि मैंने आकाश[c] से
तुम से बातें की हैं। 23 किसी और को जैसे
सोने या चाँदी के देवताओं को मेरे साथ मिला
मत लेना। 24 मिट्टी की एक वेदी बना कर
अपनी भेड़-बकरियाँ, गाय-बैलों के होमबलि
और मेलबलि को उस पर चढ़ाना जहाँ-जहाँ
मैं अपने नाम की याद कराऊँ, वहाँ-वहाँ मैं
आकर तुम्हें आशीष दूँगा। 25 यदि तुम मेरे
लिए पत्थर की वेदी बनाना चाहो, तो वे
तराशे हुए नहीं होने चाहिए। इसलिए कि
हथियार का इस्तेमाल करने से वह अशुद्ध
हो जाएगी। 26 वेदी पर चढ़ते समय सीढ़ी का
उपयोग कभी मत करना, कहीं ऐसा न हो कि
तुम्हारी देह उस पर नंगी दिखे।

21 नियम, जिन्हें समझाया जाना ज़रूरी
हैं ये हैं, 2 किसी भी इब्री दास को
यदि खरीदा जाए तो वह छ: साल तक सेवा
करता रहे और सातवें साल आज़ाद होकर
यों ही चला जाए। 3 यदि वह अकेला आया
था, तो कोई बात नहीं, लेकिन यदि उसके
साथ उसकी पत्नी भी थी, तो उसकी पत्नी
भी उसके साथ जाए। 4 यदि उसके मालिक
ने उसे पत्नी दी हो और उस से सन्तान हो,
तो पत्नी और बच्चे स्वामी के ही रहें और
वह अकेला चला जाए। 5 लेकिन यदि वह
दास ज़ोर डाल कर कहे, "मैं अपने मालिक,
पत्नी और बच्चों से प्रेम करता हूँ इसलिए
मैं आज़ाद होकर जाना नहीं चाहता। 6 तब
उस का मालिक उसे न्यायियों को उपस्थित
जान कर दरवाज़े के बाजू के पास ले जाकर
उसके कान में सुतारी से छेद करे और तब से
वह सदा स्वामी की सेवा करता रहे। 7 "यदि
कोई अपनी बेटी को दासी होने के लिए बेच
दे, तो वह दासी की तरह बाहर न जाए।
8 यदि उस का स्वामी उसको अपनी पत्नी
बनाए और उसमें खुश न रहे, तो वह उसे

[a] **20.8** अलग [b] **20.17** नौकरों [c] **20.22** आकाश

मूल्य से छुड़ाई जाने दे। उस का विश्वासघात
करने के बाद उसे विदेशी लोगों के हाथ बेचने
का उसे अधिकार न होगा। 9 यदि उसने उस
का अपने बेटे से विवाह कर दिया हो, तो
उस से बेटी का सा बर्ताव करे। 10 चाहे वह
दूसरी पत्नी कर भी ले, तौभी वह उस का
खाना, कपड़े और संगति कम न करे। 11 यदि
वह ऐसा करता है तो वह महिला बिना दाम
चुकाए ही चली जाए। 12 "जो व्यक्ति किसी
को ऐसा मारे कि वह मर जाए तो उसे भी
मार दिया जाए। 13 यदि वह उस का खून
करने की ताक में न रहा हो और परमेश्वर
की इच्छा ही से वह उसके हाथ में पड़ गया
हो, तो ऐसे मारने वाले के भागने के लिए
मैं एक जगह निश्चित करूँगा, जहाँ वह भाग
जाए। 14 लेकिन ज़िद्द में आकर यदि कोई
किसी का चालाकी से खून करें, तो उसको
मार डालने के लिए मेरी वेदी के पास से भी
अलग ले जाना। 15 "जो अपने माता-पिता को
मारे-पीटे, उसे मृत्युदण्ड मिले। 16 मनुष्य को
चुराने और बेच देने वाले को मौत की सज़ा
मिले, चाहे चुराया व्यक्ति बरामद हो या न
हो। 17 जो इन्सान अपने पिता या माँ को श्राप
दे, उसे भी मौत की सज़ा दी जाए। 18 झगड़े में
पत्थर या मुक्के की मार से यदि कोई बिछौना
पकड़ ले। 19 तो लाठी के सहारे उसके चल
सकने पर मारने वाला सज़ा का भागीदार
न हो। उसके बिस्तर पर पड़े रहने तक के
समय के नुकसान की भरपाई वह करे और
उस का इलाज भी। 20 "किसी गुलाम[a] की
पिटाई करने से यदि वह मर जाए, तो मालिक
को सज़ा मिले। 21 लेकिन अगर वह दो दिन
तक ज़िन्दा रहता है, तो मालिक को सज़ा
न दी जाए, क्योंकि वह गुलाम ही उसकी
दौलत है। 22 यदि लोगों की आपसी मारपीट
में कोई गर्भवती के चोट लगने पर, उस का
गर्भ गिर जाए, लेकिन कोई और नुकसान
न हो तो मारने वाले से उतनी राशि दण्ड
स्वरूप ली जाए, जितना उस का पति, पंच
की सलाह से माँगे। 23 किन्तु यदि उसको
कुछ और हानि पहुँचे, तो प्राण(जीवन) के
बदले, प्राण(जीवन) 24 आँख के बदले आँख,
दाँत के बदले दाँत, हाथ के बदले हाथ, पाँव
के बदले पाँव; 25 दाग के बदले दाग, घाव
के बदले घाव और मार के बदले मार की
सज़ा हो। 26 जब कोई अपने दास या दासी
की आँख पर ऐसा मारे कि फूट जाए, तो वह
उसकी आँख के बदले उसे आज़ाद कर दे
और जाने दे। 27 यदि वह अपने दास या दासी
को ऐसा मारे कि उसके दाँत टूट जाएँ, तो
उसके बदले में उसे आज़ाद कर दिया जाए।
28 उदि कोइ बैल किसी आदमी या औरत
को एसा सीग मारे कि वह मर जाए, तो उस
बैल को पत्थरों से मारा जाए, और उसका
गोश्त न खाया जाए। 29 लेकिन यदि पहले से
उस बैल की आदत हो सींग मारने की और
उसके मालिक को बताए जाने के बावजैद,
उस बानध कर नहीं रखा, और वह किसी
की जान ले ले,, तो उसे पत्थरवाह किया
ही जाना चाहिये। 30 यदि उस पर छुड़ौती
ठहराई जाए, तो प्राण छुड़ाने के लिए जो
कुछ उस पर ठहराया जाए, उसे उतना ही
देना पड़ेगा। 31 यदि बैल ने किसी के बेटे या
बेटी को मारा है, तौभी इसी नियम का पालन
किया जाए। 32 यदि बैल ने किसी दास या
दासी को सींग मारा हो, तो बैल का मालिक
उस दास के मालिक को तीस शेकेल रूपा
दे, और उस बैल को पत्थरों से मारा जाए।
33 यदि कोई इन्सान एक गड्ढा खोदे और
उसे न ढाँपे और कोई बैल या गधा उसमें

[a] **21.20** दास या दासी

गिर जाए, 34 तो जिसका वह गड्ढा हो वह
भरपाई करे। 35 यदि कसी का बैल किसी
दूसरे के बैल को ऐसा मारे कि वह मर जाए,
तो वे दोनों मनुष्य जीवित बैल को बेचकर
उसकी कीमत आपस में आधी- आधी बाँटें
और शव को भी वैसा ही बाँटे। 36 यदि इस
बात का सबूत मिले कि उस बैल की पहले
से सींग माँरने की आदत थी, लेकिन उसके
मालिक ने उसे बान्ध कर नहीं रखा था, तो
वह बैल के बदले बैल भर दे, लेकिन शव
उसी का हो।

22 यदि कोई व्यक्ति बैल, भेड़ या
बकरी चुरा कर उसे मार डाले या
बेच दे, तो वह बैल के बदले पाँच बैल,
भेड़-बकरी के बदले चार भेड़-बकरी भर दे।
2 अगर सेंध लगाते समय एक चोर पकड़ा
जाता है, पिटाई होती है और वह मर जाता
है, तो उसके खून का दोष नहीं लगेगा। 3 हाँ
यदि दिन निकल चुका है, तो उसके खून
का दोष लगे। यह ज़रूरी है कि वह हानि
भरपाई कर दे। यदि उसके पास कुछ न हो,
तो वह चोरी के कारण बेच दिया जाए। 4 यदि
चुराया हुआ बैल या गदहा या भेड़ या बकरी
उसके पास मिले, तो वह उस का दोगुना भर
दे। 5 यदि कोई जन अपने जानवर से किसी
दूसरे का खेत या अंगूर का बगीचा चराए,
तो वह अपने खेत की या अपने बगीचे की
उत्तम से उत्तम उपज में से उसकी हानि भर दे।
6 यदि कोई आग जलाए और काँटों में लगने
के अलावा फूलों के ढेर या अनाज या खड़े
खेत में लग जाए, तो वह नुकसान की भरपाई
कर दे। 7 यदि कोई दूसरे के पास धन या
सामान की धरोहर धरे और वहाँ से चोरी हो
जाए, तो चोर के पकड़े जाने पर उसे दो गुना
भरना पड़े। 8 यदि चोर पकड़ा नहीं जाता है,
तो घर का स्वामी परमेश्वर के सम्मुख लाया
जाए ताकि यह पुष्ट हो जाए कि उसने अपने
भाई बंधु की दौलत पर हाथ लगाया है या
नहीं। 9 हर तरह के अपराध चाहे वह बैल,
गधों, भेड़, कपड़े या किसी और खोई वस्तु
के बारे में हैं, जिस के बारे में कोई और दावा
करता है, दोनों पक्ष न्यायी[a] के सामने आएँ।
जिस व्यक्ति को न्यायी दोषी ठहराता है, वह
दूसरे व्यक्ति को दोगुना दण्ड भर दे। 10 यदि
किसी के पास गदहा, बैल, भेड़-बकरी या
कोई और पशु रखने के लिए सौंपा गया हो
और मर जाने, चोट खाने या हाँके जाने को
किसी ने न देखा हो। 11 तो उन दोनों के बीच
यह प्रतिज्ञा[b] हो, "मैंने इसकी संपत्ति पर हाथ
नहीं लगाया।" तब संपत्ति का स्वामी इसे
सत्य मान ले और दूसरे को उसे कुछ भी
कर भर देना नहीं होगा। 12 यदि वह सचमुच
उसके यहाँ से चुराया गया हो, तो वह उसके
स्वामी को उसे भर दे। 13 यदि वह फाड़
डाला गया हो, तो सबूत लेकर आए ताकि
उसकी भरपाई हो। 14 यदि कोई दूसरे से पशु
माँग लाए और उसके स्वामी के संग न रहते
उसको चोट लगे या वह मर जाए तो वह हानि
ज़रूर भर दे। 15 यदि उस का मालिक साथ
में हो तो दूसरे को उसके नुकसान की भरपाई
नहीं करनी पड़ेगी और यदि वह किराए का
हो तो उसकी हानि उसके किराए में आ गई।
16 यदि कोई पुरुष किसी कन्या को जिस के
विवाह की बात न लगी हो, फुसलाए और
कुकर्म करे, तो वह उसकी कीमत[c] देकर
उस से विवाह कर ले। 17 लेकिन यदि उस
का पिता उसे देने से मना करे, तो कुकर्म
करने वाला कन्याओं के मोल की प्रथा के
अनुसार कीमत दे। 18 जादू-टोना करने वाला

[a] 22.9 जज [b] 22.11 कसम [c] 22.16 वधूमूल्य

को जीवित न रहने दिया जाए। 19 पशुगमन
करने वाले को जान से मार डाला जाए।
20 परमेश्वर को छोड़कर किसी ओर देवता के
लिए बलिदान चढ़ाने वाले को बर्बाद किया
जाए। 21 न ही परदेशी को सताना, न उस पर
अंधेर करना, क्योंकि एक समय था जब तुम
भी मिस्र में परदेशी थे। 22 विधवा या अनाथ
बच्चे को परेशान मत करना। 23 यदि तुम ऐसों
को पीड़ा दो और वे मुझे पुकारें, तो मैं
ज़रूर उनकी सुनूँगा। 24 तब मेरा क्रोध भड़क
उठेगा और मैं तुम्हें तलवार से मरवाऊँगा
और तुम्हारी पत्नियाँ विधवा और तुम्हारी
औलाद अनाथ हो जाएँगे। 25 मेरी प्रजा के
किसी गरीब व्यक्ति को यदि तुम उधार दो
तो महाजन की तरह उस से ब्याज मत लेना।
26 यदि तुम अपने भाई-बंधु के कपड़ों को
गिरवी[a] करके रख भी लो तो शाम होने
तक उसे लौटा देना। 27 क्योंकि वह उस का
एक ही ओढ़ना है। यदि उसके पास एक ही
ओढ़नी हो तो वह रात में ओढ़ेगा क्या? जब
वह मेरे सामने गिड़गिड़ाएगा, मैं उसकी सुन
लूँगा, क्योंकि मैं तरस खाने वाला हूँ। 28 न
ही परमेश्वर[b] को बुरा कहना, न ही अपने
ऊपर के अधिकारियों को। 29 अपने खेतों
की उपज और फलों के रस में से कुछ मुझे[c]
देने में देर न करना। अपने पहलौठों को मेरे
नाम से अलग करना। 30 अपनी गायों और
भेड़-बकरियों के पहलौठों को भी मेरे लिए
अलग करना। अपनी माँ के साथ बच्चा सात
दिन तक रहे, आठवें दिन तुम उसे मुझको दे
देना। 31 मेरी खातिर तुम पवित्र रहना मैदान
में फाड़े हुए पशु का गोश्त न खाना, उसे कुत्तों
को खिला देना।

23 झूठी बात मत फैलाना। अन्यायी
गवाह बन कर दुष्ट व्यक्ति का साथ
मत देना। 2 किसी भी बुराई को करने के
लिए बहुत से लोगों के पीछे न जाना और
न मुकदमें में न्याय बिगाड़ने के लिए साक्षी
देना। 3 किसी गरीब के मुकदमें में उसकी
भी तरफ़दारी न करना। 4 यदि तुम्हारे दुश्मन
का बैल या गदहा भटकता हुआ तुम्हें मिल
जाए, तो उसके यहाँ तक पहुँचा देना। 5 यदि
तुम अपने दुश्मन के गदहे को बोझ से दबा
देखो, तो चाहे तुम्हारे मालिक के लिए छुड़ाने
को तुम्हारा मन न भी चाहे, तौभी मालिक
का साथ देकर उसे आज़ाद करा लेना।
6 तुम्हारे बीच रहने वाले गरीबों के मुकदमें
की न्याय-प्रक्रिया में अड़ंगा न डालना। 7 झूठे
मुकदमें से बचे रहना और निरपराध तथा खरे
व्यक्ति का खून मत करना, क्योंकि मैं दुष्ट को
निर्दोष न ठहराऊँगा। 8 घूस न लेना क्योंकि
घूस देखने वालों को भी अंधा कर देती है
और भले लोगों की बातें[d] उलट देती है।
9 परदेशी पर अत्याचार[e] न करना, क्योंकि
तुम भी मिस्र देश में परदेशी थे और तुम
परदेशी के मन के सोच-विचार को समझ
सकते हो। 10 छः वर्ष अपनी ज़मीन में बोना
और उसकी उपज इकट्ठा करना। 11 लेकिन
सातवें साल में उसे यों ही पड़े रहने देना। ऐसा
करने पर तुम्हारे गरीब भाई-बंधु लोग उसमें
से खा सकेंगे। फिर भी जो कुछ बच जाए वह
बनैले जानवर खा सकें। ऐसा ही अंगूर और
जैतून के बगीचों के साथ करना। 12 छः दिन
अपना काम-काज करना और सातवें दिन
आराम। ऐसा करने से तुम्हारे बैल और गदहे
राहत पाएँगे और तुम्हारी दासियों के बच्चे

[a] **22.26** बंधक [b] **22.28** या जजों [c] **22.29** मेरे नाम से [d] **23.8** पक्ष [e] **23.9** अंधेर

और परदेशी भी। 13 जो कुछ मैंने तुम से कहा
है, उस पर ध्यान दो। तुम दूसरे देवताओं के
बारे में मुँह से चर्चा तक न करना। 14 हर साल
तीन बार मेरे लिए त्यौहार मानना। 15 अबीब
महीने के निश्चित समय पर अखमीरी रोटी
सात दिन खा कर अखमीरी रोटी का पर्व
मनाना। इसी महीने में तुम मिस्र की गुलामी
से छूटे थे। कोई खाली हाथ ऐसे समय में
मेरी उपस्थिति में न आए। 16 तुम्हारे बोये हुए
खेत की पहली फ़सल से कटनी का पर्व
मनाना। साल के अन्त में जब तुम अपनी
मेहनत के फल बटोरो, तो बटोरने का पर्व
मनाना। 17 हर वर्ष तीन बार तुम्हारे सारे पुरुष
प्रभु परमेश्वर को अपना मुँह दिखाएँ। 18 मेरे
बलिपशु का खून खमीरी रोटी के साथ मत
चढ़ाना। मेरे पर्व के उत्तम बलिदान में से प्रातः
काल तक कुछ मत रहने देना। 19 अपनी
ज़मीन की पहली उपज का पहला हिस्सा
अपने प्रभु परमेश्वर के भवन में लाना। बकरी
का बच्चा उसकी माँ के दूध में न पकाना।
20 सुनो, मैं एक दूत तुम्हारे आगे-आगे भेजूँगा,
वही रास्ते में तुम्हारी रक्षा करेगा। जिस
स्थान को मैंने तैयार किया है, वह तुम्हें
वहाँ तक पहुँचाएगा। 21 उसके सामने तुम
सावधान रहना, उसकी मानना, विरोध मत
करना। वह तुम्हारा अपराध क्षमा न करेगा,
क्योंकि उसमें मेरा नाम होगा। 22 यदि तुम
दिल से उसकी मानो और मेरे कहने अनुसार
करो तो मैं तुम्हारे दुश्मनों का दुश्मन और
द्रोहियों का द्रोही बन जाऊँगा। 23 इस तरह
मेरा दूत तुम्हारे आगे-आगे चल कर तुम्हें
एमोरी, हित्ती, परिज्जी, कनानी, हिब्बी और
यबूसी लोगों के यहाँ पहुँचाएगा और मैं उन्हें
बर्बाद कर डालूँगा। 24 उनके देवताओं के
सामने मत झुकना, न ही उनकी पूजा करना।
उनके समान काम मत करना। मूरतों को पूरी
तरह से सत्यानाश कर देना। उन लोगों की
लाटों टुकड़े-टुकड़े कर देना। 25 तुम अपने
प्रभु परमेश्वर की आराधना करना, तब वह
तुम्हारे अनाज पानी पर आशीष देंगे और
तुम्हारे बीच में से बीमारी को दूर करेंगे।
26 तुम्हारे देश में न किसी का गर्भ गिरेगा, न
कोई बाँझ रहेगा। तुम पूरी उम्र तक जिओगे।
27 जिन लोगों के बीच तुम जाओगे, मैं उन
सभी के मन में अपना डर पहले ही से समवा
दूँगा, कि वे व्याकुल हो जाएँगे। तुम्हारे शत्रु
तुम्हें अपनी पीठ दिखाएँगे। 28 मैं तुम से
पहले बर्रों को भेजूँगा, जो हिब्बी, कनानी
और हित्ती लोगों को तुम्हारे से भगाकर दूर
कर देंगी। 29 मैं उनको तुम्हारे आगे से एक
साल में नहीं निकालूँगा, ऐसा न हो कि देश
उजड़ जाए और बनैले पशु संख्या में बढ़
कर तुम्हें परेशान करने लगें। 30 जब तक
तुम फूल-फलकर देश को अपने अधिकार
में न कर लो तब तक मैं उन्हें तुम्हारे आगे से
थोड़ा-थोड़ा करके निकालता रहूँगा। 31 लाल
समुद्र से लेकर मैं पलिश्तियों के समुद्र तक
और जंगल से महानद तक के देश को तुम्हारे
नियन्त्रण में कर दूँगा। उस देश के रहने वालों
को भी मैं तुम्हारे वश में कर दूँगा। तुम उन्हें
अपने सामने से ज़ोर लगा कर निकालोगे।
32 तुम न उन से न उनके देवताओं से वाचा
बान्धना। 33 वे तुम्हारे देश में न रहने पाएँ,
कहीं ऐसा न हो कि वे तुम से मेरे विरोध में
अपराध करवाएँ। यदि तुम उनके देवताओं
की उपासना करो, तो यह तुम्हारे लिए फन्दा
बनेगा।

24 फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा,
“तुम हारून, नादान, अबीहू और
इस्राएलियों से सत्तर बुज़ुर्गों के साथ ऊपर
मेरी उपस्थिति में आकर दूर से दण्डवत्

करना। 2 केवल मूसा प्रभु परमेश्वर के पास
आए, लेकिन वे न आएँ। दूसरे सभी लोग तो
उसके संग ऊपर भी न आएँ। 3 नीचे उतर कर
मूसा ने परमेश्वर की कही सभी बातों और
नियमों को बता दिया। तभी सब लोग एक
आवाज़ में बोल उठे, "परमेश्वर की कही सभी
बातों को हम मानेंगे।" 4 तब मूसा ने परमेश्वर
की कही बातों को लिख डाला। भोर को उठ
कर उसने पहाड़ के नीचे इस्राएल के बारह
गोत्रों[a] के अनुसार बारह खम्भे बनवाए। 5 तब
उसने परमेश्वर के लिए होमबलि और बैलों के
मेलबलि चढ़ाने के लिए नवजवानों को भेजा।
6 मूसा ने खून के आधे हिस्से को कटोरों
में रख दिया और आधा वेदी पर छिड़क
दिया। 7 उसके बाद उसने वाचा की किताब
को लेकर लोगों को पढ़ कर सुनाया। वह
सब सुन कर वे सभी बोल उठे, "परमेश्वर ने
जो कुछ करने के लिए कहा, हम अवश्य
करेंगे।" 8 तब मूसा ने खून को लोगों पर
छिड़क दिया और कहा, "देखो, यह उस
वाचा का खून है, जिसे परमेश्वर ने इन सभी
वचनों पर तुम्हारे साथ बाँधी है।" 9 तब मूसा,
हारून, नादाब, अबीहू और इस्राएलियों के
सत्तर बुज़ुर्ग ऊपर गए। 10 उन्होंने इस्राएल
के प्रभु परमेश्वर की उपस्थिति[b] का अनुभव
किया। वहाँ नीलमणि का सा चबूतरा उन्हें
परमेश्वर के कदमों पर दिखाई दिया, जो
नीले आकाश की तरह था। 11 परमेश्वर ने
इस्राएलियों के प्रधानों पर हाथ न बढ़ाया।
उन्हें भी परमेश्वर का दर्शन हुआ और भोजन
आदि किया। 12 परमेश्वर ने मूसा से कहा,
"पहाड़ पर मेरे पास आकर रहो और मैं तुम्हें
पत्थर की पटियाएँ तथा लिखी हुई व्यवस्था
और आज्ञा दूँगा ताकि तुम उन्हें सिखाओ।
13 तब मूसा यहोशू के साथ पहाड़ पर चढ़
गया। 14 बुज़ुर्ग अगुवों से वह यह कह गया,
"जब तक हम तुम्हारे पास वापस न आएँ,
इन्तज़ार करते रहना। हाँ, हारून और हूर
जो तुम्हारे साथ हैं; वहीं किसी मुकदमें के
उठ जाने पर निबटारा करें।" 15 तभी मूसा
पहाड़ पर चढ़ गया और बादल ने पहाड़
को ढाँक लिया। 16 तब परमेश्वर का तेज,
सीनै पहाड़ पर ठहरा रहा और वह बादल
उस पर छैः दिन तक छाया रहा। सातवें
दिन परमेश्वर ने मूसा को बादल के बीच
में से पुकारा 17 पहाड़ के ऊपर परमेश्वर की
उपस्थिति[c] तेज आग की तरह दिखती थी।
18 मूसा बादल के बीच में गया और पहाड़
पर चढ़ गया। मूसा वहाँ पहाड़ पर चालीस
दिन-चालीस रात रहा।

25 परमेश्वर ने मूसा से कहा,
2 "इस्राएलियों को बताओ कि मेरे
लिए भेंट लाएँ। जो लोग अपने मन से देना
चाहें, केवल उन्हीं से लेना। 3 भेंट ली जाने
वाली वस्तुएँ ये हैं : सोना, चाँदी, पीतल,
4 नीला, बैजनी और लाल रंग का कपड़ा,
बारीक सन का कपड़ा, बकरी का बाल
5 लाल रंग से रंगी मेंढ़ों की खालें सुइसों
की खालें, बबूल की लकड़ी 6 रोशनी के
लिए तेल, अभिषेक के तेल के लिए और
खुशबूदार धूप के लिए खुशबूदार वस्तुएँ,
7 एपोद और चपरास के लिए सुलैमानी
पत्थर और जड़ने के लिए मणि। 8 वे मेरे
लिए एक पवित्रस्थान बनाएँ ताकि मैं उनके
मध्य रहा करूँ। 9 निवासस्थान का जैसा
नमूना मैं दिखाता हूँ, वैसा ही तुम बनाना।
10 बबूल की लकड़ी का एक सन्दूक बनाया
जाए, जिस की लम्बाई ढाई हाथ, चौड़ाई
और ऊँचाई डेढ़-डेढ़ हाथ की हो। 11 भीतर

[a] **24.4** कबीलों [b] **24.10** दर्शन [c] **24.17** महिमा

और बाहर उसे सोने से मढ़वाना। सन्दूक के
ऊपर चारों तरफ़ सोने की बाड़ बनवाना।
12 सोने के चार कड़े बनवा कर उसके चारों
पायों पर, एक और दो कड़े और दूसरी ओर
भी दो कड़े लगवाना। 13 बबूल की लकड़ी
के डंडे बनवा कर उसे सोने से मढ़वाना।
14 डंडों को सन्दूक की दोनों तरफ़ के कड़ों
में डालना जिस से उनके सहारे सन्दूक
उठाया जा सके। 15 ये डंडे सन्दूक के कड़ों
में लगे रहे और उस से अलग न किए जाएँ।
16 जो साक्षीपत्र मैं तुम्हें दूँगा, उसे उसी
सन्दूक में रखना। 17 फिर विशुद्ध सोने का
एक प्रायश्चित्त का ढकन बनवाना। उसकी
लम्बाई ढाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ की
हो। 18 सोना ढाल कर दो करूब बनवा
कर प्रायश्चित्त के ढक्कन के दोनों सिरों पर
लगवाना। 19 एक करूब एक सिरे पर,
दूसरा दूसरे सिरे पर लगवाना। करूबों और
प्रायश्चित्त के ढकने को एक ही टुकड़े से
बनवा कर उसके दोनों सिरों पर लगवाना।
20 उन करूबों के पंख ऊपर से ऐसे फैले हुए
बने, कि प्रायश्चित्त का ढक्कन उन से ढपा
रहे और उनके चेहरे आमने-सामने और
प्रायश्चित्त के ढक्कन की ओर रहें। 21 प्रायश्चित्त
के ढक्कन का सन्दूक के ऊपर लगवाना
और जो साक्षीपत्र मैं तुम्हें दूँगा उसे सन्दूक
के अन्दर रखना। 22 मैं उसके ऊपर रह
कर तुम से मिला करूँगा और इस्राएलियों
के लिए जितनी आज्ञाएँ मुझ को तुम्हें देनी
होंगी, उन सब के बारे मैं प्रायश्चित्त के ढकने
के ऊपर से और उन करूबों के बीच में
से, जो साक्षीपत्र के सन्दूक पर होंगे, तुम
से बातचीत किया करूँगा। 23 फिर बबूल
की लकड़ी की एक मेंज़ बनवाना। उसकी
लम्बाई दो हाथ, चौड़ाई एक हाथ और
ऊँचाई डेढ़ हाथ की हो। 24 उसे शुद्ध सोने
से मढ़वाना और उसके चारों ओर सोने की
एक बाड़ बनवाना। 25 उसके चारों तरफ़
चार अंगुल चौड़ी एक पटरी बनवाना। इस
पटरी के चारों ओर सोने की एक बाड़
बनवाना। 26 सोने के चार कड़े बनवा कर
मेंज़ के उन चारों कोनों में लगवाना, जो
उसके चारों पायों में होंगे। 27 वे कड़े पटरी
के पास ही हों और डंडों को सम्भालने वाले
हों, ताकि मेंज़ उन्हीं के बल उठाई जा सके।
28 डंडों को बबूल की लकड़ी से बनवा
कर सोने से मढ़वाना और मेंज़ भी उन्हीं
से उठाई जाए। 29 उसके परात, धूपदान,
चम्मच और उण्डेलने के कटोरे, सभी चोखे
सोने से बनवाना। 30 मेंज़ पर मेरे सामने भेंट
की रोटियाँ हर दिन रखा करना। 31 फिर
शुद्ध सोना ढलवा कर एक दीवट, पाये और
डंडों बनवाई जाए। उसके पुष्पकोष, गाँठ
और फूल, सभी एक ही टुकड़े के बने हों।
32 उसके किनारों से छः डालियाँ निकलें।
तीन डालियाँ दीवट के एक ओर से और
तीन उसके दूसरी ओर से निकली हुई हों।
33 एक -एक डाली में बादाम के फूल की
तरह तीन-तीन पुष्पकोष, एक-एक गाँठ
और एक-एक फूल हों। दीवट से निकली
हुई छहों डालियों का यही आकार या रूप
हो। 34 दीवट की डंडों में बादाम के फूल
के समान चार पुष्पकोष अपनी-अपनी गाँठ
और फूल सहित हों। 35 दीवट से निकली
हुई छहों डालियों में से दो-दो डालियों के
नीचे एक-एक गाँठ हो, वे दीवट सहित एक
ही टुकड़े के बने हुए हों। 36 उनकी गाँठें और
डालियाँ सभी दीवट सहित एक ही टुकड़े
की हों। शुद्ध सोने को ढलवा कर पूरी दीवट
एक ही टुकड़े की बनवाना। 37 सात दीपक
बनाए जाएँ और उन्हें जलाया जाए, ताकि
दीवट के सामने रोशनी हो। 38 गुलतराश

और गुलदान सभी शुद्ध सोने के हों। 39 वह
सब इन सभी सामान सहित किक्कार भर सोने
का बने। 40 बड़ी सोच-समझ से इन वस्तुओं
को दिए गए नमूने के अनुसार बनाया जाए,
जो तुम्हें इस पहाड़ पर दिखाया गया है।

26 फिर निवासस्थान के लिए दस पर्दे
बनवाना। इन्हें बटी हुई रानी वाले
और नीले, बैजनी और लाल रंग के कपड़े
की कढ़ाई के काम किए हुए करूबों के साथ
बनवाना। 2 हर एक पर्दे की लम्बाई अट्ठाईस
हाथ और चौड़ाई चार हाथ की हों। सभी पर्दे
एक ही नाप के हों। 3 पाँच पर्दे एक दूसरे से
जुड़े हुए हों। बाकी पाँच पर्दे भी एक दूसरे
से जुड़े हुए हों। 4 जिस जगह पर ये दोनों पर्दे
जोड़े जाएँ, वहाँ के दोनों छोरों पर नीले-नीले
फन्दे लगवाना। 5 दोनों छोरों में पचास-पचास
फन्दे ऐसे लगवाना कि वे आमने-सामने हों।
6 सोने के पचास अंकड़े बनवाना और परदों
के छल्लों को आंकड़ों के द्वारा एक-दूसरे ऐसा
जुड़वाना कि निवास स्थान मिल कर एक हो
जाए। 7 फिर निवास के ऊपर तम्बू का काम
देने के लिए बकरी के बाल के ग्यारह पर्दे
बनवाना। 8 एक-एक पर्दे की लम्बाई तीस
हाथ और चौड़ाई चार हाथ की हो। सभी
ग्यारह परदों का नाप एक सा हो। 9 और
पाँच पर्दे अलग और छैः पर्दे अलग जुड़वाना
और छठवें पर्दे को तम्बू के सामने मोड़ कर
दोहरा कर देना। 10 तुम पचास अंकड़े उस
पर्दे के छोर में जो बाहर से मिलाया जाएगा
और पचास ही अंकड़े दूसरी ओर के पर्दे
की छोर में जो बाहर से मिलाया जाएगा,
बनवाना। 11 पीतल के पचास अंकड़ों बनाना
और अंकड़ो को फन्दों में लगा कर तम्बू को
ऐसा जुड़वाना कि वह मिल कर एक हो जाए।
12 तम्बू के परदों का लटका हुआ हिस्सा
अर्थात् जो आधा पट रहेगा, वह निवास के
पिछली तरफ़ लटका रहे। 13 तम्बू के परदों
की लम्बाई में से हाथ भर इधर और हाथ
भर उधर निवास को ढाँकने के लिए उसके
दोनों ओर लटका हुआ रहे। 14 फिर तम्बू के
लिए लाल रंग से रंगी हुई मेंढ़ों की खालों
का एक ओढ़ना और उसके ऊपर सुइसों की
खालों का भी एक ओढ़ना बनाना। 15 "फिर
निवास को खड़ा करने के लिए बबूल की
लकड़ी के तख्ते बनवाना। 16 एक-एक तख्ते
की लम्बाई दस हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ
की हो। 17 एक-एक तख्ते में एक दूसरे से
जोड़ी हुई दो चूलें हों। निवास के सभी तख्तों
को इसी तरह बनाना। 18 निवास के लिए जो
तख्ते तुम बनवाओगे, उन में से बीस तख्ते
दक्षिण दिशा के लिए हों। 19 बीसों तख्तों
के नीचे चाँदी की चालीस कुर्सियाँ बनवाना
अर्थात् एक-एक तख्ते के नीचे उसकी चूलों
के लिए दो-दो कुर्सियाँ। 20 निवास की दूसरी
ओर अर्थात् उत्तर की तरफ़ के लिए बीस
तख्ते बनवाना। 21 उनके लिए चाँदी की
चालीस कुर्सियाँ अर्थात् एक-एक तख्ते के
नीचे दो-दो कुर्सियाँ बनवाना। 22 निवास की
पिछली ओर अर्थात् पश्चिम की ओर के लिए
छैः तख्ते बनवाना। 23 पिछले भाग में निवास
के कोनों के लिए दो तख्ते बनवाना 24 और
ये नीचे से दो-दो भाग के हों और दोनों भाग
ऊपर के सिरे तक एक-एक कड़े में मिलाए
जाएँ। दोनों तख्तों का यही रूप हो और
ये दोनों कोनों के लिए हों। 25 आठ तख्ते
हों और उनकी चाँदी की सोलह कुर्सियाँ
हों, अर्थात् एक-एक तख्तों के नीचे दो-दो
कुर्सियाँ हों। 26 फिर बबूल की लकड़ी के
बेड़ें बनवाना अर्थात् निवास के एक ओर के
तख्तों के लिए पाँच, 27 निवास के दूसरी ओर
के तख्तों के लिए पाँच बेड़ें और निवास का

जो भाग पश्चिम की ओर पिछले भाग में होगा,
उसके लिए पाँच बेड़ें बनवाना। 28 बीच वाला
बेंड़ा जो तख्तों के बीच में होगा, वह तम्बू
के एक सिर से दूसरे सिरे तक पहुँचे। 29 फिर
तख्तों को सोने से मढ़वाना। उनके कड़े जो
बेड़ों के घरों का काम देंगे, उन्हें भी सोने के
बनवाना और बेड़ों को भी सोने के बनवाना
बेड़ों को भी सोने से मढ़वाना। 30 निवास
को इस तरह से खड़ा करना, जैसा इस
पहाड़ पर तुम्हें दिखाया जा चुका है। 31 फिर
नीले, बैजनी और लाल रंग के और बटी हुई
महीन सनी वाले कपड़े का एक बीच वाला
परदा बनवाना। वह कढ़ाई के काम किए
हुए करूबों के साथ बने। 32 उसके सोने से
मढ़े हुए बबूल के चार खम्भों पर लटकाना।
इनकी अंकड़ियाँ सोने से बनी हो। ये चाँदी
से बनी चार कुर्सियों पर खड़ी रहें। 33 बीच
वाले पर्दे को अंकड़ियों के नीचे लटका कर
उसको आड़ में साक्षीपत्र के सन्दूक अन्दर ले
जाना। इस तरह वह बीच वाला परदा तुम्हारे
लिए पवित्रस्थान को महापवित्र स्थान से
अलग किए रहेगा। 34 फिर महापवित्र स्थान
में साक्षीपत्र को सन्दूक के ऊपर प्रायश्चित्त
के ढक्कन को रखना। 35 उस पर्दे के बाहर
निवास के उत्तर की ओर मेंज़ रखना। उसके
दक्षिण की ओर मेंज़ के सामने दीवट को
रखना। 36 फिर तम्बू के दरवाज़े के लिए
नीले, बैजनी और लाल रंग के और बटी हुई
महीन सनी वाले कपड़े का कढ़ाई का काम
किया हुआ एक परदा बनाना। 37 इस पर्दे
के लिए बबूल के पाँच खम्भे बनवाना। उन्हें
सोने से मढ़वाना। उनकी कड़ियाँ सोने की
हों और उनके लिए पीतल की पाँच कुर्सियाँ
ढलवा कर बनवाना।

27 फिर वेदी को बबूल की लकड़ी
की पाँच हाथ लम्बी और पाँच हाथ
चौड़ी बनवाना। वेदी चौकोर हो और उसकी
ऊँचाई तीन हाथ की हो। 2 उसके चारों कोनों
पर चार सींग बनवाना। वे एक ही टुकड़े
से बने हों और उन पर पीतल मढ़वाना,
3 उसकी राख उठाने के बर्तन, फावड़ियाँ,
कटोरे, काँटे और अँगीठियाँ बनवाना। सब
कुछ पीतल का होना चाहिए। 4 उसके लिए
पीतल की जाली की एक झँझरी बनवाना
झँझरी के चारों सिरों में पीतल के चार कड़े
लगवाना 5 झँझरी को वेदी के चारों ओर की
कंगनी के नीचे इस तरह लगवाना, कि वह
वेदी की ऊँचाई के बीच तक पहुँचे। 6 वेदी के
लिए बबूल की लकड़ी के डंडे बनवाना और
उन्हें पीतल से मढ़वाना। 7 डंडे कड़ों में डाले
जाएँ, कि जब जब वेदी उठायी जाए, तब वे
उसके दोनों किनारों पर रहें। 8 वेदी को तख्तों
से खोखली बनवाना। जैसी वह तुझे पहाड़
पर दिखायी गई है, वैसी ही बनाना 9 फिर
निवास के आँगन को बनवाना उसके दक्षिण
की ओर के लिए बटी हुई महीन सनी के
कपड़े के पर्दे हों। उसकी लम्बाई सौ हाथ हो,
एक किनारे पर इतनी ही हो। 10 उनके लिए
बीस खम्भे बनें, इन के लिए पीतल की बीस
कुर्सियाँ बनें और खम्भों के कुन्डे और पट्टियाँ
चाँदी की हों। 11 इसी तरह उत्तर की ओर के
लिए सौ हाथ लम्बा परदा हो, तथा उसके
बीस खम्भे और कांसे के बीस खांचे हो।
खम्भों के कुन्डे और उनकी पट्टियाँ चाँदी की
बनाना। 12 फिर आँगन की चौड़ाई में पश्चिम
की ओर पचास हाथ के पर्दे हों। उनके लिए
खम्भे दस और खाने भी दस हों। 13 पूरब की
ओर आँगन की चौड़ाई पचास हाथ की हो।

14 आँगन के दरवाज़े की ओर पन्द्रह हाथ के
पर्दे हों और उसके लिए खम्भे तीन और खाने
तीन हों। 15 दूसरी ओर भी पन्द्रह हाथ के पर्दे
हों, उनके लिए भी तीन खम्भे और तीन खाने
हों। 16 आँगन के दरवाज़े के लिए एक परदा
बनवाना जो नीले, बैंगनी और लाल रंग के
कपड़े और बटी हुई महीन सनी के कपड़े
का कामदार बना हुआ बीस हाथ का हो,
उसके लिए खम्भे चार और खाने भी चार
हों। 17 आँगन के चारों ओर के सभी खम्भे
चाँदी की पट्टियों से जुड़े हुए हों। 18 आँगन
की लम्बाई सौ हाथ की, चौड़ाई पचास हाथ
की हो। उसकी कनात की ऊँचाई पाँच हाथ
की हो। उसकी कनात बटी हुई महीन सनी के
कपड़े की बने और खम्भों के खाने पीतल के
हों। 19 निवास स्थान के तरह-तरह के बर्तन
और सभी समान और उसके सब खूँटे और
आँगन के सभी खूँटे पीतल के हों। 20 फिर तुम
इस्राएलियों को आज्ञा देना कि मेरे पास दीवट
के लिए कूट के निकाला हुआ जैतून का
निर्मल तेल ले आना। उसी से दीपक सदैव
जलता रहे। 21 मण्डली के तम्बू में, उस बीच
वाले पर्दे से बाहर जो साक्षीपत्र के सामने
होगा, हारून और उसके बेटे दीवट शाम से
सुबह तक परमेश्वर के सामने सज़ा कर रखें।
यह विधि इस्राएलियों की पीढ़ियों के लिए
हमेशा-हमेशा तक रहे।

28 फिर तुम इस्राएलियों में से अपने
भाई हारून, नादाब, अबीहू,
एलीआजार और ईतामार नामक उसके बेटों
को अपने पास ले आना कि वे मेरे लिए
याजक[a] की जिम्मेंदारी निभाएँ। 2 तुम अपने
भाई हारून के लिए वैभव और शोभा के
लिए पवित्र कपड़े बनवाना। 3 जितने लोगों
के मन[b] में बुद्धि है, जिन को मैंने बुद्धि देने
वाली आत्मा से भर दिया है, उनको तुम
हारून के कपड़े बनाने की आज्ञा दो, कि
वह मेरे लिए याजक का काम करने के लिए
पवित्र बने। 4 जो कपड़े उन्हें बनाने होंगे,
वे ये हैं - सीनाबन्द, एपोद, बागा, चारखाने
का अंगरखा, पगड़ी और कमरबन्द। ये
पवित्र वस्त्र तुम्हारे भाई हारून और उसके
बेटों के लिए बनाए जाएँ, कि वे मेरे लिए
याजक का काम करें। 5 वे सोने और नीले,
बैजनी और लाल रंग का और महीन सनी
का कपड़ा लें। 6 वे सोने और नीले, बैजनी
और लाल रंग के कपड़े का और बटी हुई
महीन सनी के कपड़े का बनाएँ। यह एक
योग्य कढ़ाई करने वाले से बनवाया जाए।
7 वह इस तरीके से जोड़ा जाए कि उसके
दोनों कन्धों के सिरे आपस में मिले रहें।
8 एपोद पर जो काढ़ा हुआ पटुका होगा,
उसकी बनावट उसी की तरह हो और वे
दोनों बिना जोड़ के हों। ये सोने और नीले,
बैजनी और लाल रंग वाले और बटी हुई
महीन सनी वाले कपड़े के हों। 9 फिर दो
सुलैमानी मणि लेकर उन पर इस्राएल के
बेटों के नाम खुदवाना। 10 उनके नामों में
से छैः एक मणि पर और बाकी छैः नाम
दूसरे मणि पर, इस्राएल के बेटों के जन्म के
अनुसार खुदवाना। 11 मणि खोदने वाले के
काम ही की तरह, जैसे छापा खोदा जाता
है, 12 वैसे ही उन दो मणियों पर इस्राएल के
बेटों के नाम खुदवाना। उन्हें सोने के खानों
में जड़वा देना। दोनों मणियों को एपोद के
कन्धों पर लगवाना। वे इस्राएल को याद
दिलवाने वाले मणि ठहरेंगे। दूसरे शब्दों में
हारून उनके नाम परमेश्वर के सामने अपने
दोनों कन्धों पर यादगारी के लिए लगाए

[a] **28.1** पुरोहित [b] **28.3** हृदय

रहे। 13 सोने के खाने बनवाना। 14 डोरियों
की तरह गुँथे हुए दो जंजीर चोखे सोने के
बनवाए जाएँ और गुँथे हुए जंजीरों को उन
खानों में जड़वाना 15 फिर न्याय की चपरास
को भी कढ़ाई के काम का बनवाना। एपोद
की तरह सोने और नीले, बैजनी और लाल
रंग के और बटी हुई महीन सनी के कपड़े
की उसे बनवाना। 16 वह चौकोर और
दोहरी हों। उसकी लम्बाई और चौड़ाई एक
बालिश्त की हो। 17 उसमें चार पंक्ति मणि
जड़ाना। पहली पंक्ति में माणिक, पद्मराग
और लालड़ी हों। 18 दूसरी पंक्ति में मरकत,
नीलमणि और हीरा 19 तीसरी पंक्ति में
यशब, सूर्यकांत और नीलम 20 चौथी पंक्ति
में फ़िरोज़ा, सुलैमानी मणि और यशब हों।
इन सभी को सोने के खानों[a] में जड़ दिया
जाए। 21 इस्राएल के बेटों की गिनती के
अनुसार मणियों की संख्या हो। कहने का
अर्थ यह है कि उनके नामों की गिनती के
आधार पर बारह नाम एक-एक मणि पर
ऐसे खोदे जाएँ, जैसे कि छाप कर खोदा
गया हो। 22 फिर चपरास पर डोरियों की
तरह गुँथे हुए शुद्ध सोने की जंजीर लगवाना।
23 साथ ही चपरास में सोने की दो कड़ियाँ
लगवाई जाएँ। दोनों कड़ियों को चपरास
के दोनों सिरों पर लगवाना। 24 सोने की
दोनों गुँथी हुई जंजीरों को उन दो कड़ियों में
जो चपरास के सिरों पर होंगी, लगवाना।
25 गुँथी हुई दोनों जंजीरों के दोनों बाकी
सिरों को दोनों छेदों में जड़वाकर एपोद के
दोनों कन्धों के बन्धनों पर उसके सामने
लगवाया जाएँ। 26 सोने की दो और कड़ियाँ
बनवा कर चपरास के दोनों सिरों पर उसकी
उस कोर पर जो एपोद के अन्दर की ओर
होगी, लगवाना। 27 इसके अलावा सोने
की दो और कड़ियाँ बनवा कर एपोद के
दोनों कन्धों के बन्धनों पर, नीचे से उसके
सामने और उसके जोड़ के पास एपोद के
काढ़े हुए पट्टे के ऊपर लगवाना। 28 चपरास
अपनी कड़ियों के द्वारा एपोद की कड़ियों
में नीले फ़ीते से बाँधी जाए। इस तरह वह
एपोद के काढ़े हुए पट्टे पर बनी रहे और
चपरास एपोद पर से अलग न होने पाए।
29 जब-जब हारून पवित्रस्थान में दाखिल
हों, तब-तब वह न्याय की चपरास पर
अपने दिल के ऊपर इस्राएलियों के नामों
को लगाए रहे। इस तरह से परमेश्वर के
सामने उनकी याद हर दिन बनी रहेगी।
30 न्याय की चपरास में तुम ऊरीम-तुम्मीम
को रखना। जब-जब हारून परमेश्वर के
सामने आए, तब-तब वे उसके हृदय के
ऊपर हों। इस तरह हारून इस्राएलियों के
लिए परमेश्वर के न्याय को अपने हृदय के
ऊपर प्रतिदिन लगाए रहे। 31 "एपोद के
बागे को पूरा नीले रंग का होना चाहिए।
32 उसके बीच में सिर डालने के लिए छेद
हो, उस छेद के चारों तरफ़ बख्तर के छेद
जैसी एक बुनी हुई कोर हो कि वह फटने न
पाए। 33 उसके नीचे वाले घेरे में चारों और
नीले, बैजनी और लाल रंग के कपड़े के
अनार बनाना। उसके बीच-बीच चारों तरफ़
सोने की घंटियाँ लगाना। 34 अर्थात् एक
सोने की घंटी और एक अनार। इस तरह
बागे के नीचे वाले घेरे में चारों ओर ऐसा
ही हो। 35 हारून उस बागे को सेवा करते
समय पहना रहे। जब-जब वह पवित्रस्थान
के अन्दर परमेश्वर के सामने जाए या बाहर
निकले, तब-तब उसकी आवाज़ सुनायी दे,
नहीं तो वह मर जाएगा। 36 शुद्ध सोने की
एक पट्टी बनवाना, छपाई की तरह ये शब्द

[a] **28.20** छेदों

खोदे जाएँ : 'परमेश्वर के लिए पवित्र' 37 उसे
नीले फ़ीते से बांध देना जो कि पगड़ी के
सामने वाले भाग पर रहे। 38 वह हारून के
माथे पर रहे, ताकि इस्राएली जो कुछ पवित्र
ठहराएँ अर्थात् जितनी पवित्र चीजें भेंट में
चढ़ावे, उन पवित्र चीजों का दोष हारून
उठाए रहें। हर दिन वह उसके माथे पर रहे,
जिस से परमेश्वर उन से खुश रहें। 39 महीन
सनी के कपड़े का जो चार खाने वाला हो,
उस से अंगरखा बनाया जाए। बेल-बूटे की
कढ़ाई का काम किया हुआ एक कमरबन्द
भी बनाया जाए। 40 फिर हारून के बेटों के
लिए भी अंगरखें, कमरबन्द और टोपियाँ
बनवायी जाएँ। ये कपड़े शान और सुन्दरता
के लिए होंगे। 41 अपने भाई हारून और
उसके बेटों को ये सब कपड़े पहिनाकर
उनका अभिषेक और संस्कार करना। उन्हें
पवित्र करना ताकि वे मेरे लिए याजक[a] का
काम करें। 42 उनके लिए सभी के कपड़े
की जाँघिया बनवाना जिस से उनकी देह
ढँकी रहे। ये जाँघिया कमर से जाँघ तक
की होनी चाहिए। 43 जब कभी हारून और
उसके बेटे मिलाप वाले तम्बू में दाखिल हों
या पवित्रस्थान में सेवकाई करने वेदी के
पास जाएँ, तब वे उन जाँघियों को पहिने
रहें। ऐसा न हो कि वे अपराधी ठहरें और
मर जाएँ। यह बात हारून और उसके वंश
में सदा के लिए एक रिवाज़ बन जाए।

29 उन्हें पवित्र करने के लिए जो कुछ
तुम्हें उनके साथ मिल कर करना
है - वह है याजक का काम। वे एक
निर्दोष बछड़ा और दो निर्दोष मेंढ़े लें। 2 साथ
में अखमीरी रोटी, तेल से सने हुए मैदे
के अखमीरी फुलके और तेल चुपड़ी हुई
अखमीरी पपड़ियाँ भी लेना। यह सभी मैदे
से बनवाना। 3 इन को एक टोकरी में रख
कर उस टोकरी को उस बछड़े और उन दिनों
मेंढ़ों समेत पास ले आना। 4 फिर हारून और
उसके बेटों को मिलाप वाले तम्बू के दरवाज़े
के पास लाकर पानी से नहलाना। 5 तब उन
कपड़ों को लेकर हारून को अंगरखा और
एपोद का बागा पहनाना। एपोद और चपरास
बाँधना और एपोद का काढ़ा हुआ पट्टा भी
बाँधना। 6 सिर पर पगड़ी रखना, पगड़ी पर
पवित्र मुकुट रखना। 7 तब अभिषेक का तेल
उसके सिर पर डाल कर उस का अभिषेक
करना। 8 फिर उसके बेटों को पास लाकर
उनको अंगरखे पहनाना। 9 फिर हारून और
उसके बेटों की कमर बान्धना और उनके
सिर पर टोपियाँ रखना, जिस से पुरोहित[b]
पद पर सदा के लिए उनका ही अधिकार हो।
इस तरह हारून और उसके बेटों का संस्कार
करना। 10 तब बछड़े को मिलाप वाले तम्बू
के सामने पास ले आना हारून और उसके
बेटे बछड़े के सिर पर अपने-अपने हाथ रखें।
11 तब उस बछड़े को परमेश्वर के सामने
मिलाप वाले तम्बू के दरवाज़े पर कुर्बान
करना। 12 और बछड़े के खून में से कुछ
लेकर अपनी उंगली से वेदी के सीगों पर
लगाना। बाकी बचे खून को वेदी के पाए
पर उण्डेल देना। 13 अतंड़ियों के ऊपर जमी
चर्बी और कलेजे के ऊपर की झिल्ली और
दोनों गुर्दों के ऊपर की चर्बी को वेदी पर
जलाना। 14 बछड़े का मांस, खाल और गोबर
छावनी के बाहर अपराध बलि के रूप में
बाहर आग में जलाया जाए। 15 एक मेंढ़े को
लेकर हारून और उसके बेटे अपने हाथों को
उस पर रखे। 16 मेंढ़े को कुर्बान करके उसके
रक्त को वेदी पर चारों ओर छिड़कना। 17 मेंढ़े

[a] **28.41** पुरोहित [b] **29.9** याजक

को टुकड़ों में बाँट देना। उसकी अतड़ियों
और पैरों को धोकर उसके टुकड़ों और सिर
के ऊपर रखना। 18 उस पूरे मेंढ़े को वेदी
पर जलाना। वह परमेश्वर के लिए होम बलि
है। वह खुश देने वाली सुगंध और परमेश्वर
के लिए भेंट होगी। 19 फिर दूसरे मेंढ़े को
लेकर हारून और उसके बेटे उसके सिर
पर अपने-अपने हाथ रखें। 20 तब उस मेंढ़े
की कुर्बानी चढ़ाना और उसके खून में से
थोड़ा सा लेकर हारून और उसके बेटों के
दाहिने कान के सिरे पर और उनके दाहिने
हाथ और दाहिने पाँव के अँगूठों पर लगाना।
तुम खून को वेदी पर चारों और छिड़क
देना। 21 फिर वेदी के खून और अभिषेक
के तेल में से थोड़ा-थोड़ा लेकर हारून और
उसके कपड़ों पर भी छिड़क देना। तब वह
अपने कपड़ों सहित और उसके बेटे भी
अपने-अपने कपड़ों सहित पवित्र हो जाएँगे।
22 तब मेंढ़े को संस्कार वाला जान कर उस में
से चर्बी और मोटी पूँछ को और जिस चर्बी
से अतड़ियों ढकी रहती हैं, उसको कलेजे
की झिल्ली को और चर्बी समेत दोनों गुर्दों
को और दाहिने कंधे को लेना। 23 परमेश्वर
के सम्मुख रखी अखमीरी रोटी की टोकरी
में से एक रोटी, तेल से सने मैदे का फुलका
और एक पपड़ी लेकर 24 हारून और उसके
बेटों के हाथों में रख कर हिलाए जाने की भेंट
ठहरा कर परमेश्वर के आगे हिलाया जाए।
25 इन सब चीजों को हारून के हाथों से लेकर
होमबलि की वेदी पर जलाना, जिस से वह
सुख देने वाली खुशबू हो। वह परमेश्वर के
लिए हवन[a] ठहरें 26 फिर हारून के समर्पण
के मेंढ़े की छाती को लेकर हिलाए जाने की
भेंट के लिए परमेश्वर के आगे हिलाना, वही
तुम्हारा हिस्सा ठहरेगा। 27 हारून और उसके
बेटों के समर्पण के मेंढ़े में हिलाए जाने की भेंट
वाली छाती जो हिलायी जाएगी और उठाए
जाने का भेंट वाला कंधा पट्टा जो उठाया
जाएगा, इन दोनों को पवित्र ठहराना। 28 ये
सदा काल की प्रथा की रीति पर इस्राएलियों
की ओर से उस का और उसके बेटों का
हिस्सा ठहरे, क्योंकि ये उठाए जाने की भेंटें
ठहरी हैं। यह इस्राएलियों की ओर से उनके
मेल बलियों में से परमेश्वर के लिए उठाए जाने
की भेंट होगी। 29 हारून के पवित्र कपड़े[b]
उसके बेटे और पोते भी पहनें, जिस से उन्हीं
को पहिने हुए उनका अभिषेक और समर्पण
किया जाए। 30 उसके बेटों में से जो उसकी
जगह पर पुरोहित होगा, वह जब पवित्रस्थान
में सेवा करने को मिलाप वाले तम्बू में पहले
आए। फिर उन कपड़ों को सात दिन तक
पहने रहे। 31 फिर पुरोहित[c] के समर्पण के
मेंढ़े का गोश्त किसी पवित्रस्थान में पकाना।
32 तब हारून अपने बेटों के साथ उस मेंढ़े
का गोश्त और टोकरी की रोटी दोनों को
मिलाप वाले तम्बू के दरवाज़े पर खाए।
33 जिन चीजों से उनका समर्पण और उन्हें
पवित्र करने के लिए प्रायश्चित्त किया जाएगा।
इसलिए कि वह सब पवित्र[d] होगा, दूसरे
कबीले[e] का कोई व्यक्ति उसे न खाए। 34 यदि
समर्पित मांस या रोटी में से कुछ सुबह तक
बचा रहे, तो उस बचे हिस्से को आग में
जलाना। वह पवित्र होगा और उसे खाया
न जाए। 35 मेरी आज्ञा के अनुसार हारून
और उसके बेटों से करना। सात दिन तक
उन्हें अलग करने की विधि पूरी करना।
36 अपराध बलि का एक बछड़ा प्रायश्चित्त
के लिए हर दिन चढ़ाना। प्रायश्चित्त के समय
वेदी को शुद्ध करना और पवित्र करने के लिए
अभिषेक करना। 37 सात दिन तक वेदी के

[a] **29.25** भेंट [b] **29.29** पहिरावा [c] **29.31** याजक [d] **29.33** सामान्य से अलग [e] **29.33** कुल

लिए प्रायश्चित्त करके उसे पवित्र करना, तब
वेदी पवित्र ठहरेगी। जो कुछ उस से स्पर्श
होगा वह भी पवित्र हो जाएगा। 38 वेदी पर
तुम्हें जो चढ़ाते रहना है, वह यह है: हर दिन
एक एक साल के दो मेमने। 39 एक मेम्ने को
सुबह, और दूसरे मेमने को शाम को चढ़ाना;
40 एक मेमने के साथ हीन की चौथाई कूट
के निकाले हुए तेल से सना हुआ एपा का
दसवां हिस्सा मैदा और अर्घ के लिए हीन
की चौथाई दाखमधु देना। 41 दूसरे मेमने को
शाम को चढ़ाना, तथा उसके साथ प्रात:काल
की तरह अन्नबलि और अर्घ के लिए चढ़ाना,
जिस से प्रभु के लिए सुखदायकसुगन्ध और
अन्नबलि ठहरे। 42 यह तुम्हारी आनेवाली
पीढ़ियों में भी होती रहनी चाहिए.। वहाँ तुमसे
मिलकर मैं बातचीत करूँगा 43 मेरी मुलाकत
वहाँ इस्राएलियों से होगी और मेरी महिमा
से पवित्र किया जाएगा। 44 मैं मिलपववाले
तम्बू और वेदी को पवित्र करूँगा, हारून
और उसके बेटों को भी अलग करूँगा,
ताकि वे मेरे लिए याजकीय सेवा करें।
45 मैं इस्राएल के बीच रहूँगा और उनका
परमेश्वर ठहरूँगा। 46 तब वे जान जाएँगे
कि मैं उनका परमेश्वर याहवे हूँ, जो उन्हें
मिस्र के दासत्व से निकाकर लाया है, ताकि
उनके मध्य रहूँ।

30 धूप जलाने के लिए बबूल की
लकड़ी की वेदी बनाई जाए।
2 उसकी लम्बाई-चौड़ाई एक हाथ की हो।
वह आकार में चौकोर हो। उसकी चौड़ाई दो
हाथ की हो। उसके सींग उसी टुकड़े से बनाए
जाएँ। 3 वेदी के ऊपर वाले पहले और चारों
तरफ़ के बाजुओं और सींगों को शुद्ध सोने
से मढ़ना। इसके चारों ओर सोने की एक
बाड़ बनाना। 4 इसकी बाड़ के नीचे इसके
आमने-सामने के दोनों पल्लों पर सोने के दो-दो
कड़े बनवा कर इसके दोनों ओर लगाना।
वे इसके उठाने के डंडों के खानों का काम
देंगे। 5 बबूल की लकड़ी के डंडों को बना
कर उनको सोने से मढ़ देना। 6 तुम उसे उस
पर्दे के आगे रखना जो साक्षीपत्र के सन्दूक
के सामने है। मतलब यह है कि प्रायश्चित्त
वाले ढक्कन के आगे जो साक्षीपत्र के ऊपर
है, वहीं मैं तुम से मिला करूँगा। 7 उसी वेदी
पर हारून खुशबूदार धूप जलाया करे। हर
दिन सुबह जब वह दीपक को ठीक करे, तब
वह धूप जलाए। 8 गोधूलि के वक्त जब हारून
दीपकों को जलाए तब धूप जलाया करें। यह
धूप परमेश्वर के सामने तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी में
हर दिन जलाया जाए। 9 उस वेदी पर तुम
किसी दूसरी तरह का धूप मत जलाना। न
ही उस पर होमबलि या अन्नबलि चढ़ाना
और न ही अर्घ देना। 10 साल में एक बार
हारून इसके सीगों पर प्रायश्चित्त करे। तुम्हारी
पीढ़ी-पीढ़ी में साल में एक बार प्रायश्चित्त के
अपराधबलि के खून से इस पर प्रायश्चित्त
किया जाए। यह परमेश्वर के लिए परमपवित्र
है। 11 तब परमेश्वर ने मूसा से कहा, 12 जब
तुम इस्राएलियों की गिनती करने लगो, तो
वे अपने-अपने जान के लिए परमेश्वर को
प्रायश्चित्त दें, जिस से जब तुम उनकी गिनती
कर रहे हो, उस समय कोई मुसीबत उन
पर न आ जाए। 13 जितने लोग गिने जाएँ,
वे पवित्रस्थान के शेकेल के अनुसार आधा
शेकेल दें[a]। 14 परमेश्वर की भेंट आधा शेकेल
हो, बीस साल के या उस से ज़्यादा उम्र के
जितने हों, उन में से एक-एक जन परमेश्वर
को भेंट दे। 15 जब तुम्हारी जान के प्रायश्चित्त
के लिए परमेश्वर की भेंट चढ़ाई जाए, तब

[a] **30.13** शेकेल बीस गेरा के बराबर होता है

न अमीर लोग आधे शेकेल से अधिक दें, न
गरीब लोग उस से कम दें। 16 तुम इस्राएलियों
से प्रायश्चित्त की रकम लेकर मिलाप वाले
तम्बू के काम में लगाना। वह परमेश्वर के
सामने इस्राएलियों की याद के लिए निशान
ठहरे और उनके प्राणों का प्रायश्चित्त भी हो।
17 परमेश्वर ने मूसा से कहा, 18 पीतल के पाये
वाली पीतल की हौद बनाना। उसे मिलाप
वाले तम्बू और वेदी के बीच में रख कर
उसमें पानी भर देना। 19 उसमें हारून और
उसके बेटे अपने-अपने हाथ पाँव धोया करें।
20 जब-जब वे मिलाप वाले तम्बू में दाखिल
हो, तब-तब वे पानी से अपने हाथ-पाँव धोएँ,
नहीं तो मर जाएँगे। जब-जब वे वेदी के पास
सेवकाई करने[a] आएँ, तब-तब वे हाथ-पाँव
धोएँ, ताकि मर न जाएँ। 21 यह हारून और
उसकी पीढ़ी-पीढ़ी के वंश के लिए सदा की
प्रथा बन जाए। 22 फिर परमेश्वर ने मूसा से
कहा, 23 "तुम बढ़िया से बढ़िया खुशबूदार
द्रव्य लो। यह पवित्रस्थान के शेकेल के
अनुसार पाँच सौ शेकेल अपने आप निकला
हुआ गंधरस, उस का आधा[b] खुशबूदार
दालचीनी, ढाई सौ शेकेल खुशबूदार अगर
24 बारह पौण्ड तेजपात, एक गैलन जैतून का
तेल लेकर 25 उन से अभिषेक का पवित्र
तेल, अर्थात् गंधी की रीति से तैयार किया
हुआ खुशबूदार तेल बनवाना। यह अभिषेक
का पवित्र तेल होगा। 26 और उस से मिलाप
वाले तम्बू का और साक्षीपत्र के सन्दूक
का 27 और सारे सामान समेत मेंज़ का और
सामान समेत दीवट का और धूप वेदी का
28 और सारे सामान सहित होम वेदी का
और पाए समेत हौदी का अभिषेक करना
29 उनको पवित्र करना, जिस से वे परम
पवित्र ठहरें और जो कुछ उन से छू जाएगा,
वह पवित्र ठहरेगा। 30 फिर हारून का उसके
बेटों के साथ अभिषेक करना और इस तरह
उन्हें मेरे लिए याजक का काम करने के
लिए अलग करना। 31 इस्राएलियों को यह
आज्ञा सुनाना, यह तेल तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी
में मेरे लिए पवित्र अभिषेक का तेल होगा।
32 यह किसी इन्सान की देह पर न डाला
जाए और मिलावट में उसकी तरह और कुछ
मत बनाना। यह पवित्र है और तुम्हारे लिए
भी पवित्र होगा। 33 जो व्यक्ति इसकी तरह
कुछ बनाए या जो इस में से किसी दूसरे कुल
वाले पर लगाए, वह अपने लोगों में से बर्बाद
किया जाए। 34 फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा,
"बोल, नखी और कुन्दरू नामक खुशबूदार
चीजें और शुद्ध लोबान एक ही माप में लेना।
35 और इन का धूप अर्थात् नमक मिला कर
गंधी की प्रथा के अनुसार शुद्ध और अलग
किया[c] द्रव्य बनवाना। 36 उसमें से कुछ पीस
कर बारीक करके उसमें से कुछ मिलाप
वाले तम्बू में साक्षीपत्र के सामने, जहाँ मैं
तुम से मिला करूँ, रखना। वह तुम्हारे लिए
परम पवित्र होगा। 37 जो धूप तुम बनवाओगे,
मिलावट में उसकी तरह तुम लोग अपने लिए
और कुछ मत बनवाना। वह तुम्हारे आगे
परमेश्वर के लिए पवित्र होगा। 38 जो कोई
सूँघने के लिए उसकी तरह कुछ बनाए वह
अपने लोगों में से बर्बाद किया जाए।

31 फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा,
2 सुनो, मैं ऊरी के पुत्र बसलेल को
जो हूर का पोता और यहूदा के गोत्र का है,
बुला लेता हूँ। 3 मैं उसे बुद्धि, प्रवीणता, ज्ञान
और हर तरह के कामों की समझ देने वाले
परमेश्वर के आत्मा से भर देता हूँ। 4 जिस से
वह बुद्धि से कारीगरी के काम सब तरह की

[a] **30.20** परमेश्वर के लिए द्रव्य जलाने [b] **30.23** ढाई सौ शेकेल [c] **30.35** पवित्र

बनावट में अर्थात् सोने, चाँदी और पीतल
में, 5 और जड़ने के लिए मणि काटने में और
लकड़ी पर नक्काशी का काम करें। 6 हाँ मैं दान
के गोत्र के अहीसामाक के पुत्र ओहोलीआब
को भी उसके साथ कर दूँगा। बुद्धिमान लोगों
में पाई जाने वाली बुद्धि मैंने ही उनके अन्दर
डाली है, ताकि मेरे द्वारा दी गई आज्ञा के
अनुसार वे बनाने का काम करें। 7 अर्थात्
मिलाप वाला तम्बू, साक्षीपत्र का सन्दूक
और उसके ऊपर प्रायश्चित्त वाला ढक्कन और
तम्बू का साराह सामान। 8 सामान सहित
मेंज़, सामान सहित शुद्ध सोने की दीवट, धूप
वेदी 9 सामान सहित होमवेदी, पाए के साथ
हौदी 10 काढ़े हुए कपड़े हारून याजक के
काम के पवित्र कपड़े और उसके बेटों के
कपड़े 11 अभिषेक का तेल, पवित्र स्थान
के लिए खुशबूदार पदार्थ इन सभी को वे
उन सब निर्देशों के आधार पर बनाएँ, जो
मैंने तुम्हीं दी हैं। 12 फिर परमेश्वर ने मूसा से
कहा, 13 "तुम इस्राएलियों से यह भी कहना,
"तुम मेरे विश्राम दिनों को मानना, क्योंकि
तुम्हारी पीढ़ी-पीढ़ी में मेरे और तुम्हारे बीच
यह एक निशान ठहरा है, जिस से तुम यह
जान सको कि परमेश्वर हमें पवित्र करने वाले
हैं। 14 इसलिए तुम विश्राम दिन का पालन
करना क्योंकि वह तुम्हारे लिए सामान्य से
हटकर है, जो उसे न माने, वह मार डाला
जाए : जो कोई उस दिन कुछ काम करे उसे
मार डाला जाए। 15 छैः दिन काम किए जाएँ,
लेकिन सातवाँ दिन परम विश्राम का और
परमेश्वर के लिए पवित्र है। इसलिए जो कोई
इस दिन काम करे वह ज़रूर मार डाला जाए।
16 इसलिए इस्राएली विश्राम दिन को मानें।
वे पीढ़ी-पीढ़ी में उनकी सदा की वाचा का
विषय जान कर माना करें। 17 वह मेरे और
इस्राएलियों के बीच सदा एक निशान रहेगा,
क्योंकि छैः दिन में परमेश्वर ने आकाश और
पृथ्वी को बनाया और सातवें दिन कुछ नहीं
किया। 18 सीनै पहाड़ पर ये सब बातें करने
के बाद अपनी उंगली से लिखी हुई साक्षी देने
वाली पत्थर की दो तख्तियाँ दीं।

32 मूसा को पहाड़ से उतरने में देरी होते
देख लोग हारून के पास आकर
कहने लगे, "हमारे लिए देवता बनाओ, जो
हमारा मार्गदर्शन करे, क्योंकि मूसा हमें मिस्र
देश से निकाल लाया था। अभी हमें नहीं
मालूम कि उसे हुआ क्या? 2 हारून बोला,
"तुम्हारी पत्नियों और बेटे-बेटियों के कानों
में सोने की बालियों को उतारकर मेरे पास
लाओ।" 3 तब उन सभी लोगों ने जिन के
कान में सोने की बालियाँ थीं, निकाली और
हारून के पास ले आए। 4 हारून ने उनके
हाथों से वह सब लेकर औज़ार का इस्तेमाल
कर सोने का एक बछड़ा बना दिया। वे बोल
उठे, "हे इस्राएल यही तुम्हारा देवता है, जो
तुम्हें मिस्र से निकाल कर लाया है।" 5 यह
देख कर हारून ने एक वेदी बना कर यह
घोषणा की, "कल परमेश्वर के लिए जश्न[a]
मनाया जाएगा।" 6 अगले दिन वे सभी बड़े
सवेरे उठ गए और मेलबलि और होमबलि
चढ़ायी। खाने पीने के बाद लोग खेलने लगे।
7 परमेश्वर मूसा से बोले, "जिन लोगों को तुम
मिस्र से निकाल ले आए थे, वे गुमराह हो
गए हैं, उनको नीचे जाकर देखो। 8 मेरे बताए
हुए रास्ते से वे बहुत जल्दी मुड़ गए है। एक
ढाल कर बनाए गए बछड़े की उन्होंने पूजा
की है और बलिदान चढ़ाकर कहा है, "हे
इस्राएलियों तुम्हारा जो परमेश्वर तुम्हें मिस्र
से निकाल कर लाया है, यही है।" 9 फिर

[a] **32.5** पर्व

परमेश्वर ने मूसा से कहा, “मैं इन लोगों को
अच्छी तरह जान गया हूँ, ये ज़िद्दी लोग हैं।
10 तुम मेरे और उनके बीच में मत आओ।
मेरा गुस्सा उन पर भड़क उठा है और मैं
उन्हें बर्बाद कर डालूँगा। लेकिन तुम से मैं
एक बड़ा राष्ट्र बनाऊँगा।” 11 तब मूसा अपने
प्रभु परमेश्वर को यह कह कर मनाने लगा,
“हे परमेश्वर, आपके लोगों पर आपका क्रोध
क्यों भड़क उठा है। आप तो अपने लोगों
को बड़ी शक्ति और ताकतवर हाथ से मिस्र
देश से निकाल ले आए हैं ? 12 मिस्रियों को
यह कहने का अवसर क्यों मिले, कि उनका
परमेश्वर उन्हें इसलिए बाहर निकाल लाया
कि उन्हें पहाड़ों पर मार डाले और पृथ्वी
पर से नामों-निशान मिटा डाले? अपने भड़के
हुए क्रोध को शान्त करें और अपनी प्रजा को
ऐसा नुकसान पहुँचाने से रूके रहें। 13 अपने
दास अब्राहाम, इसहाक और याकूब को याद
कीजिए जिन से आपने प्रण किया था, “मैं
तुम्हारे वंशों को आकाश के तारों के समान
बहुत करूँगा। साथ ही यह सारा देश मैंने
जिस के बारे में कहा है, तुम्हारे वंश को दूँगा,
ताकि वे सदा काल तक उसके अधिकारी
बने रहें।” 14 तब परमेश्वर ने अपने लोगों
का नुकसान करने का इरादा बदल दिया।
15 तब मूसा मुड़ कर साक्षी की दोनों तख्तियों
को हाथ में लिए पहाड़ से उतर गया। उन
तख्तियों के इधर-उधर[a] लिखा हुआ था।
16 परमेश्वर ने उन तख्तियों को बनाया था।
उन पर खुदाई द्वारा लिखा हुआ परमेश्वर ही
का था 17 लोगों के शोर शराबे को सुन कर
यहोशू मूसा से बोला, “छावनी से लड़ाई की
सी आवाज़ आ रही है।” 18 उसने कहा, “यह
शब्द जीतने या हारने वालों का नहीं, लेकिन
गीत गाने का है।” 19 छावनी के पास आते ही
मूसा को बछड़ा और लोगों का नाचना दिख
गया। तब मूसा आग बबूला हो उठा। उसने
वहीं पहाड़ के नीचे तख्तियों को पटक दिया
और वे टूट गईं। 20 तब उसने उनके बनाए
हुए बछड़े को लिया और आग में फूँक दिया।
पीस कर, चूरा-चूरा करके पानी के ऊपर उसे
फेंक दिया और इस्राएलियों को पिलवा दिया
21 मूसा हारून से कहने लगा, “इन लोगों ने
तुम्हारे साथ क्या किया कि तुमने उन्हें इतने
बड़े अपराध में फँसाया?” 22 हारून ने जवाब
में कहा, “स्वामी आप गुस्सा मत हों, आप
तो जानते है कि इन लोगों का मन बुराई में
ही रहता है।” 23 इन लोगों ने ही मुझ से कहा
कि मैं उनके लिए देवता बनाऊँ जो हम सभी
का मार्गदर्शन करें क्योंकि हम को मिस्र से
छुड़ाने वाला, नहीं मालूम कहाँ गया। 24 तब
मैंने उन से कहा था, “जिन के पास सोने के
गहने हो, वे उतार कर मुझे दे। उन लोगों ने
वैसा किया भी। जब मैंने वे गहने आग में
डाले, तब यह बछड़ा निकल पड़ा।” 25 जब
मूसा को दिखाई पड़ा कि लोग अपने आपे
में नहीं थे[b]। 26 तब मूसा तम्बू के दरवाज़े पर
खड़ा हुआ और कहने लगा, “जो परमेश्वर
की ओर है, वह यहाँ मेरे पास आए।” तब
लेवी के सभी पुत्र उसके पास आकर खड़े
हो गए। 27 वह बोला, “इस्राएल के परमेश्वर
का कहना यह है, हर एक जन अपनी तलवार
ले ले और एक दरवाज़े से दूसरे दरवाज़े तक
अन्दर-बाहर जाकर अपने भाई, दोस्त और
पड़ोसी को जान से मार डाले।” 28 लेवी के
बेटों ने वैसा ही किया, जैसा मूसा ने करने के
लिए कहा था। उस दिन लगभग तीन हज़ार
लोग मारे गए। 29 फिर मूसा ने कहा, आज
के दिन अपने आप को समर्पित करो, हर
एक पुरुष अपने बेटों और भाईयों के विरोध

[a] **32.15** दोनों ओर [b] **32.25** क्योंकि हारून ने उन्हें उनके दुश्मनों के सामने ऐसा करने की छूट दी थी

होने के बावजूद ऐसा करे, जिस से परमेश्वर
की भलाई चख सको। 30 अगले दिन मूसा ने
लोगों से कहा, "तुमने एक बड़ा अपराध कर
डाला है, लेकिन मैं अब परमेश्वर के सामने
जाकर तुम्हारे अपराध के लिए प्रायश्चित्त
करूँगा।" 31 मूसा ने लौट कर परमेश्वर से
कहा, "आह, इन लोगों ने बड़ा अपराध कर
डाला है और अपने लिए सोने का देवता
बना लिया है।" 32 अब यदि आप उनकी इस
दुष्टता को क्षमा करें, तो ठीक है, लेकिन यदि
नहीं तो, मैं यह निवेदन करता हूँ कि अपनी
किताब से मेरे नाम को निकाल दें। 33 फिर
परमेश्वर ने मूसा से कहा, "जिस किसी ने मेरे
विरोध में अपराध किया है, उसी का नाम मैं
अपनी किताब से मिटा दूँगा। 34 इसलिए अब
अपने लोगों को उस जगह ले चलो, जिस
के बारे में मैंने तुम्हें बताया है। देखो, मेरा
स्वर्गदूत तुम्हारे आगे-आगे चलेगा। फिर भी
जब मैं दण्ड देना आरम्भ करूँगा, उस दिन
इस दुष्टता का दण्ड भी दूँगा।" 35 इसलिए
परमेश्वर ने उन लोगों पर मुसीबत[a] डाली,
क्योंकि हारून के बनाए हुए बछड़े को उन्हीं
ने बनवाया था।

33 फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा,
"एक भूमि को देने की प्रतिज्ञा मैंने
अब्राहम, इसहाक और याकूब से की थी,
कि मैं उनके वंश को वह दूँगा। तुम अब इन
लोगों को जिन्हें मिस्र से मुक्त करके लाए हो,
उस देश में ले जाओ। 2 तुम्हारे आगे-आगे
मैं एक दूत को भेजूँगा। मैं कनानी, एमोरी,
हित्ती, परिज्जी, हिब्बी और यबूसी लोगों को
ज़बरदस्ती निकाल दूँगा। 3 दूध और शहद से
भरपूर देश को तुम जाओ। लेकिन क्योंकि
तुम ज़िद्दी स्वभाव के पहले, मैं तुम्हारे साथ
न रहूँगा। और संभव यह है कि, मैं कही
रास्ते ही में तुम्हें मार न डालूँ। 4 यह सुन
कर इन लोगों के बीच बड़ा रोना-धोना मच
गया। उन्होंने अपने गहने भी उतार दिए थे।
5 परमेश्वर ने मूसा से कह दिया था, "मेरा यह
संदेश इस्राएलियों को दो" तुम सभी हठीले
हो, यदि मैं एक सेकेण्ड भी तुम्हारे साथ
चलूँ, तो मैं तुम्हें बर्बाद कर डालूँगा। इसलिए
अपनी देह से गहनों को निकाल दो, ताकि
मैं जानूँ कि तुम्हारे साथ किया क्या जाना
चाहिए।" 6 इसलिए इस्राएली होरेब पहाड़
से लेकर आगे तक अपने गहने उतारे रहें।
7 मूसा तम्बू को छावनी से बाहर दूर खड़ा
कराया करता था और उसे मिलाप वाला
तम्बू कहता था। जो कोई परमेश्वर को ढूँढता
वह छावनी के बाहर मिलाप वाले तम्बू के
पास निकल जाता था। 8 जब-जब मूसा तम्बू
के पास जाता, तब-तब सभी लोग उठ कर
अपने डेरे के दरवाज़े पर खड़े हो जाते थे।
जब-तक मूसा उस तम्बू में दाखिल न होता
था, तब तक उसकी ओर ताकते रहते थे।
9 उस तम्बू में मूसा के प्रवेश करते ही, बादल
का खम्भा उतर कर तम्बू के दरवाज़े पर
ठहर जाता था। तभी परमेश्वर की बातचीत
मूसा से हुआ करती थी। 10 लोग जब बादल
को तम्बू के द्वार पर ठहरा हुआ देखा करते
थे, तब उठ कर अपने-अपने डेरे के दरवाज़े
पर से दण्डवत् करते थे। 11 परमेश्वर मूसा
से इस तरह आमने-सामने बातें करते थे,
जिस तरह कोई अपने भाई से बातें करता
हो। मूसा छावनी में लौट आया करता था,
लेकिन यहोशू जवान, जो नून का बेटा और
मूसा का सेवक था, तम्बू के बाहर नहीं आया
करता था। 12 मूसा ने परमेश्वर से कहा, "आप
मुझ से इन लोगों को ले जाने के लिए तो

[a] **32.35** बला

कह रहे है, लेकिन यह नहीं बताया कि मेरे साथ किस को भेजेंगे। फिर भी आपने मुझे बताया है कि आपके हृदय में मेरे लिए बड़ी जगह है। 13 अब यदि मुझ पर आपकी कृपा बनी रहे तो मुझे अपने तौर-तरीके बताईए। ऐसा होने पर आपका ज्ञान पाने से आपकी कृपा मुझ पर बनी रहे। हाँ यह भी ध्यान रखे कि ये लोग आप ही की कौम है।" 14 परमेश्वर ने कहा, "मैं खुद तुम्हारे साथ रहा करूँगा और तुम्हें सुकून मिलेगा।" 15 उसने उस से कहा, "यदि आप हमारे साथ न आएँ तो हमें यहाँ से आगे न ले चलें। 16 यह मालूम कैसे पड़े कि आपकी कृपादृष्टि मुझ पर और आपकी प्रजा पर है? क्या इस से भी कि आप हमारे संग-संग चले, जिस से मैं और आपकी प्रजा के लोग इस दुनिया के सभी लोगों से अलग ठहरें? 17 परमेश्वर ने मूसा से कहा, मैं इस काम को जिस के बारे में तुम बता रहे हो, करूँगा, क्योंकि मेरी दया-दृष्टि तुम पर है और तुम्हारा नाम मेरे भीतर बस चुका है। 18 मूसा बोल उठा, "अपना तेज मुझे दिखाईए।" 19 परमेश्वर ने कहा, "मैं तुम्हारे सामने से होकर चलते हुए अपनी सारी भलाई दिखाऊँगा। मैं परमेश्वर नाम की घोषणा करूँगा और जिस पर मैं अनुग्रह करना चाहूँ, करूँगा। जिस पर मैं दया करना चाहूँगा, मैं ज़रूर करूँगा।" 20 फिर उसने कहा, "तुम मेरे चेहरे का दर्शन नहीं कर सकोगे। इन्सान मेरा दर्शन करने के बाद जीवित ही नहीं रहेगा।" 21 फिर परमेश्वर ने कहा, "सुनो मेरे पास एक जगह है, यहाँ तुम उस चट्टान पर खड़े रहो। 22 जब तक मेरा तेज तुम्हारे सामने हो कर चलता रहे, तब तक मैं तुम्हें चट्टान की दरार में रखूँगा और जब तक मैं तुम्हारे से होकर न चला जाऊँ, तब तक अपने हाथ से तुम्हें ढाँप रहूँगा। 23 इसके बाद मैं अपना हाथ उठा लूँगा तब तुम मेरे पीछे का दर्शन कर पाओगे मेरे सामने का नहीं।

34 फिर परमेश्वर मूसा से बोले, "पहली तख्तियों की तरह पत्थर की दो और तख्तियाँ बना लो। इसके बाद मैं उन पर वह सब लिखूँगा जिन्हें पहले की तख्तियों पर लिखा था। 2 सुबह तैयारी के साथ सीनै पहाड़ पर चढ़ कर उसकी चोटी पर मेरे सामने खड़े रहना। 3 तुम्हारे साथ और कोई नहीं आना चाहिए, यहाँ तक कि कोई प्राणी वहाँ न दिखे, न भेड़-बकरी और न गाय-बैल वहाँ चरने पाएँ।" 4 तब मूसा ने पहले की तरह दो तख्तियाँ गढ़ीं। सुबह होते ही जो आज्ञा परमेश्वर की थी, पत्थर की तख्तियों को लेकर वह सीनै पर्वत पर जा खड़ा हुआ। 5 परमेश्वर बादलों पर उतरने के बाद वहीं उसके साथ खड़े रहे और परमेश्वर के नाम का ऐलान किया। 6 परमेश्वर ने उसके पास से गुज़रते समय यह घोषणा की, "परमेश्वर जो कृपा करने वाले दयालु, देर से गुस्सा करने वाले, भलाई और सच्चाई से भरपूर. 7 हज़ारों-हज़ारों पर कृपालु, दुष्टता और अपराधों को क्षमा करने वाले हैं, लेकिन वह दोषी को यों ही बिना सज़ा के नहीं छोड़ते हैं। परमेश्वर पिता लोगों की दुष्टता का प्रभाव[a] आने वाली सन्तान[b] तक पहुँचने देते हैं[c]। 8,9 तब मूसा ने दण्डवत् करते हुए कहा, "हे परमेश्वर यदि आपकी दया-दृष्टि मुझ पर हो, तो परमेश्वर हम लोगों के बीच में होकर चलें। ये लोग ज़िद्दी तो है, फिर भी हमारी बुराई और दुष्टता को माफ़ करें और अपना बना कर स्वीकार करें। 10 परमेश्वर ने कहा, "सुनो, मैं एक वाचा बान्धता हूँ। तुम्हारे सभी लोगों

[a] **34.7** सज़ा [b] **34.7** तीसरी और चौथी पीढ़ी [c] **34.7** या देते हैं

के सामने मैं ऐसे भयंकर और अजीब काम करूँगा, जैसे इस दुनिया में किसी देश में नहीं हुए। जिन लोगों के बीच में तुम रहते हो, वे सभी उनकामों को देखेंगे। 11 आज मैं तुम से जो कुछ करने के लिए कह रहा हूँ। मैं तुम्हारे देखते-देखते एमोरियों, कनानियों, हित्तियों, परिज्जियों, हिब्बियों और यबूशियों को खदेड़ दूँगा। 12 जब कि तुम उनके बीच जाने वाले हो, ध्यान रखना कि उनके साथ किसी तरह की वाचा न बान्धना। यदि तुमने ऐसा किया तो तुम फन्दे में फँस जाओगे। 13 उनकी वेदियों को ढा देना, मूरतों को तोड़ डालना, उनकी पवित्र समझी जाने वाली मूर्तियों को नाश कर देना। 14 इसलिए कि प्रभु परमेश्वर जो जलन रखने वाले परमेश्वर हैं और उनका नाम जलनशील है, उन्हें छोड़ किसी परमेश्वर की उपासना तुम मत करना। 15 सतर्कता बरतना कि तुम उस देश में रहने वाले लोगों से सम्बन्ध स्थापित न करो, जिस से वे तुम्हें, अपने देवी-देवताओं के सामने चढ़ावा और उसमें से खाने के लिए न्यौता दें। 16 और तुम अपने बेटों के लिए उनकी बेटियों को लो, जो कि अपने देवी-देवताओं को मानने वाली होंगी। वे तुम्हारे बेटों को भी अपने ईश्वरों का उपासक बना डालेंगी। 17 अपने लिए ढाल कर तुम किसी धातु के देवी-देवता न बनाना। 18 तुम बिना खमीर वाली रोटी का पर्व मनाना। अबीब के माह में सात दिन बिना खमीर वाली रोटी खाना इसी महीने में तुम मिस्र की गुलामी से छूटे थे। 19 गर्भ का पहला फल[a] तुम्हारे जानवरों का भी चाहे वह भेड़ का हो या गाय का, मेरा ठहरेगा। 20 गधे के पहले बच्चे को तुम एक मेम्ने से छुड़ा सकोगे। यदि तुम ऐसा न कर सको तो उसकी गर्दन तोड़ देना। तुम अपने बेटों में से जो प्रथम फल होंगे, उनको भी छुड़ा सकोगे। मेरे सामने कोई भी खाली हाथ न आए। 21 सात दिन तुम मेहनत करना, लेकिन सातवें दिन आराम करना। 22 तुम सप्ताह का त्यौहार, गेहूँ की फ़सल के प्रथम फल का त्यौहार और इकट्ठा करने का त्यौहार साल के आखिर में मनाना। 23 इस्राएल के परमेश्वर के सामने तुम्हारे सभी नर वर्ष में तीन बार मेरे सामने आएँ। 24 मैं तुम्हारे सामने, देशों को निकाल दूँगा, तुम्हारी सीमाओं को बढ़ाऊँगा। वर्ष में तीन बार जब तुम परमेश्वर के सामने[b] प्रस्तुत होगे, तब तुम्हारी भूमि को हड़पने की हिम्मत किसी की नहीं होगी। 25 मेरे बलिदानों के रक्त को तुम खमीर के साथ मत मिलाना। न ही फ़सह के पर्व के बलिदान को अगली सुबह तक छोड़ना। 26 तुम्हारी के प्रथम फल[c] का पहला हिस्सा अपने प्रभु परमेश्वर के भवन में लाना। बकरी के बच्चे को उसकी माँ के दूध में मत पकाना। 27 फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा, “इन बातों को तुम लिख डालो। इन के आधार पर ही मैंने तुम्हारे और इस्राएल के साथ वाचा बाँधी है।” 28 चालीस दिन-रात मूसा परमेश्वर के साथ था। उसने न खाना खाया, न पानी पिया। उसने उन तख्तियों पर अपने हाथ से वाचा के शब्दों[d] को लिख दिया। 29 मूसा के सीनै पहाड़ से नीचे आने पर[e] मूसा न जानता था, उस का चेहरा रोशनी से दमक रहा था, क्योंकि उसकी बातचीत प्रभु परमेश्वर से हुई थी। 30 मूसा के चेहरे को चमकते हुए देख कर हारून और इस्राएली पास आने से डरे। 31 लेकिन मूसा ने उन सभी को अपने पास बुलाया। उनके पास आने पर

[a] **34.19** नर [b] **34.24** उपस्थिति में [c] **34.26** उपज [d] **34.28** दस आज्ञाओं [e] **34.29** जब वह गवाही की दोनों तख्तियों को हाथों में लेकर नीचे उतर रहा था

उन सभी से उसकी बातचीत हुई। 32 सभी
इस्राएलियों को उसने वे सभी आज्ञाएँ बतायीं
जो सीनै पहाड़ पर परमेश्वर ने उसे दी थीं
33 जब तक मूसा उन से बातें करता रहा,
अपने चेहरे को ढाँके रहा। 34 लेकिन जब
मूसा परमेश्वर से बातें करने के लिए जाता
था, अपने चेहरे पर से ओढ़नी हटा लिया
करता था। बाहर आने पर वह फिर से चेहरा
ढक लिया करता था और लोगों से वार्तालाप
किया करता था। 35 इस्राएली मूसा के चेहरे
की त्वचा को प्रकाशमान होते देखा करते
थे, इसलिए वह जब तक वापस परमेश्वर
से बातचीत के लिए नहीं जाता था, ओढ़नी
ओढ़े रहता था।

35 मूसा ने इस्राएलियों की सारी
मण्डली को इकट्ठा करके उन से
कहा, "जिन कामों को करने की आज्ञा
परमेश्वर ने दी है, वे ये हैं। 2 सभी लोग छैः
दिन काम करें, लेकिन सातवाँ दिन तुम्हारे
लिए आराम का दिन ठहरे। जो व्यक्ति सातवें
दिन काम -काज करे, उसे मार डाला जाए।
3 सातवें दिन तुम अपने घरों में आग तक
मत जलाना। 4 फिर मूसा ने इस्राएलियों की
पूरी मण्डली से कहा, "जिस बात की आज्ञा
परमेश्वर ने दी है वह यह है।" 5 तुम लोग
परमेश्वर के लिए दान[a] देना। लोग अपनी
इच्छा से सोना, चाँदी, पीतल 6 बैजनी और
लाल रंग का कपड़ा, महीन सनी का कपड़ा,
बकरी का बाल 7 लाल रंग से रंगी हुई
मेंढ़ों की खालें, सुइसों की खालें, बबूल की
लकड़ी 8 रोशनी देने के लिए तेल, अभिषेक
का तेल, धूप के लिए खुशबूदार पदार्थ 9 फिर
एपोद और चपरास के लिए सुलैमानी मणि
और जड़ने के लिए मणि 10 तुम में से हर
एक जिस के पास योग्यता[b] है, आए और
वह बनाए जिस को बनाने की आज्ञा परमेश्वर
ने दी है। 11 तम्बू, आवरण सहित निवारा
और उसकी घुंडी, तख्त, बेंड़े, खम्भे और
कुर्सियाँ 12 डंडों समेत सन्दूक, प्रायश्चित्त का
ढक्कन और बीच वाला पदार्थ 13 डंडों और
सब सामान के साथ मेंज़, भेंट की रोटियाँ
14 सामान और दीयों समेत रोशनी देने वाला
दीवट और दीपक जलाने के लिए तेल।
15 डंडों समेत धूप वेदी, अभिषेक का तेल,
खुशबूदार धूप और निवास के दरवाज़े का
परदा, 16 पीतल की झँझरी, डंडों आदि सारे
सामान समेत होम वेदी, पाए समेत हौदी।
17 खम्भों और उनकी कुर्सियों समेत आँगन
के पर्दे, आँगन के दरवाज़े के पर्दे 18 तम्बू
के लिए खूँटे, आँगन के लिए खूँटे और
उनकी डोरियाँ, 19 पवित्र स्थान में सेवा के
लिए बुने हुए कपड़े, हारून पुरोहित के लिए
पवित्र कपड़े और पुरोहित की तरह काम
करने के लिए हारून के बेटों के वस्त्र"
20 तब इस्राएलियों की सारी मण्डली मूसा
के सामने से लौट गई। 21 हर एक जन जिस
के मन में जोश आया और जिस की आत्मा
ने उसे इच्छा दी, वह मण्डली के मिलाप
वाले तम्बू, उसकी सेवा और पवित्र वस्त्रों
के लिए परमेश्वर की भेंट लाया। 22 जो पुरुष
और महिलाएँ, सोने की भेंट देना चाहते थे,
वे कड़े, बुन्दे, गहने, सोने के जेवरात लाने
लगे 23 जिस के पास नीले, बैजनी या लाल
रंग का कपड़ा या महीन सनी का कपड़ा, या
बकरी की खाल या लाल रंग से रंगी हुई मेंढ़ों
की खालें या सुइसों की खालें थीं वे उन्हें ले
आए। 24 फिर जितने लोग चाँदी या पीतल
की भेंट ला सकते थे, वे याहवे के लिए भेंट
लाए। जिस- जिस किसी के पास सेवकाई

[a] **35.5** भेंट [b] **35.10** कला

के किसी काम के लिए बबूल की लकड़ी
थी वह उसे ले आया। 25 जितनी महिलाओं
के भीतर बुद्धि का प्रकाश या वे अपने हाथों
से सूत कात कर नीले, बैजनी और लाल रंग
के और महीन सनी के काते हुए सूत को ले
आयीं। 26 ऐसी महिलाओं ने बकरी के बाल
भी काते। 27 अगुवे लोग एपोद और चपरास
के लिए सुलैमानी मणि, जड़ने के लिए मणि,
28 प्रकाश देने अभिषेक और धूप के सुगंधित
चीजें और तेल ले आए। 29 जिस-जिस चीज
के बनाने की आज्ञा परमेश्वर ने मूसा के द्वारा
दी थी, उसके लिए जो कुछ ज़रूरी था, वह
सब महिलाएँ ले आई, यह सब अपनी-अपनी
इच्छा से था। 30 तब मूसा इस्राएलियों से
बोला, "सुनो, यहूदा कबीले के बसलेल को
जो ऊरी का बेटा और हूर का पोता है, नाम
लेकर बुलाया है। 31 परमेश्वर ने उसे अपने
आत्मा की ऐसी भरपूरी दी है, कि वह प्राप्त
बुद्धि, समझ और शान से सब कुछ बना
सकता है। 32 इसलिए वह सोने, चाँदी और
पीतल में और जड़ने के लिए मणि काटने में
33 और लकड़ी पर नक्काशी करने में, यहाँ तक
कि बुद्धि से हर तरह की निकाली हुई बनावट
में काम कर सके। 34 फिर परमेश्वर ने उसके
हृदय में और दान के गोत्र के अहीसामाक
के बेटे ओहोलीआब के मन में सिखाने की
योग्यता दी है। 35 इन दोनों के मन को परमेश्वर
ने ऐसी अक्ल से भर दिया है कि वे नक्काशी
करने और गढ़ने वाले और नीले, बैजनी और
लाल रंग के कपड़े और महीन सनी के कपड़े
में काढ़ने और बुनने वाले हों। यहाँ तक कि
हर तरह की कलाकृति करने वालों के मन
भी।

36 बसलेल और ओहोलीआब और
अन्य कलाकार लो जिन्हें पवित्र
स्थान की सेवा के लिए सब तरह का काम
करने के लिए योग्यता मिली थी, परमेश्वर
की आज्ञा के आधार पर मेहनत आरम्भ कर
दी। 2 हर एक हुनर वाले इन्सान जिस के मन
को परमेश्वर ने उभारा था और बसलेल व
ओहोलीआब को मूसा ने अपने पास बुलाया।
3 पवित्रस्थान की सेवा और इसके बनाए
जाने के लिए इस्राएली लोग जो दान लाए
थे, उसे मूसा ने इन लोगों के सुपुर्द कर
दिया। 4 पवित्रस्थान का काम करने वाले
सभी बुद्धिमान अपना-अपना काम छोड़कर
मूसा के निकट आए। 5 वे बोले, "परमेश्वर
की आज्ञा के अनुसार जो कुछ किया जाना
चाहिए उसके लिए जो आवश्यक था, उस
से अधिक लोग ले आए हैं।" 6 तब मूसा
ने यह ऐलान करवाया, "आदमी या औरत
कोई भी पवित्रस्थान के लिए अब दान न
लाए।" 7 इस तरह लोगों ने भेंट लानी रोकी,
क्योंकि जितना कुछ ज़रूरी था, उसके लिए
सब कुछ मिल चुका था। 8 उन में के हर
एक निपुण व्यक्ति के निवास के लिए बटी
हुई महीन सनी के कपड़े और नीले, बैजनी
और लाल रंग के कपड़े के दस पर्दो को
काढ़े हुए करूबों सहित बनाया। 9 हर एक
पर्दे की लम्बाई अट्ठाईस हाथ और चौड़ाई
चार हाथ की थी। सभी परदों का नाप समान
था। 10 पाँच पर्दे एक दूसरे से जोड़ दिए गए
और बचे हुए पाँच पर्दे भी एक दूसरे से
जोड़े गए। 11 जिस जगह पर ये पर्दे जोड़े गए
वहाँ की दोनों छोरों पर नीले फन्दे लगाए
गए 12 दोनों छोरों में पचास-पचास फन्दे इस
तरह लगाए कि वे एक दूसरे के सामने थे।
13 सोने के पचास अंकड़े बनाए गए और
उनके द्वारा परदों को एक दूसरे से ऐसा जोड़ा
कि निवास मिल कर एक हो गया। 14 फिर
निवास के ऊपर के तम्बू के लिए बकरी

के बाल के ग्यारह पर्दे बनाए। 15 एक-एक
पर्दे की लम्बाई तीस हाथ और चौड़ाई चार
हाथ की थी। ग्यारह परदों की नाप एक ही
थी। 16 इन में से पाँच पर्दे अलग और छै
पर्दे अलग जोड़े गए। 17 जहाँ दोनों जोड़े गए,
वहाँ की छोरों में उसने पचास-पचास फन्दे
लगाए। 18 तम्बू के जोड़ने के लिए पीतल के
पचास अंकड़े भी बनाए, जिस से वह एक
हो जाएँ। 19 तम्बू के लिए लाल रंग से रंगी
हुई मेंढ़ों की खालों का एक ओढ़ना और
उसके ऊपर के लिए सुइसों की खालों का
भी एक ओढ़ना बनाया। 20 फिर निवास के
लिए बबूल की लकड़ी के तख्तों को खड़े
रहने के लिए बनाया। 21 एक-एक तख्ते की
लम्बाई दस हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ की
हुई। 22 एक-एक तख्ते में एक दूसरे से जोड़ी
हुई दो-दो चूलें बनीं। निवास के सब तख्तों
को उसने इसी तरह बनाया 23 निवास के लिए
तख्तों को इस तरह से बनाया, कि दक्षिण
की तरफ़ बीस तख्ते लगे। 24 इन बीस तख्तों
के नीचे चाँदी की चालीस कुर्सियाँ अर्थात्
एक-एक तख्ते के नीचे उसकी दो चूलों के
लिए उसने दो कुर्सियाँ बनाई। 25 निवास की
दूसरी ओर यानि की उत्तर की ओर के लिए
भी उसने बीस तख्ते बनाए। 26 इन के लिए
भी उसने चाँदी की चालीस कुर्सियाँ अर्थात्
एक-एक तख्ते के नीचे दो-दो कुर्सियाँ बनाए।
27 निवास की पिछली ओर अर्थात् पश्चिम
की ओर के लिए उसने छैः तख्ते बनाए।
28 पिछले हिस्से में निवास के कोनों के लिए
उसने दो तख्ते बनाए। 29 वे नीचे से दो-दो
हिस्सों के बनें और दोनों हिस्से ऊपर के
सिरे तक एक-एक कड़े में मिलाए गए। उन
दोनों तख्तों का आकार ऐसा ही बनाया गया।
30 इस तरह आठ तख्ते हुए। उनकी चाँदी की
सोलह कुर्सियाँ हुई। एक-एक तख्ते के नीचे
दो-दो कुर्सियाँ। 31 फिर बबूल की लकड़ी
के बेंड़े बनाए गए। निवास की एक ओर
के तख्तों के लिए पाँच बेंड़े। 32 निवास की
दूसरी ओर के तख्तों के लिए पाँच बेंड़े और
निवास का जो किनारा पश्चिम की तरफ़
पिछले हिस्से में था, उसके लिए भी पाँच
बेंड़े बनाए। 33 बीच वाले बेंड़े को तख्तों के
मध्य में तम्बू के एक सिरे से दूसरे सिरे तक
पहुँचने के लिए बनाया 34 तख्तों को सोने से
मढ़ा गया और बेड़ों के घर का काम देने वाले
कड़ों को सोने से बनाया। बेड़ों को भी सोने से
मढ़ा गया। 35 इसके नीले, बैजनी और लाल
रंग के कपड़े का और बटी हुई महीन सनी
वाले कपड़े का बीच वाला परदा बनाया।
वह कढ़ाई के काम किए हुए करूबों के साथ
बना। 36 उसके लिए बबूल के चार खम्भे
बनाए गए। उन्हें सोने से मढ़ा गया। उनकी
घुडिंयाँ सोने की बनीं। उनके लिए चाँदी की
चार कुर्सियाँ ढाल कर बनवायी गईं। 37 तम्बू
के दरवाज़े के लिए नीले, बैजनी और लाल
रंग के कपड़े का कढ़ाई का काम किया हुआ
परदा बनाया। 38 उसने घुंडियों समेत उसके
पाँच खम्भे भी बनाए और उनके सिरों और
जोड़ने की छड़ों को सोने से मढ़ा। उनकी
पाँच कुर्सियाँ पीतल की बनाईं।

37 बसलेल ने बबूल की लकड़ी का
एक सन्दूक बनाया, जिस की
लम्बाई ढाई हाथ, चौड़ाई डेढ़ हाथ और
ऊँचाई डेढ़ हाथ की थी। 2 उसे अन्दर बाहर
शुद्ध सोने से मढ़ने के बाद उसने उसके
चारों तरफ़ सोने की बाड़ बनाई। 3 उसके
चारों पायों पर लगाने को उसने सोने के
चार कड़े ढाल कर बनाए। दो कड़े एक
ओर और दो कड़े दूसरी ओर लगाए। 4 फिर
उसने बबूल के डंडे बना कर, उन्हें सोने से

मढ़ दिया। 5 उसने उनको सन्दूक के दोनों
ओर के कड़ों में डाला, ताकि उनकी शक्ति
से सन्दूक उठाया जाए। 6 फिर उसने शुद्ध
सोने के प्रायश्चित्त वाले ढक्कन को बनाया।
उसकी लम्बाई ढाई हाथ और चौड़ाई डेढ़
हाथ की थी। 7 फिर सोना गढ़ कर दो करूब
प्रायश्चित्त के ढक्कन के दोनों सिरों पर बनाए।
8 एक करूब एक सिरे पर और दूसरा करूब
दूसरे सिरे पर बना। उसने उनको प्रायश्चित्त
के ढक्कन के साथ एक ही टुकड़े के दोनों
सिरों पर बनाया। 9 करूबों के पंख ऊपर से
फैले हुए बने और उन पंखों से प्रायश्चित्त का
ढक्कन ढपा हुआ बना उनके मुँह आमने-सामने
और प्रायश्चित्त के ढक्कन की ओर किए हुए
बने। 10 फिर उसने बबूल की लकड़ी लेकर
उस से एक मेंज़ बनाई। इस मेंज़ की लम्बाई
दो हाथ, चौड़ाई एक हाथ और ऊँचाई डेढ़
हाथ की थी। 11 उसने उसे शुद्ध सोने से मढ़ा
और चारों ओर सोने की एक बाड़ बनाई।
12 उसने उसके लिए चार अँगुल चौड़ी एक
पटरी और इस पटरी के लिए चारों और सोने
की एक बाड़ बनाई। 13 उसने मेंज़ के लिए
सोने के चार कड़े ढाल कर उन चारों कोनों
में लगाया, जो उसके चारों पायों पर थे। 14 वे
कड़े पटरी के पास मेंज़ उठाने के डंडों के
खानों का काम देने को बने। 15 मेंज़ उठाने के
लिए डंडों को बबूल की लकड़ी के बनाया
और सोने से मढ़ दिया। 16 उसने मेंज़ पर का
सामान अर्थात् परात, धूपदान, कटोरे और
उण्डेलने के बर्तन सब शुद्ध सोने के बनाए
17 फिर उसने शुद्ध सोना गढ़ा और पाए तथा
डंडों सहित दीवट को बनाया। पुष्पकोष,
गाँठ और फूल सभी एक ही टुकड़े के बनाए
गए। 18 दीवट से निकली हुई छैः डालियाँ
बनीं। तीन डालियाँ उसके एक ओर से और
तीन डालियाँ उसके दूसरी ओर से निकली
हुई बनी। 19 एक डाली में बादाम के फूल
की तरह तीन-तीन पुष्पकोष, एक-एक गाँठ
और एक-एक फूल बना। दीवट से निकली
हुई उन छहों डालियों का यही आकार हुआ।
20 और दीवट की डंडों में बादाम के फूल
की तरह अपनी-अपनी गाँठ और फूल समेत
चार पुष्पकोष बने। 21 और दीवट से निकली
हुई छहों डालियों में से दो-दो डालियों के
नीचे एक-एक गाँठ दीवट के साथ एक ही
टुकड़े की बनी। 22 गाँठें और डालियाँ सभी
दीवट के साथ एक ही टुकड़े की बनीं। सारी
दीवट गढ़े हुए शुद्ध सोने की और एक ही
टुकड़े की बनी थी। 23 उसने दीवट के सातों
दीयों और गुलतराश और गुलदान शुद्ध सोने
के बनाए। 24 उसने सारे सामान सहित दीवट
को किक्कार भर सोने से बनाया। 25 फिर उसने
बबूल की लकड़ी की धूप वेदी भी बनाई।
उसकी लम्बाई एक हाथ और चौड़ाई भी
एक हाथ की थी वह चौकोर थी और उसकी
ऊँचाई दो हाथ की तथा उसके सींग उसके
साथ बिना जोड़ के बने थे। 26 ऊपर वाले
पल्लों और चारों ओर के बाजुओं और सींगो
सहित उसने उस वेदी को शुद्ध सोने से मढ़
दिया। उसके चारों तरफ़ सोने की एक बाड़
बनाई। 27 उस बाड़ के नीचे उसके दोनों पल्लों
पर उसने सोने के दो कड़े बनाए, जो उसके
उठाने के डंडों के खाने का काम दे। 28 डंडों
को उसने बबूल की लकड़ी से बनाया और
सोने से मढ़ दिया। 29 उसने अभिषेक का
पवित्र तेल और खुशबूदार द्रव्य का धूप गंधी
की रीति के अनुसार बनाया।

38 उसने होम वेदी बनाने के लिए बबूल
की लकड़ी का इस्तेमाल किया।
उसकी लम्बाई और चौड़ाई पाँच हाथ की
थी और ऊँचाई तीन हाथ की। इस तरह से

वह चौकोर बनी थी। 2 उसके चारों कोनों पर
उसके चार सींग बनाए। वे बिना जोड़ के थे
और उसको पीतल से मढ़ा गया। 3 उसने वेदी
के सारे सामान हाड़ियों, फावड़ियों, कटोरों,
काँटों और करछों को बनाया। सारा सामान
उस का पीतल का था। 4 वेदी के लिए उसके
चारों ओर की कंगनी के नीचे उसने पीतल
की जाली की एक झँझरी बनाई। वह नीचे
से वेदी की ऊँचाई तक पहुँचती थी। 5 पीतल
की झँझरी के चारों कोनों के लिए चार कड़े
ढाले गए, जो डंडों के खानों का काम देते
थे। 6 फिर उसने डंडों को बबूल की लकड़ी
का बनाया और उसे पीतल से मढ़ दिया।
7 फिर डंडों को वेदी के किनारों के कड़ों
में वेदी के उठाने के लिए डाल दिया। उसने
वेदी को तख्तों से खोखली बनाया। 8 उसने
हौदी और उस का पाया दोनों ही पीतल के
बनाए। यह मिलाप वाले तम्बू के दरवाज़े पर
सेवा करने वाली स्त्रियों के पीतल के दर्पणों
से बनाया गया। 9 एक आँगन बनाया गया,
दक्षिण की ओर के लिए पर्दे बटी हुई महीन
सनी के कपड़े के थे। लम्बाई कुल मिला
कर सौ हाथ की थी। 10 उनके लिए बीस
खम्भे और इनकी पीतल की बीस कुर्सियाँ
बनी। और खम्भों की घुंडियाँ तथा जोड़ने की
छड़ें चाँदी की बनाई गईं। 11 उत्तर की ओर
के लिए भी सौ हाथ लम्बे पर्दे बने। उनके
लिए बीस खम्भे और पीतल की बीस ही
कुर्सियाँ बनी। खम्भों की घुंडियाँ और जोड़ने
की छड़ें चाँदी की बनाई गई। 12 पश्चिम की
ओर के लिए सब पर्दे मिला कर पचास हाथ
के थे। उनके लिए दस खम्भे और दस ही
उनकी कुर्सियाँ थीं। खम्भों की घुंडियाँ और
जोड़ने की छड़ें चाँदी की थीं। 13 पूर्व दिशा
की ओर वह पचास हाथ के थे। 14 आँगन
के दरवाज़े के एक ओर के लिए पन्द्रह हाथ
के पर्दे बने और उनके लिए तीन खम्भे और
तीन कुर्सियाँ थी। 15 आँगन के दरवाज़े के
दूसरी ओर भी वैसा ही बनाया गया। आँगन
के दरवाज़े के दोनों तरफ़ पंद्रह-पंद्रह हाथ के
पर्दे बनाए गए। उनके लिए तीन ही तीन खम्भे
और तीन ही तीन इनकी कुर्सियाँ भी थीं।
16 आँगन के चारों ओर सब पर्दे महीन बटी
हुई सनी के कपड़े के बने हुए थे। 17 खम्भों
की कुर्सियाँ पीतल की और घुंडियाँ और छड़ें
चाँदी की बनाई गई। उनके सिर चाँदी से मढ़े
हुए और आँगन के सब खम्भे चाँदी की छड़ों
से जोड़े गए थे। 18 आँगन के दरवाज़े के पर्दे
पर बेल-बूटे का काम किया हुआ था। वह
नीले, बैजनी और लाल रंग के कपड़े का
और महीन बटी हुई सनी के कपड़े के बने
थे। उसकी लम्बाई बीस हाथ की और ऊँचाई
आँगन की कनात की चौड़ाई की तरह पाँच
हाथ की थी। 19 उनके लिए चार खम्भे और
खम्भों की चार ही कुर्सियाँ पीतल की बनाई
गईं। उनकी घुंडियाँ चाँदी की बना कर सिरे
चाँदी से मढ़े गए। छड़ें चाँदी ही की बनाई
गई। 20 निवास और आँगन के चारों ओर
के सभी खूँटे पीतल के बने थे। लेवियों की
सेवकाई के लिए 21 साक्षीपत्र के निवास के
सामान के बारे में ब्यौरा यहाँ है जिस की
गिनती हारून पुरोहित के बेटे ईतामार के
द्वारा मूसा के कहने पर कराई गई। 22 जिस
जिस चीज के बनाए जाने का आदेश परमेश्वर
ने मूसा को दिया था यहूदा के कबीले के
बसलेल ने जो हूर का पोता और ऊरी का
पुत्र था, बनाया। 23 उसके संग दान के गोत्र
वाले अहीसामाक का बेटा, ओहोलीआब
था। वह नक्काशी करने, कढ़ाई करने और
नीले बैजनी और लाल रंग के और महीन
सनी के कपड़े में कढ़ाई करने में बहुत माहिर
था। 24 पवित्रस्थान के सभी काम में जो भेंट

का सोना लगा, वह पवित्रस्थान के शेकेल
के हिसाब से उन्तीस किक्कार और सात सौ
तीस शेकेल था। 25 मण्डली के गिने हुए लोगों
के दान में चाँदी पवित्रस्थान के शेकेल के
हिसाब से सौ किक्कार और सत्रह सौ पचहत्तर
शेकेल थी। 26 जितने बीस साल और उससे
अधिक के थे, जो गिनती में छै: लाख तीन
हज़ार पाँच सौ पचास आदमी थे, उन से
एक बेका हर इन्सान अर्थात पवित्र स्थान
के शेकेल के अनुसार आधा शेकेल मिला।
27 और वह सौ किक्कार चाँदी पवित्रस्थान
के खाँचों और बीच वाले परदे के खांचे के
ढालने के काम आई; सौ किक्कार से सौ
खाँचे बने, आर्थात एक खाँचा एक किक्कार
का बना। 28 और शेष हज़ार सात सौ पचहत्तर
शेकेल से उसने खम्भों की घुण्डियाँ बनाई।
भेंट का काँसा सत्तर किक्कार और दो हज़ार
चार सौ शेकेल था। 29 भेंट का काँसा सत्तर
किक्कार और दो हज़ार चार सौ शेकेल
था। 30 उसने उससे मिलापवाले तम्बू के
दरवाज़े की कुर्सियाँ और काँसे की वेदी,
उसकी काँसे की झँझरी,और वेदी के सारे
बर्तन, 31 और आंगन के चारों ओर के खाँचे
तथा आंगन के दरवाज़े के खांचे, और
निवासस्थान के तथा आंगन के चारों ओर
के खूँटे भी बनाए।

39 उन्होंने नीले, बैजनी और लाल रंग
के काढ़े हुए कपड़े पवित्र स्थान
की सेवा के लिए और हारून के लिए भी
पवित्र वस्त्र बनाए। यह सब परमेश्वर द्वारा
मूसा को दिए हुए आदेश के अनुसार था।
2 उसने एपोद को सोने, नीले, बैजनी और
लाल रंग के कपड़े का और महीन बटी हुई
सनी के कपड़े का बनाया। 3 सोना पीट कर,
उन्होंने पत्तर बनाए, तारों को नीले, बैजनी
और लाल रंग के कपड़े में और महीन सनी
के कपड़े में कढ़ाई की बनावट से मिला
दिया। 4 एपोद को जोड़ने के लिए, उसके
कन्धों के बंधन बनाए और वह अपने दोनों
सिरों से जोड़ा गया। 5 उसको कसने के लिए
जो कढ़ाई किया हुआ पटुका उस पर बना,
वह उसके साथ बिना किसी जोड़ के उसी
की बनावट के अनुसार, अर्थात् सोने और
नीले, बैजनी और लाल रंग के कपड़े का
और महीन बटी हुई सनी के कपड़े का बना।
यह सब कुछ मूसा को परमेश्वर से मिले
आदेश के मुताबिक था। 6 सुलैमानी मणि
काट कर उन में इस्राएल के बेटों के नाम,
जैसे छपाई का काम हो, वैसे खोदे और
सोने के छिद्रों[a] में जड़ दिए। 7 उसने उनको
एपोद के कंधे के बन्धनों पर लगा दिया। यह
इसलिए ताकि ये इस्राएलियों के लिए याद
कराने वाले मणि ठहरें। यह सब परमेश्वर के
निर्देष पर किया गया। 8 उसने चपरास को
एपोद की तरह सोने की और नीले, बैजनी
और लाल रंग के कपड़े की और बारीक बटी
हुई सनी के कपड़े में बेल-बूटे का काम किया
हुआ बनाया। 9 चपरास चौकोर बनी और
दोहरी भी। इसकी लम्बाई और चौड़ाई एक
बालिश्त थी। 10 उसमें चार पंक्तियों में मणि
जड़ दिए। पहली पंक्ति में माणिक, पद्यराग
और लालड़ी जड़ दिए गए। 11 दूसरी पंक्ति में
मरकत, नीलमणि और हीरा 12 तीसरी पंक्ति
में लशम, सूर्यकांत और नीलम 13 चौथी पंक्ति
में फ़िरोज़ा, सुलैमानी मणि और यशब जड़े
गए। उन्हें अलग-अलग सोने के छिद्रों[b] में
जड़ दिए गए 14 ये सभी मणि इस्राएल के बेटों
के पात्रों की गिनती के अनुसार बारह थे।
बारह कबीलों में से एक-एक का नाम जिस

[a] **39.6** खानों [b] **39.13** खानों

तरह खोदा जाता है, खोदा गया। 15 उन्होंने
चपरास और पर डोरियों की तरह गुँथे हुए
चोखे सोने की जंजीर बना कर लगाई।
16 फिर उन्होंने, सोने की दो खाँचे और सोने
की दो कड़ियाँ बना कर दोनों कड़ियों को
चपरास के दोनों सिरों पर लगाया। 17 तब
उन्होंने सोने की दोनों गुँथी हुई जंजीरों को
चपरास के सिरों पर की दोनों कड़ियों में
लगाया। 18 गुँथी हुई दोनों जंजीरों के दोनों
बाकी सिरों को उन्होंने दोनों खानों में जड़ के,
एपोद के सामने दोनों कन्धों के बन्धनों पर
लगाया 19 तब उन्होंने सोने के दो छल्ले बनाए
तथा उसे चपरास[a] के दोनों ओर उसकी कोर
पर, जो एपोद के अन्दर की तरफ़ थी, लगाई।
20 उन्होंने सोने की दो और कड़ियाँ बना कर
एपोद के दोनों कन्धों के बन्धनों पर नीचे
से उसके सामने और जोड़ के पास एपोद
के काढ़े हुए पटके के ऊपर लगाई। 21 तब
उन्होंने चपरास को उसकी कड़ियों के द्वारा
एपोद की कड़ियों में नीले फ़ीते से ऐसा बाँध
दिया कि वह एपोद के काढ़े हुए पटके के
ऊपर रहे और चपरास एपोद से अलग न होने
पाए 22 फिर एपोद का बागा पूरे नीले रंग का
बनाया गया। 23 उसकी बनावट ऐसी थी कि
उसके बीच बख्तर के छेद की तरह एक छेद
बना। छेद के चारों ओर एक कोर बनी कि
वह फटने न पाए। 24 उन्होंने उसके नीचे वाले
घेरे में नीले, बैजनी और लाल रंग के कपड़े
के अनार बनाए। 25 शुद्ध सोने की घंटियाँ बना
कर बागे के नीचे वाले घेरे के चारों ओर
अनारों के बीचो-बीच लगाई । 26 अर्थात् बागे
के नीचे वाले घेरे के चारों ओर एक सोने की
घंटी और एक अनार लगाया गया कि उन्हें
पहने हुए सेवकाई करें। 27 फिर उन्होंने हारून
और उसके बेटों के लिए बुनी हुई महीन सनी
के कपड़े के अंगरखे 28 और महीन सनी के
कपड़े की पगड़ी और महीन बटी हुई सनी
के कपड़े का भीतरी वस्त्र 29 महीन बटी हुई
सनी के कपड़े की और नीले, बैजनी और
लाल रंग की कढ़ाई का काम की हुई पगड़ी
: इन सभी को परमेश्वर की आज्ञा अनुसार
बनाया गया। 30 फिर उन्होंने पवित्र ताज की
पटरी शुद्ध सोने की बनाई और छपाई की
तरह अक्षर खोदे गए। 31 उन्होंने उसमें नीला
फ़ीता लगाया जिस से वह ऊपर पगड़ी पर
रहे 32 इस तरह मिलाप वाले तम्बू के निवास
का साराह काम खत्म हुआ और जिस-जिस
काम का हुक्म परमेश्वर ने मूसा को दिया
था वैसा ही इस्राएलियों ने किया। 33 तब
वे निवास को मूसा के पास लाए अर्थात्
घुंडियाँ, तख्ते, बेंड़े, खम्भे, कुर्सियाँ आदि
सारे सामान के साथ 34 लाल रंग की रंगी मेंढ़ों
की खालों की ओढ़नी, सुइसों की खालों की
ओढ़नी और बीच का परदा। 35 डंडों समेत
साक्षीपत्र का सन्दूक, प्रायश्चित्त का ढक्कन
36 सभी सामान के साथ मेंज़ और भेंट की
रोटी। 37 सब सामान के दीवट और उसकी
सजावट के दीए और रोशनी देने के लिए
38 सोने की वेदी और अभिषेक का तेल,
खुशबूदार धूप और तम्बू के दरवाज़े का
परदा। 39 पीतल की झँझरी, डंडों और सारे
समान सहित पीतल की वेदी और पाए सहित
हौदी 40 खम्भों और कुर्सी सहित, आँगन के
पर्दे आँगन के दरवाज़े का परदा, डोरियों
और खूँटे और मिलाप वाले तम्बू के निवास
की सेवा का सारा सामान 41 पवित्रस्थान में
सेवकाई करने के लिए बेल-बूटा काढ़े हुए
कपड़े और हारून याजक के पवित्र कपड़े
जिन्हें पहनकर उन्हें पुरोहित का काम करना
था। 42 अर्थात् जो-जो आज्ञा परमेश्वर ने मूसा

[a] **39.19** सीनाबन्द

को दी थी, वैसे ही इस्राएलियों ने किया।
43 तब मूसा ने सारे काम का जायज़ा लिया
कि उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार
सब कुछ किया है या नहीं।

40 फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा,
"पहले महिने के पहले दिन को
तुम मिलाप वाले तम्बू के निवास को खड़ा
कर देना। 3 उस में साक्षीपत्र के सन्दूक को
रख कर बीच वाले पर्दे की ओट में कर
देना। 4 मेंज़ को अन्दर ले जाकर, जो कुछ
उस पर सजाना है, सज़ा देना। तब दीवट
को अन्दर ले जाकर उसके दीयों को जला
देना 5 साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने सोने
की वेदी को, जो धूप के लिए होगी, उसे
रखना 6 और निवास के दरवाज़े के सामने
होम वेदी रखना। 7 मिलाप वाले तम्बू और
वेदी के बीच हौदी को रख कर उसमें पानी
भर देना 8 चारों ओर के आँगन की कनात
को खड़ा करना और आँगन के दरवाज़े पर
पर्दे को लटका देना। 9 अभिषेक का तेल
लेकर निवास का और जो कुछ उस में होगा,
सब कुछ का अभिषेक करना। सारे सामान
सहित उसको पवित्र करना, तभी वह पवित्र
ठहरेगा। 10 सब सामान सहित होम वेदी का
अभिषेक करके उसको पवित्र करना, तब
वह परमपवित्र ठहरेगा 11 पाए समेत हौदी
का अभिषेक कर उसे पवित्र करना 12 तब
हारून और उसके बेटों को मिलाप वाले
तम्बू के दरवाज़ों पर ले जाकर पानी से
नहलाना 13 हारून को पवित्र कपड़े पहनाना
और उस का अभिषेक करके उसको अलग
करना कि वह मेरे लिए पुरोहित का काम
करें। 14 उसके बेटों को ले जाकर अंगरखे
पहनाना 15 जैसे तुम उनके पिता का अभिषेक
करो, वैसे ही उनका भी करना, ताकि वे मेरे
लिए याजक[a] का काम करें। उनका अभिषेक
उनकी पीढ़ी-पीढ़ी के लिए उनके सदा के
पुरोहितपन का चिन्ह ठहरेगा। 16 इस तरह
मूसा ने परमेश्वर के द्वारा दिए गए आदेश के
अनुसार किया। 17 दूसरे साल के पहले महीने
के पहले दिन को निवास खड़ा किया गया।
18 मूसा ने निवास को खड़ा करवाया। उसकी
कुर्सियाँ रख उसके तख्ते लगा कर उन में बेंड़े
डाले और उसके खम्भों को खड़ा किया।
19 उसने निवास के ऊपर तम्बू को फैलाया
और तम्बू के ऊपर ओढ़नी को लगाया। यह
सभी परमेश्वर के निर्दोष के अनुसार था।
20 फिर उसने साक्षीपत्र को लेकर सन्दूक में
रख दिया। उसने सन्दूक में डंडों को लगा
कर उसके ऊपर प्रायश्चित्त के ढकने को
रख दिया। 21 परमेश्वर ने जैसा निर्देष उसे
दिया था, उसने सन्दूक को निवास में पहुँचा
दिया और बीच वाले पर्दे को लटका कर
साक्षीपत्र के सन्दूक को उसके अन्दर रख
दिया। 22 उसने मिलाप वाले तम्बू में निवास
के अन्दर की ओर बीच के पर्दे से बाहर
मेंज़ को लगाया 23 उस पर उसने परमेश्वर
के सामने रोटी को सज़ा कर रखा। 24 उसने
मिलाप वाले तम्बू में मेंज़ के सामने निवास
के दक्षिण की ओर दीवट को रखा। 25 उसने
दीयों को परमेश्वर के सामने जलाया। 26 उसने
मिलाप वाले तम्बू में बीच के पर्दे के सामने
सोने की वेदी को रखा। 27 उसने उस पर
खुशबूदार धूप जलाया 28 उसने निवास के
दरवाज़े पर पर्दे को लगाया। 29 मिलाप वाले
तम्बू के निवास के किवाड़ पर होमवेदी को
रख कर उस पर होमबलि और अन्नबलि
को चढ़ाया। 30 मिलाप वाले तम्बू और वेदी
के बीच हौद को रख कर उसमें धोने के

[a] **40.15** पुरोहित

लिए पानी उण्डेला। 31 मूसा, हारून और
उसके बेटों ने उसमें अपने हाथ-पाँव धोएँ।
32 जब-जब वे मिलाप वाले तम्बू में या वेदी
के निकट जाया करते थे, अपने हाथ-पाँव
धोया करते थे। 33 उसमें निवास के चारों
ओर वेदी के आस-पास आँगन की कनात को
खड़ा करा कर आँगन के दरवाज़े के पर्दे को
लटकाया 34 फिर बादल मिलाप वाले तम्बू
पर आ ठहरा और परमेश्वर का तेज निवास
स्थान में भर गया। इस कारणवश मूसा अन्दर
दाखिल न हो सका। 35 इस्राएलियों की पूरी
यात्रा में ऐसा ही हुआ करता था। जब-जब
बादल निवास के ऊपर से उठ जाता था,
तब-तब वे निकल पड़ते थे। 36 यदि वह न
उठता था तो ठहरे रहते थे। 37 इस्राएल की
सारी यात्रा भर दिन में परमेश्वर का बादल
निवास पर और रात को उसी बादल में
आग उन सभी को दिखाई दिया करती थी।
38 क्योंकि उनकी सारी यात्रा में याहवे का
बादल दिन में मिलापवाले तम्बू पर ठहरा
रहता था, और रात में इस्राएलियों को उसमें
आग दिखाई दिया करती थी।

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com